

# पुरस्तक साहित्य और संस्कृति की द्विमासिकी

# संस्कृति

वर्ष-8 ♦ अंक-6 ♦ नवंबर-दिसंबर 2023 ♦ मूल्य ₹40.00



● जलवायु परिवर्तन तय करेगा धरती पर सभ्यता का भविष्य ● अद्भुत और अनोखे पुस्तकालय

● भारतीय रेल के मालगाड़ियों की रोचक जानकारी ● शांति के लिए परमाणु



शिक्षा मंत्रालय  
भारत सरकार

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024  
10-18 फरवरी 2024  
प्रगति मैदान, नई दिल्ली • प्रातः 11.00 से रात्रि 8.00 बजे तक

थीम प्रस्तुति



बहुभाषी भारत  
एक जीवंत परंपरा

सम्मानित अतिथि देश



सऊदी अरब

विश्व के सबसे बड़े पुस्तक मेलों में से एक पुस्तक मेले में आएँ



आयोजक  
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत  
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार



देश का  
नैलिज  
पार्टनर



सह-आयोजक

आई टी पी ओ

ITPO



## पुस्तक संस्कृति

साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी  
वर्ष-8; अंक-6; नवंबर-दिसंबर, 2023

प्रधान संपादक

प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे

संपादक

पंकज चतुर्वेदी

सहायक संपादक

दीपक कुमार गुप्ता

संपादकीय सहयोग

विजय कुमार

विज्ञापन एवं प्रसार

कंचन वांचु शर्मा

उत्पादन

अनुज कुमार भारती, पवन दुवे

रेखाचित्र

मनीष वर्मा

सज्जा/डिजाइन

ऋतुराज शर्मा, समरेश चटर्जी

शब्द संयोजन/कार्यालयीन सहयोग

प्रवीन कुमार

सदस्यता शुल्क

व्यक्तियों के लिए

एक प्रति : ₹ 40.00

वार्षिक : ₹ 225.00

(शुल्क भारत के लिए मान्य)

संपादकीय पत्र-व्यवहार

संपादक

पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

पता : नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया  
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707876

ई-मेल: editorpustaksanskriti@gmail.com

प्रकाशक व मुद्रक अनुज कुमार भारती द्वारा  
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत)  
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज,  
नई दिल्ली-110070 के लिए प्रकाशित और सालासर  
इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301  
(उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

संपादक

पंकज चतुर्वेदी

सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए  
लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित  
रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं  
है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से संबंधित सभी विवादास्पद  
मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

## इस अंक में

संपादकीय	प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे	2
लेख	जलवायु परिवर्तन तय करेगा धरती पर सभ्यता का भविष्य —डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र	3
आलेख	समाज व्यवस्था के संदर्भ में 'मूल्य' विवेचना—मो. दानिश	7
लेख	ज्ञानकोश के विलक्षण संग्राहक, पुस्तक संस्कृति के संपोषक खुदाबख्श खाँ—भगवती प्रसाद दिवेदी	10
लेख	शांति के लिए परमाणु—डॉ. कुलवंत सिंह	12
आलेख	एमेरिलिस या हिप्पीस्ट्रम लिली : एक चरित्र चित्रण—डॉ. मनोज शर्मा	15
आलेख	निराला की उदात्त सौंदर्य भावना—डॉ. संतोष पटेल	18
आलेख	जॉर्ज थॉमस : भाड़े का लड़ाका—ए.के. गांधी	21
लेख	अच्छे बाल साहित्य की कसौटी और रचनात्मक भूमिका —प्रकाश मनु	24
आलेख	भारतीय रेल की मालगाड़ियों की रोचक जानकारी —विमलेश चंद्र	27
लेख	चलती-फिरती लाइब्रेरी : थोड़ा लाइब्रेरी—शिव मोहन यादव	31
शब्द ज्ञान	आओ भारतीय भाषाएँ सीखें	32
लेख	हिंदी नाटकों में कला और सत्ता का संघर्ष— एक कलाकार के संदर्भ में—प्रवीण कुमार सहगल	34
लेख	तुसाद के अतिरिक्त और भी कई संग्रहालय हैं देश में सिक्ख्य प्रतिमाओं के—सीताराम गुप्ता	38
लेख	अद्भुत और अनोखे पुस्तकालय—डॉ. अकरम हुसैन	40
लेख	अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य—डॉ. रामचंद्र रॉय	43
पुस्तक समीक्षा		47
पुस्तकें मिलीं		60
साहित्यिक गतिविधियाँ		62



# साहित्य, संस्कृति और पढ़ना

आपको विदित ही होगा कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित 'पुस्तक संस्कृति' साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी पत्रिका है। इस पत्रिका का प्रधान संपादक होने के नाते संपादकीय लिखने का यह मेरा पहला अवसर है।

'पुस्तक संस्कृति' अगर साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी है, तो फिर मेरे आकलन के लिए मैं एक बार निम्न प्रश्नों के उत्तर ढूँढने की कोशिश करना चाहता हूँ, प्रश्न हैं—साहित्य क्या है? संस्कृति क्या है?

## साहित्य क्या है?

साहित्य जीवन के सत्य और सुंदरता भरे शब्दों में की गई अभिव्यक्ति होता है। साहित्य मनुष्य के आत्म-तत्व के विकास का, विचारों का, भावनाओं का, आकांक्षाओं का एक लिखित दस्तावेज या अभिलेख होता है, इतिहास होता है। मानो कि साहित्य जीवन का आईना होता है। जीवन कैसे जिया जाए? यह औरों के अनुभव से समझने का एक माध्यम होता है।

तो क्या जो भी लिखा जाता है, क्या वह साहित्य हो सकता है? जब लेखक लिखता है तो वह एकांत में बैठकर लिखता है। लेकिन मेरी दृष्टि से वह केवल स्वांतः सुखाय अर्थात् केवल अपने सुख के लिए नहीं लिखता। उसके सामने लेखन का प्रयोजन और भूमिका होती है। वह जानता है कि उसे अपने पाठक को क्या बताना है? 'मैं अपने पाठकों को क्या देने वाला हूँ?' ऐसे ही कई विचारों के साथ वह लिखता है। समाज के विभिन्न प्रश्न, समस्या, घटना, बदलाव, समाज-मन, सोच आदि पर वह भाष्य करता है। उसके सामने होता है, उसका पाठक और वह होना भी चाहिए। पाठक (पढ़ने वाला) और लेखक (लिखने वाला) एक-दूसरे के पूरक हैं। जो पढ़ा नहीं जाता, उस लेखन की आयु कम होती है। क्षणिक होती है। ऐसा लेखन कितना उपयोगी होता है? इसलिए कभी-कभी मुझे लगता है कि जो लिखा जाता है, वह साहित्य नहीं,

वरन् जो बार-बार पढ़ा जाता है, वह साहित्य है। वह अक्षर है। उसका क्षरण नहीं होता है। अतः साहित्य का निर्माण लेखक और पाठक की सह-निर्मिति होता है।

'सहितस्य भावः इति साहित्यम्।' जिस लेखन से पाठक को आनंद मिले, उसके, समाज के, मानव जाति के हित का प्रतिबिंब दिखता हो, संवर्धन होता हो, धारणाओं को सुदृढ़ करने वाला हो—ऐसा ही लेखन अक्षय होता है, क्षणभंगुर नहीं होता।

लेखक भले ही स्वर्ग केंद्रित स्वच्छंदी लिखे, उजाले की तरफ जाने वाला, विखंडन करने वाला व तोड़ने वाला, भ्रमित करने वाला कुछ भी लिख सकता है। वह इसके लिए स्वतंत्र होता है, लेकिन जब तक पाठक उससे मनोयोग भाव से नहीं जुड़ता, तब तक वह अक्षय साहित्य नहीं बन सकता। एक अच्छी रचना में केवल उत्तम वाङ्मय मूल्य नहीं, अपितु साहित्य में परिलक्षित जीवन मूल्य भी अनिवार्य होते हैं। ऐसे जीवन मूल्य जो समाज को मार्गदर्शन दे सकें। हमारा पाठक देखता है कि रचना में कोई ऐसे जीवन मूल्य हैं कि नहीं जो उसे शाश्वत संस्कार देते हों। केवल भाव सौंदर्य, शायरी— इतना ही अक्षय साहित्य के लिए पर्याप्त नहीं होता। मेरा विचार है कि वास्तविक लेखन समाज के लिए होता है। इस प्रश्न पर सदियों से चिंतन होता आ रहा है। मैं स्वयं 'समाज के लिए लेखन' के पक्ष में हूँ।

## संस्कृति क्या है?

हमारे विशाल वैविध्यपूर्ण भारत देश में प्रचलित जो आचार-विचार, व्यक्ति-समाज संबंध, संतुलन, मानव जीवन का समग्र विचार करने वाला जो विचार, तत्वज्ञान, दर्शन विकसित हुआ, उससे संस्कृति पुष्पित और पल्लवित हुई। भारतीय वैचारिक अधिष्ठान के मुख्य बिंदु हैं—दर्शन, उससे उत्पन्न धर्म, उससे संस्कृति और उससे सभ्यता।

प्रत्येक देश का एक तत्व होता है। अंग्रेजी में उसे Ethos कहते हैं। उस तत्व की अभिव्यक्ति हमारे वैश्विक दृष्टिकोण (World view) में होती है, उसे 'दर्शन' कहा गया है। उससे अनुकूल देश चले— इस हेतु व्यक्ति, समाज, सृष्टि, परमेश्वर, इन सब के लिए नियम बनें। ऐसे नियम समूह को धर्म (आचार्य धर्म, पुत्र धर्म, शेजार धर्म, राज धर्म आदि) कहा गया। इन नियमों का पालन करते-करते संस्कृति बनी। प्रकृति (Nature) की ओर कैसे देखना है? स्त्री के प्रति कैसा भाव रखना है? पशु-पक्षी, कीट, सजीव-निर्जीव के प्रति हमारी दृष्टि कैसी हो? वह दृष्टि ही संस्कृति है। It is a view of life. यह दृष्टि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती गई। यही 'संस्कृति' कहलाती है।

जड़ पदार्थ, कल्पना, प्रतीक, भावों, मूल्यों और सामाजिक शैलियों का संचय अर्थात् संस्कृति और संस्कृति जब बाह्यरूप में वेशभूषा, भोजन तथा खान-पान की पद्धति, आचरण पद्धति, स्थापत्य, कला, कौशल में अभिव्यक्त होती है, तो उसे कहते हैं—सभ्यता। मनुष्य के संदर्भ में जो आत्मा, बुद्धि, मन, शरीर है, वही देश के संदर्भ में क्रमशः दर्शन, धर्म, संस्कृति, सभ्यता है। कई बार हम सभ्यता और संस्कृति में विभेद करते हैं। संघर्ष नहीं समन्वय, स्पर्धा नहीं सहयोग, अधिकार नहीं कर्तव्य, विभेद नहीं एकात्मता, शोषण नहीं दोहन, समाज की मूल इकाई व्यक्ति नहीं परिवार, यही हमारे संस्कृति के बिंदु हैं। यह 'पुस्तक संस्कृति' का उद्देश्य है, इसी उद्देश्य से यह द्विमासिकी चल रही है और आगे भी चलती रहेगी। पढ़ते रहिए, बढ़ते रहिए।

(प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे)

प्रधान संपादक, पुस्तक संस्कृति



# जलवायु परिवर्तन तय करेगा धरती पर सभ्यता का भविष्य

जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती है। यह पूरी दुनिया के लिए गहन चिंतन का भी विषय बन गया है। यह वास्तव में समूची मानव सभ्यता के सामने भयावह संकट बनकर खड़ा है। कहा तो यहाँ तक जा रहा है कि यह धरती रूपी जीवित ग्रह को बचा लेने का प्रश्न बन चुका है। पर्यावरणविदों का कहना है कि यदि इंसान ने अपने तौर-तरीकों में बहुत जल्दी और व्यापक तौर पर बदलाव नहीं किया तो फिर धरती पर भयावह संकट का आना लगभग तय है। जलवायु परिवर्तन से धरती का तापमान बढ़ रहा है, मौसम-चक्र में परिवर्तन हो रहा है, भूमंडल का तापमान बढ़ने से



समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। इससे दुनिया के अनेक तटीय इलाके धीरे-धीरे सागर में समाते जा रहे हैं। छोटे-छोटे अनेक टापुओं का अस्तित्व मिटने तथा उनके महासागरों में विलीन हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। जलवायु परिवर्तन से धरती पर अनेक जीव प्रजातियाँ समाप्त हो जाएँगी। मौसम-चक्र में अप्रत्याशित परिवर्तन देखने को मिलेंगे, जो कि अब दिखाई देना शुरू हो चुका है। कहीं अतिवृष्टि होगी, तो कहीं अनावृष्टि। धरती के बहुत बड़े भूभाग पर वातावरणीय परिवर्तनों के चलते खाद्य-संकट पैदा हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन के चलते धरती के अनेक इलाकों से जन समुदायों का बड़े पैमाने पर भौगोलिक विस्थापन होगा।

## महान सार्वकालिक दिव्यांग वैज्ञानिक की भविष्यवाणी

महान भौतिकीविद् प्रो. स्टीफन हॉकिंग धरती पर जीवन तथा सभ्यता को लेकर सजग तथा

चिंतित रहते थे। उन्होंने धरती पर इंसानी सभ्यता के भविष्य को लेकर महत्वपूर्ण बातें कही थीं। वे मोटरन्यूरोन डिजीस से ग्रस्त एक दिव्यांग थे। यद्यपि उनका जीवन हवीलचेअर तक सिमटकर रह गया था, लेकिन उनके शोध और चिंतन का विस्तार विराट ब्रह्मांड तक था। प्रो. स्टीफन हॉकिंग ने 'ब्लैकहोल' तथा 'बिगबैंग थ्योरी' में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वे अपने जीवनकाल में विज्ञान जगत के साथ-साथ आम लोगों के बीच एक किंवदंती बन गए थे। 14 मार्च, 2018 को 74 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। वर्ष 2016 में बी.बी.सी. के लिए तैयार किए जा रहे एक वृत्तचित्र में दिए गए अपने साक्षात्कार में उन्होंने चेतावा था कि इंसान के धरती पर रहने की मियाद खत्म हो रही है। अब उसे अपने लिए दूसरी धरती खोज लेनी चाहिए। यह कार्य उसे अगले 100 वर्षों में कर लेना चाहिए। उनका मानना था कि



## डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

जन्म : 15 मार्च, 1966, जौनपुर (उ.प्र.)।

शिक्षा : एम.एस-सी. (रसायनशास्त्र), पी-एच.डी.।

संप्रति : एसोसिएट प्रोफेसर, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुंबई।

लेखन एवं प्रकाशन : कुल 25 पुस्तकें तथा 300 लेख प्रकाशित, वर्ष 2008 से शैक्षिक पोर्टल (<https://vigyanshiksha.in>) का संचालन।

सम्मान : राजभाषा गौरव, राजभाषा भूषण एवं होमी जहाँगीर भाभा स्वर्ण पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

संपर्क : मोबाइल— 9969078625

ई-मेल— [vigyan.sahityakaar@gmail.com](mailto:vigyan.sahityakaar@gmail.com)

जलवायु परिवर्तन, मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। उनका कहना था कि धरती की सेहत बुरी तरह बिगड़ चुकी है। यदि बहुत जल्दी इसे बचाने के कदम नहीं उठाए गए तो बाद में चलकर वह ऐसी स्थिति में पहुँच जाएगी कि हम चाह कर भी कुछ नहीं कर पाएँगे। लाख उपाय करके भी धरती को नहीं बचाया जा सकेगा। उन्होंने तकनीकी प्रगति, विशेष तौर पर कृत्रिम बुद्धि को लेकर आगाह किया था कि शायद यह मानव सभ्यता की अंतिम उपलब्धि साबित होगी। वैसे राष्ट्रों के बीच शत्रुता तथा द्वेष के कारण परमाणु या जैव युद्ध के जरिये सब-कुछ नष्ट होने का खतरा तो हमेशा रहेगा।



## प्रकृति और पर्यावरण-सनातन चिंतन

भारतीय सनातन परंपरा में मान्यता है कि सृष्टि का निर्माण पंचमहाभूतों से हुआ है। ये पाँच तत्व हैं—जल, वायु, मिट्टी, अग्नि तथा आकाश। सृष्टि में सभी जड़ तथा चेतन इन्हीं पंचमहाभूतों से निर्मित हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा ही है—

‘क्षिति जल पावक गगन समीरा ।

पंच रचित यह अधम सरीरा ॥

सनातन जीवन पद्धति की उपासना प्रक्रिया में यजुर्वेद के इस शांति मंत्र का प्रयोग किया जाता है। इसमें कामना की गई है कि त्रिभुवन में, जल में, थल में, अंतरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि में, वनस्पति में, वन-उपवन में, प्राणिमात्र के तन, मन और जगत के कण-कण में, शांति हो, समरसता हो। यथा—

ऊँ धौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः

सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

— यजुर्वेद

वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी पर जीवन है क्योंकि यहाँ जल है। जहाँ तक हमें ज्ञात है, समूचे ब्रह्मांड में सिर्फ धरती पर ही जीवन है।

मानव जाति का इतिहास जल से जुड़ा है। दुनिया की अधिकांश सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है। पहले के समय में प्रकृति तथा मानव के मध्य समरसता थी, लेकिन तीव्र भौतिक विकास और कथित आधुनिकता ने इस रिश्ते पर निर्मम प्रहार किया है। परिणाम यह हुआ कि जल, जंगल, जमीन, जीवन और जीविका के बीच का समरस संबंध टूट गया है। भौतिक विकास की अंधी दौड़, प्रचंड उपभोक्तावाद तथा चतुर्दिक फैले घनघोर बाजारवाद ने समूचे पर्यावरण को नष्ट कर दिया है। मनुष्य दिनोंदिन आधुनिकता के कथित मोहक मकड़जाल में फँसता जा रहा है। आधुनिक विकास के असंतुलित ढाँचे ने प्रकृति के तमाम घटकों के मध्य के ताने-बाने को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया है। इससे आज मनुष्यता का दम घुटने लगा है। महात्मा गांधी ने कहा था कि हवा, पानी, मिट्टी कुदरत की नेमतें हैं। वे सिर्फ हमारे ही इस्तेमाल के लिए नहीं हैं। उन्हें भावी पीढ़ी के लिए भी सँजोकर रखना हमारा दायित्व है। गांधी जी भौतिक विकास के दुष्परिणामों को अच्छी तरह समझते थे। उनका कहना था, “धरती पर सभी लोगों की जरूरतों के लिए पर्याप्त तो है, लेकिन किसी एक की लालच की पूर्ति के लिए कतई नहीं।” वे धरती के संसाधनों के स्वार्थपूर्ण दोहन के बिलकुल खिलाफ थे।

## जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में जलवायु परिवर्तन सम्मेलन सबसे पहले वर्ष 1992 में ब्राजील के शहर ‘रियो डि जेनेरियो’ में आयोजित हुआ था। वर्ष 1994 में यह संधि लागू हुई और तभी से वैश्विक जलवायु सम्मेलन COP (Conference of the Parties) होता रहा है। मिस्र के नगर शर्म अल-शेख में नवंबर 2022 में आयोजित COP-27 के विचारणीय बिंदु थे;

1. पहला लक्ष्य है इस सदी के मध्य तक शून्य उत्सर्जन के स्तर को हासिल करना, जिससे सदी के अंत तक 1.5 अंश सेल्सियस की तापवृद्धि के महत् उद्देश्य को पाया जा सके। इसके लिए जरूरी होगा कि कोयले के इस्तेमाल को शीघ्रता से घटाया जाए, वनों का कटाव रोका जाए और इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर तेजी से बढ़ा जाए।

2. समुदायों तथा प्राकृतिक आवासों को बचाना, इसके लिए अपेक्षित है कि पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा की जाए तथा उन्हें बहाल किया जाए, जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचने के लिए सुरक्षातंत्र बनाया जाए, चेतावनी प्रणाली तैयार की जाए तथा टिकाऊ आधारभूत अवसंरचना तथा कृषि प्रणाली निर्मित की जाए, जिससे जन-धन तथा पर्यावासों को नुकसान से बचाया जा सके।

3. उपरोक्त दोनों महत् उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए विकसित देश अपने वचनानुसार हर साल करीब 100 अरब डॉलर की धनराशि मुहैया कराएँ। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान इस कार्य में अपना योगदान दें।

4. इस विकट समस्या से हम सामूहिक प्रयासों से ही पार पा सकते हैं। इसलिए यह परमावश्यक हो जाता है कि हम पेरिस समझौते का पालन करें, दुनिया भर की सभी सरकारें, निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज के मध्य परस्पर सहयोग से इस कार्य में तेजी लाएँ।

“ भारत का समग्र वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कुल आठ प्रतिशत का ही है, जिसमें इस साल छह प्रतिशत की वृद्धि होगी। चीन का उत्सर्जन भारत का चार गुना, यानी 32 प्रतिशत है। औद्योगीकरण के चलते यूरोप तथा अमेरिका ने अब तक सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन किया है। इसलिए ग्लोबल वॉर्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है। एशिया तथा अफ्रीका ने तो हाल के कुछ ही दशकों से विकास करना शुरू किया है। इसलिए उन्हें नई प्रौद्योगिकी के साथ वित्तीय साधन भी उपलब्ध कराना अमीर देशों की जिम्मेदारी है जिससे ये देश नवीकरणीय तथा दूसरे वैकल्पिक स्रोतों के विकास पर काम कर सकें। ”

जैसा कि उल्लेख किया गया, पहला लक्ष्य है वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन स्तर को हासिल करना, जिससे इस सदी के अंत तक

1.5 डिग्री सेल्सियस की तापवृद्धि के लक्ष्य को पाया जा सके। इसके लिए जरूरी होगा कि ग्रीन एनर्जी का प्रयोग किया जाए, कोयले के इस्तेमाल में कमी लाई जाए, वनों का कटाव रोका जाए तथा इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ा जाए। समय की माँग है कि कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में 1.4 गीगाटन की कटौती प्रतिवर्ष की दर से लागू हो। इस समय दुनिया भर में सालाना कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन 36.6 गीगाटन है। ग्लोबल कार्बन बजट, जो 380 गीगाटन है, वह आगामी वर्ष 2031 में खत्म हो

जाएगा। कोविड-19 के वैश्विक संकट के दौरान जीवाश्म ईंधन की खपत कम हुई थी। लेकिन अब कोरोना के पीछे छूटने से व्यावसायिक गतिविधियाँ कोरोना पूर्व के स्तर पर पहुँच गई हैं। वक्त की माँग है कि हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में व्यापक कटौती करें।

भारत का समग्र वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कुल आठ प्रतिशत का ही है, जिसमें इस साल छह प्रतिशत की वृद्धि होगी। चीन का उत्सर्जन भारत का चार गुना, यानी 32 प्रतिशत है। औद्योगीकरण के चलते यूरोप तथा अमेरिका ने अब तक सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन

किया है। इसलिए ग्लोबल वॉर्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है। एशिया तथा अफ्रीका ने तो हाल के कुछ ही दशकों से विकास करना शुरू किया है। इसलिए उन्हें नई प्रौद्योगिकी के साथ वित्तीय साधन भी उपलब्ध कराना अमीर देशों की जिम्मेदारी है जिससे ये देश नवीकरणीय तथा दूसरे वैकल्पिक स्रोतों के विकास पर काम कर सकें। भारत ने तो वास्तव में वर्ष 1990 के बाद आर्थिक उदारीकरण के साथ भौतिक संसाधनों पर तेजी से काम शुरू किया है। उसे अपने 135 करोड़ लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा जैसी बुनियादी चीजें मुहैया करानी हैं। इसलिए पर्यावरणीय चिंता के चलते वह जन कल्याण के मुद्दे पर एकदम से पीछे नहीं हट सकता। फिलहाल भारत ने वर्ष 2070 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने का संकल्प व्यक्त किया है।

### बड़ी चुनौती है ग्लोबल वॉर्मिंग

जीवाश्म ईंधन की खपत से वातावरण का तापमान बढ़ रहा है। दहन से कार्बन डाईऑक्साइड गैस तथा दूसरी ग्रीनहाउस गैसों निकलती हैं। इन गैसों की सघन मौजूदगी के कारण धरती द्वारा निर्मुक्त सूर्य की अवशोषित गरमी वातावरण से बाहर नहीं जा पाती है। ये गैसों एक

आवरण का काम करती हैं तथा ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देती, जिससे वातावरण का तापमान बढ़ता है। ध्यातव्य है कि बदरी वाली रातों अपेक्षाकृत गर्म होती हैं। उसका कारण यह है कि दिन में धरती द्वारा सोखी गई गरमी रात्रि में बादलों के कारण वातावरण से बाहर नहीं जा पाती। जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों का बड़ी संख्या में विस्थापन हो रहा है। कुदरती आपदाओं, जैसे—बाढ़, सूखा, तूफान के चलते गरीब सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। इनसे होने वाले नुकसान को वे झेल नहीं पाते

तथा दूसरी जगह अभिगमन कर जाते हैं। बाढ़, सूखे या फिर चक्रवातों से प्रभावित होकर देश में बहुत बड़ी आबादी विस्थापन का शिकार होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि आने वाले समय में कुदरती आपदाएँ बढ़ेंगी। भारत में हिमालयी राज्यों तथा समुद्रतटीय इलाकों से अन्य स्थानों की ओर विस्थापन बढ़ रहा है। मौसम में बदलाव के कारण सामान्य लोगों का जीवनयापन कठिन होता जा रहा है, जिससे वे अपने पुराने पारंपरिक पर्यावास को छोड़कर दूसरी जगहों पर जा रहे हैं।



शोधकर्ताओं का कहना है कि 19वीं सदी की तुलना में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। आँकड़े बताते हैं कि धरती के वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की



मात्रा 50 प्रतिशत तक बढ़ी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि हमें तापमान वृद्धि के कारकों को नियंत्रित करने के बारे में ठोस कदम उठाने चाहिए। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारी कोशिश होनी चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते वर्ष 2100 तक धरती के तापमान में बढ़ोतरी 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखी जाए। उन्हें अंदेशा है कि यदि दुनिया के तमाम देशों ने मिलकर ठोस कदम नहीं उठाए तो इस सदी के अंत तक धरती का तापमान दो डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ सकता है। उनका आकलन बताता है कि यदि कुछ न किया गया तो फिर ग्लोबल वार्मिंग के चलते धरती का तापमान चार डिग्री सेल्सियस से अधिक भी बढ़ सकता है। अगर वाकई ऐसा हुआ तो यह सचमुच डरावना होगा। दुनिया को भयानक गर्म थपेड़ों का सामना करना पड़ेगा। समुद्र का जल स्तर बढ़ने से लाखों लोग बेघरबार हो जाएँगे। अनेक जानवरों तथा वनस्पतियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएँगी।

### भारत का ऊर्जस्वी अमृत संकल्प

आजादी के अमृत महोत्सव काल में भारत ने अपनी ऊर्जा जरूरतों तथा स्वावलंबन हेतु कुछ अमृत संकल्प लिए हैं। पेट्रोलियम पदार्थों के आयात पर हमारी निर्भरता करीब 83 प्रतिशत है। यह स्थिति बदलनी ही चाहिए। उत्पादक देशों से पेट्रोलियम मँगाने पर कीमती विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती है। इसलिए भारत सरकार ने पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने की इजाजत पहले से दी है। इसे वर्ष 2024 तक बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य है। देश में बायोमास से इथेनॉल बनाने पर व्यापक स्तर पर काम चल रहा है तथा क्षमता विस्तार के प्रयास निरंतर जारी हैं। जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए वैश्विक समाज को जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करनी होगी। उसे ऊर्जा के और नवीकरणीय स्रोत खोजने होंगे।

उपलब्ध स्रोत, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा ज्वारीय ऊर्जा विकसित करने होंगे। भारत में तकरीबन 10 महीने खूब धूप खिली रहती है। ऐसे में सौर ऊर्जा हमारे लिए वरदान है। भारत सरकार पहले से ही इस बारे में जागरूक तथा प्रयासरत है। भारत ने 31 दिसंबर, 2022 को 63.30 गीगावाट सौरविद्युत क्षमता स्थापित कर ली थी जो कि देश की सकल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता 410.34 गीगावाट, का करीब 15.1 प्रतिशत है। यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। देश में करीब 57.5 प्रतिशत विद्युत जीवाश्म ईंधन से तथा 42.5 प्रतिशत विद्युत गैर-जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त होती है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए दुनिया को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत खोजने होंगे। उन पर अपनी निर्भरता बढ़ानी होगी। जीवाश्म ईंधनों का इस्तेमाल समय के साथ कम करते जाना होगा। गैर-परंपरागत स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा ज्वारीय ऊर्जा को विकसित करना होगा। दुनिया भर की सरकारों को अपने स्तर पर कुछ बड़े और नीतिगत फैसले लेने होंगे। आम जनमानस को भी अपने स्तर पर इस प्रयास से जुड़ना होगा। कुछ छोटे-छोटे प्रयास जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में उपयोगी सिद्ध होंगे। पहला कदम होना चाहिए कि यातायात के लिए सार्वजनिक साधनों का प्रयोग किया जाए। छोटी-मोटी दूरियों के लिए साइकिल का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। मोटरकार, बाइक जैसे निजी साधनों का प्रयोग घटाया जाए। बिजली के अनावश्यक खर्च को कम किया जाए। जब जरूरत न हो, विद्युत उपकरणों को बंद रखा जाए। कहते हैं—“बिजली की बचत ही बिजली का उत्पादन है।” तीसरा मुख्य बिंदु है, रीयूज़ यानी पुनर्प्रयोग का। यानी चीजों तथा वस्तुओं को



बार-बार इस्तेमाल योग्य बनाना होगा। रीसाइकिलिंग यानी पुनर्चक्रण एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें सामानों को प्रयोग के बाद फेंक नहीं देना है, बल्कि उन्हें पुनर्चक्रित करके फिर से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना है। इस बहुत बड़े कार्य में सबकी भागीदारी बहुत जरूरी है। सवाल आखिर इस धरती पर सभ्यता के अस्तित्व को बचाने का है।





# समाज व्यवस्था के संदर्भ में 'मूल्य' विवेचना

मानव समाज ने अपनी जीवनचर्या को अनुशासित और सौहार्द्रपूर्ण बनाए रखने के लिए जिन नैतिक सिद्धांतों का निर्धारण किया, वे मूल्य की परिभाषा में परिगणित किए जा सकते हैं। इन नैतिक सिद्धांतों का संबंध मानव के व्यावहारिक जीवन से है, क्योंकि मूल्यों को बगैर व्यवहार में लाए इनके अर्थ को पूर्णता प्राप्त नहीं होती। उल्लेखनीय है कि मानव समाज की मूल इकाई परिवार है, अतः मूल्यों का प्रारंभ परिवार से होता है। परिवार के दायरे से बाहर निकलकर मनुष्य व्यापक समाज में आता है। ग्राम, प्रांत, देश सब व्यापक समाज के घटक हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि साहित्य में इन्हीं ग्राम, प्रांत, देश से संबद्ध मानव और मानव समाज की गाथा अभिव्यक्त की जाती है, इसलिए साहित्य में भी इन मूल्यों का, जो मुख्यतः नैतिक आचरण से जुड़े सिद्धांत हैं,



**मो. दानिश**

**शिक्षा :** पी-एच.डी. (हिंदी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

**संप्रति :** युवा आलोचक एवं कवि।

**लेखन एवं प्रकाशन :** हिंदी की कई प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आलेख, समीक्षा और कविताओं का नियमित प्रकाशन। 'फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में जनपक्षधरता' शीर्षक पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य।

**संपर्क :** मोबाइल— 8010658553

का चित्रण भी प्रमुखता से होता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार, श्रेष्ठतम जीवन जीने के लिए जिन मूल्यों की अवधारणा की गई है उसमें जीवन के परिवेश से जुड़े आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों की महत्वपूर्ण भूमिका

होती है। मानव इसका आधार है, क्योंकि समस्त मूल्यों का निर्धारण मानव के द्वारा ही होता है। इस संबंध में डॉ. रमेश चन्द्र लावनिया की टिप्पणी द्रष्टव्य है—“प्रत्येक साहित्य, समाज और सर्जक का अपना एक जीवन दर्शन होता है और इसी दर्शन के अनुकूल वह अपने साहित्य में जीवन मूल्यों को चित्रित करते हैं। बिना जीवन दर्शन और जीवन मूल्यों के फंतासी के अतिरिक्त कुछ रचा नहीं जा सकता। अतः मूल्यों की उपेक्षा संभव नहीं।”

उपनिषदों के 'सत्यं वद् धर्मं चर' से लेकर कबीर तथा तुलसीदास से लेकर रहीम के नीति काव्य तक व्याप्त नीति साहित्य मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रत्यक्ष प्रयास है। आधुनिक साहित्य में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर संपूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल'



धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बना है जिसका अर्थ है—कीमत या पारिश्रमिक। डॉ. ममता अवस्थी ने 'मूल्य' शब्द के तात्पर्य को विस्तृत संदर्भों में व्याख्यायित करते हुए लिखा है—'मूल्य' शब्द का आवश्यकता, प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयोग होता है।

भारतीय दर्शन में जीव और जगत को नाशवान माना गया है। इसमें वर्तमान को 'साधन' और भविष्य को 'साध्य' के रूप में स्वीकार करते हुए पुरुषार्थ को 'जीवन मूल्य' के रूप में स्वीकारा गया है। पुरुषार्थ के महत्व पर टिप्पणी करते हुए डॉ. धर्मानंद दामोदर ने लिखा है—“भारतीय चिंतन धारा में 'पुरुषार्थ' का अर्थ है—मनुष्य द्वारा जीवन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया प्रयास। पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे मूल्यों को समाहित किया गया है। इसमें धर्म, अर्थ, काम को साधनात्मक मूल्य तथा मोक्ष को साध्यात्मक मूल्य माना गया है।”

भारतीय दर्शन की यह मान्यता है कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों के योग से मनुष्य का निर्माण होता है। शारीरिक विकास अर्थ के द्वारा, मानसिक विकास काम के द्वारा, बौद्धिक विकास धर्म के द्वारा और आत्मिक विकास मोक्ष के द्वारा होता है। ये चारों जीवन मूल्य

“आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत पुरुषार्थ में आदर्शों को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त किया गया है और इस अर्थ में ये दोनों ही एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। भारतीय जीवन दर्शन को समझने के लिए इन दोनों का समुचित ज्ञान आवश्यक है। पुरुषार्थ के सिद्धांत में जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, वे आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत और उसी को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न मात्र हैं। आश्रम व्यवस्था का एक महत्व यह भी है।” डॉ. मुखर्जी का उक्त कथन इस बात का संकेत देता है कि समुचित और सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिए वर्णाश्रम और पुरुषार्थ का होना नितान्त आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि मानव जीवन वेदों के ऋत, सत्य, आनंद तत्व के लिए चार पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था, उपाय-नीतियाँ, बौद्धकालीन आर्य सत्य आदि श्रेष्ठ आयामों में बँधा हुआ था और इन्हीं आयामों से मानव मूल्य विकसित हुए हैं।

भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभ हैं। मानव जीवन को सौ वर्षों का मानकर उसे चार अवस्थाओं में विभाजित किया गया है—बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था। इन चारों अवस्थाओं के अनुरूप ही हमारे समाज में आश्रम व्यवस्था की गई है, ताकि व्यक्ति का स्वाभाविक और समुचित विकास हो सके। 25 वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य, 50 वर्ष की अवस्था तक गृहस्थ, 75 वर्ष तक की अवस्था को वानप्रस्थ और उसके बाद की अवस्था को संन्यास के अंतर्गत रखा गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ‘धर्म’ पर अधिक बल दिया गया और ब्रह्मचारी को अर्थ और काम से दूर रखा गया। इस आश्रम में रहकर बालक धर्मानुकूल आचरण करता है और वह समस्त नैतिक दायित्वों को वहन करता है। इस आश्रम का उद्देश्य व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति के लिए जागरूक करना है। गृहस्थ आश्रम में ‘अर्थ’ और ‘काम’ की प्रधानता रही है। इस आश्रम में रहकर व्यक्ति जीविकोपार्जन करता है। इस आश्रम में व्यक्ति अर्थ और काम दोनों का संयमित उपभोग करता है। वानप्रस्थ आश्रम में भी धर्म और मोक्ष की प्रधानता रही है। यहाँ व्यक्ति नैतिक कर्तव्यों को पूर्ण करता हुआ अपने अंतःकरण को शुद्ध करता है। संन्यास आश्रम में पदार्पण कर व्यक्ति संसार से विरक्त हो जाता है और जीवन का उद्देश्य ‘मोक्ष’ प्राप्ति मानने लगता है। इस संदर्भ में डॉ. रवीन्द्रनाथ मुखर्जी का विचार है, “आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत पुरुषार्थ में आदर्शों को प्रत्यक्ष

रूप से अभिव्यक्त किया गया है और इस अर्थ में ये दोनों ही एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। भारतीय जीवन दर्शन को समझने के लिए इन दोनों का समुचित ज्ञान आवश्यक है। पुरुषार्थ के सिद्धांत में जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, वे आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत और उसी को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न मात्र हैं। आश्रम व्यवस्था का एक महत्व यह भी है।” डॉ. मुखर्जी का उक्त कथन इस बात का संकेत देता है कि समुचित और सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिए वर्णाश्रम और पुरुषार्थ का होना नितान्त आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि मानव जीवन वेदों के ऋत, सत्य, आनंद तत्व के लिए चार पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था, उपाय-नीतियाँ, बौद्धकालीन आर्य सत्य आदि श्रेष्ठ आयामों में बँधा हुआ था और इन्हीं आयामों से मानव मूल्य विकसित हुए हैं।

भारतीय दार्शनिक विवेचना में प्रयुक्त ‘मूल्य’ शब्द के पर्याय रूप में अंग्रेजी के ‘वैल्यू’ (Value) शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाश्चात्य दर्शन में ‘वैल्यू’ संज्ञा शब्द है जो वास्तविक अथवा संभावित उपयोगिता, महत्व या गुण के अनुसार किसी वस्तु की तुलनात्मक



स्थिति एवं उसके अनुरूप अधिक दाम लगाने आदि अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। ‘वैल्यू’ शब्द भाववाचक संज्ञा और सहायक क्रिया दोनों है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, “इसका संज्ञा वाचक अर्थ महत्व, योग्यता, उपयोगिता, विनिमय आदि हेतु निर्धारित किया हुआ मानक आदि है।” क्रिया रूप में ‘वैल्यू’ का अर्थ निर्धारण करना, महत्व देना, उचित सम्मति रखना आदि है। इसी शब्द की भाववाचक संज्ञा ‘वैल्यूएशन’ (Valuation) है, जिससे मूल्य की धर्म-कर्म, नीति निर्धारित होती है। ‘मूल्य’ शब्द का संस्कृत ग्रंथों में भी विशेषण के रूप में प्रयोग होता है, जहाँ ‘मूल्य’ शब्द का अर्थ मोल लेने योग्य बताया गया है। ‘मूल्य’ शब्द का प्रयोग अर्थशास्त्रीय संदर्भों में भी किया जाता है, जहाँ इसको क्रय शक्ति के निर्धारण, वस्तु के उत्पादन व्यय के रूप में परिभाषित किया जाता है। वस्तु की क्रय शक्ति उसकी उपयोगिता के आधार पर तय की जाती है और उसके विनिमय हेतु मुद्रा दी जाती है, अतः विनिमय का प्रतिमान होने से ही मुद्रा ‘मूल्य’ कहलाती है।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है, अतः वह अपने विवेक के आधार पर ही मूल्यों का निर्धारण करता है। पाश्चात्य समाजशास्त्री इमौरी एस. बोग्डूस ने मनुष्य की विवेकशील प्रवृत्तियों से उत्पन्न सामाजिकता और मूल्यों के पारस्परिक संबंध को स्वीकार करते हुए लिखा है—“मूल्य व्यक्ति परिवेश का एक अंग है। समस्त मानव जीवन जिसका कोई अर्थ है, मूल्यों की प्रवृत्तियों के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है।” इस वक्तव्य का आशय यह है कि प्रत्येक समाज में एक मूल्य प्रणाली विकसित होती है, जिसमें उस समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, मनोरथ एवं साध्य बनते हैं। मनुष्य जब किसी मूल्य को सीख लेता है, तब वह मूल्य संगठित रूप में मूल्य प्रणाली में रूपांतरित हो जाता है। यही मूल्य प्रणाली संपूर्ण समाज को अनुशासन में बाँध कर रखती है और विविधताओं के बीच भी नागरिकों के मध्य एकता का सूत्र बनाती है। समाज के विकास में मूल्यों के महत्व को समझने के लिए राष्ट्र राज्य के उदाहरण को सामने रखा जा सकता है।

आधुनिक युग में जब पूरी दुनिया में उपनिवेशवाद के फलस्वरूप अविकसित और पिछड़े देशों की परतंत्रता आम बात होने लगी तब राष्ट्रप्रेम के साझा मूल्य ने ही इन परतंत्र राष्ट्र के नागरिकों को स्वतंत्रता के लिए सामूहिक आंदोलन का सूत्रपात करने की प्रेरणा दी। यहाँ इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि जब भारत में आजादी का संघर्ष शुरू हुआ तो राष्ट्रप्रेम और मातृभूमि प्रेम के इन्हीं उच्च मूल्यों के कारण विविध भाषा-भाषी, विविध धर्मावलंबी, विविध संस्कृति वाले लोग एकजुट हो गए थे और अपने देश की मुक्ति के लिए सर्वस्व आहुति देने लगे थे। इस संदर्भ में राष्ट्रप्रेम या स्वदेश प्रेम ने एक ऐसे उत्प्रेरक मूल्य की भूमिका निभाई थी जिसकी आधारभूमि पर तमाम तरह के अंतर तिरोहित हो गए थे। एकता के इस बंधन के मजबूत होने से संपूर्ण समाज का सर्वांगीण विकास संभव होता है।

जब भी राष्ट्र पर किसी शत्रु राष्ट्र की तरफ से सैन्य या अन्य किसी कार्रवाई की चुनौती आती है, उस परिस्थिति में भी संपूर्ण भारतवासी अपने आपसी विभेदों की किलांजलि देकर अपनी व्यापक एकजुटता का प्रदर्शन करते हुए शत्रु राष्ट्र को पीछे हटने पर बाध्य करते हैं और अपनी भारतीय पहचान के गौरव को और सशक्त बना देते हैं। अगर हमारे समाज में देश सेवा और मानव सेवा जैसे मूल्य

पारिवारिक जीवन के अहम् संस्कार नहीं होते तो एक समाज के रूप में भारत कभी इतना संगठित और प्रतिबद्ध नहीं बना रहता। इस परिप्रेक्ष्य में रामविलास सिन्हा की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है—“समाज विकास में मूल्यों के महत्व को समझने का सबसे प्रभावी उदाहरण देश सेवा, राष्ट्रप्रेम और मानव सेवा है। जिस किसी समाज में ये मूल्य अपने उच्चतम व्यवहार में होते हैं, उस समाज में मानवता की भावना भी सबसे ज्यादा सुरक्षित रहती है। आखिरकार मूल्यों का महत्व भी तो इसी बात में है कि इससे मानव अस्तित्व और समाज की कितनी रक्षा हो पा रही है।” हमारे समाज में हर आयु वर्ग के लोग निवास करते हैं। इन आयु वर्गों में अवस्था के अनुसार बच्चे, बुजुर्ग, असहाय और उपेक्षित जन शामिल किए जा सकते हैं। आज के अर्थ युग में जब हर जगह अर्थ की प्रधानता है तब हर आदमी के महत्व का निर्धारण उसकी अर्थ उत्पादकता से निर्धारित किया जाता है।

जिस समाज में पूँजीवादी मूल्यों का प्रभाव ज्यादा होता है वहाँ उपरोक्त वर्ग के लोगों पर ध्यान देने वाला कोई नहीं होता है। बुजुर्गों

और असहायों को भी अपनी दयनीय दशाओं के बावजूद अपने अर्थ का जुगाड़ स्वयं करना पड़ता है, जबकि बच्चों को बहुत ही कम उम्र से माता-पिता के लाड़-प्यार से वंचित होना पड़ता है। ऐसी दशा में मूल्यों के अनुपालन का महत्व बहुत बढ़ जाता है। भारतीय दर्शन में जितने भी मूल्यों की प्रतिष्ठा की गई है, उन सबका परम उद्देश्य मनुष्यता की सेवा और मानव के करुणा भाव की रक्षा करना है। भारतीय दर्शन में प्रतिष्ठित मूल्य मानव समाज को आध्यात्मिक विकास की ओर उन्मुख करते हैं। इस



आध्यात्मिक विकास में निस्वार्थ रूप से समाज साहचर्य का पाठ पढ़ाया गया है। वहीं दूसरी ओर पश्चिमी जीवन मूल्यों का मूलाधार भौतिकता पर टिका हुआ है। पश्चिमी मूल्य मनुष्य को भौतिकता की ओर उन्मुख करते हैं, लेकिन मानव के सामूहिक, निःस्वार्थ कार्य व्यापारों को उर्ध्वगामी दिशा नहीं दे पाते हैं।

भारतीय दर्शन में उल्लिखित मूल्यों का महत्व इस अर्थ में भी बढ़ जाता है कि ये मूल्य मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य धारणीय तत्व हैं। इनके धारण से मनुष्य की सहजात सामूहिक सहयोग की भावना विकसित होती है और मनुष्य जीवन को औदार्य स्वरूप प्राप्त होता है। मूल्य वास्तव में संपूर्ण समाज के लिए नियंत्रण संहिता अथवा सकारात्मक मार्गदर्शिका की श्रेणी में परिगणित होते हैं। इनकी महत्ता अत्यंत व्यापक और सार्थक है।





# ज्ञानकोश के विलक्षण संग्राहक, पुस्तक संस्कृति के संपोषक खुदाबख्श खाँ

सदियों से सद्ग्रंथ ज्ञानकोश की भूमिका अदा करते आ रहे हैं और हर काल-परिस्थिति में तमाम विरोध-विध्वंस के बावजूद पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालयों के संरक्षण-संवर्धन की दिशा में सकारात्मक प्रयास होते आ रहे हैं। यूँ तो बिहार की राजधानी पटना में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा के द्वारा संस्थापित ऐतिहासिक राजकीय पुस्तकालय सिन्हा लाइब्रेरी मौजूद है, तथापि यहाँ अशोक राजपथ पर संपूर्ण विश्व में विख्यात एक ऐसा केंद्रीय पुस्तकालय अवस्थित है, जिसमें विभिन्न भाषाओं की अनगिनत पुस्तकों, शोधग्रंथों के साथ ही ऐतिहासिक महत्व की तकरीबन 75 हजार बेशकीमती पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं। बाँकीपुर



## भगवती प्रसाद द्विवेदी

हिंदी और भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि, समालोचक और लोकसाहित्य के अध्येता। बालसाहित्य के समर्पित रचनाकार तथा शताधिक पुस्तकों के प्रणेता। बिहार सरकार के हिंदी प्रगति समिति के सलाहकार सदस्य रहे द्विवेदी जी भारत सरकार के दूरसंचार विभाग से सेवानिवृत्त होकर स्वतंत्र लेखन में तल्लीन हैं। 'बालसाहित्य भारती सम्मान' सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मान प्राप्त तथा कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद और विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में संकलन।

संपर्क : मोबाइल - 9304693031

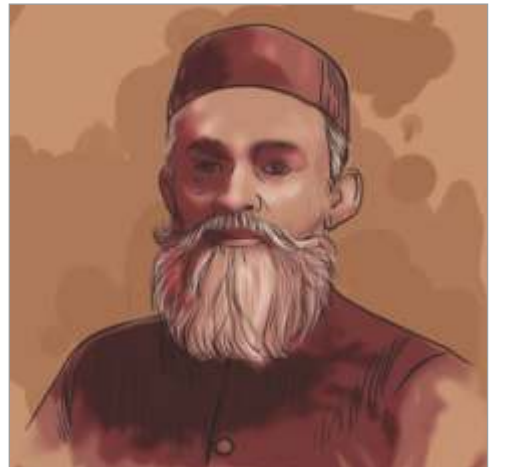
ईमेल - dubeybhagwati123@gmail.com

ओरियंटल लाइब्रेरी के रूप में जनाब खुदाबख्श खाँ ने सन् 1891 में इसकी स्थापना की थी, जिसकी प्रसिद्धि आगे चलकर 'ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी' के रूप में और खाँ साहब के निधन के बाद 'खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी' के नाम से हुई।

02 अगस्त, 1842 को बिहार के सारण जिले के ओरवी गाँव में खुदाबख्श खाँ का जन्म एक सामान्य जमींदार परिवार में हुआ था। वे मोहम्मद बख्श के ज्येष्ठ पुत्र थे। पुस्तकों के प्रति अनन्य अनुराग उन्हें अपने पिता से विरासत में मिला था। बख्श साहब ने अपने शगल के मद्देनजर 'मुहम्मदिया पुस्तकालय' की स्थापना की थी और सन् 1876 में

जब उनका निधन हुआ तो उनके पुस्तकालय में लगभग डेढ़ हजार दुर्लभ पांडुलिपियाँ संगृहीत थीं।

खुदाबख्श खाँ ने पिता की उस धरोहर को न सिर्फ संरक्षित किया, बल्कि उसे लगातार समृद्ध करते हुए शीर्ष ऊँचाई पर भी पहुँचाया। हालाँकि आजीविका के क्षेत्र में



उन्होंने पेशकार के पद से शुरुआत कर अधिवक्ता और आसिफिया सरकार के उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश तक का ओहदा

“ पुस्तक-पांडुलिपि के संग्राहक के साथ ही मुस्लिम समुदाय में शिक्षा के प्रसारक-प्रचारक के रूप में भी खुदाबख्श खाँ के अवदान को विशेष रूप से रेखांकित किया जाता है। ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा एवं पुस्तक संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान को ध्यान में रखते हुए खान बहादुर की उपाधि प्रदान की थी। ”

सँभाला और सेवानिवृत्ति (1898) के बाद भी वकालत का पेशा जारी रखा, पर मिशनरी भाव से अपनी कमाई का ज्यादातर हिस्सा पुस्तकालय को उत्तरोत्तर समृद्ध करने तथा पुस्तकें-पांडुलिपियाँ क्रय करने में लगा दिया।



महान पुस्तक प्रेमी खुदाबख्श खाँ के अविस्मरणीय अवदान की चर्चा करते हुए डॉ. तैयब हुसैन ने लिखा है—“उल्लेखनीय संग्रह में मृगछाल पर कूफी लिपि में लिखा कुरान शरीफ (जेके मोहम्मद साहब के दामाद हज़रत अली द्वारा लिखित), 13वीं शताब्दी के अब्बासी युग के प्रसिद्ध लिपिविद्ध याकूब मुस्तासिमी की लिपि, स्वर्णकारी से सुसज्जित मुगलशाही पुस्तकालय का ‘कुरान शरीफ’ (17वीं शताब्दी), 13वीं शताब्दी में लिखित नस्तालीक लिपि में ‘दीवाने हाफिज़’ की अप्राप्य प्रति, हुमायूँ और जहाँगीर की लिखावट, अकबरकालीन तारीखे खानदाने तैमूरिया की पांडुलिपि, सरिते फ़ीरोज शाही, हुसैनीकृत शाहनामा, मुगलकालीन सिक्का, वास्तुकला के रूप में ताजमहल, जामा मस्जिद, दीवाने खास आदि के कलमी चित्र, 11वीं सदी में अरबी में लिखित ‘किताबुल हशाइश’, अलजहरावी की ‘किताबुल तसरीफ’ और अल-बैरूनी की नई कृतियाँ हैं। (‘जियतार जिनगी’ पुस्तक से भोजपुरी से अनूदित)

खुदाबख्श पुस्तकालय में एक तरफ ताड़पत्र पर लिखी संस्कृत की पचासों दुर्लभ पांडुलिपियाँ हैं, वहीं पाँचवीं सदी के पूर्व के उपनिषदों की प्रतियाँ भी मौजूद हैं।

मुगलिया कला एवं पटना कलम के बेजोड़ नमूने यहाँ देखते ही बनते हैं। इस्लामी, अरबी, फारसी, तिब्बी में रचित औषधि, ज्योतिष, खगोल, अंतरिक्ष विज्ञान की बेशकीमती किताबें यहाँ की खासियत है।



चंद दुर्लभ पांडुलिपियों के नमूनों ने जॉर्ज पंचम और महारानी को भी हैरत में डाल दिया था।

पुस्तक-पांडुलिपि के संग्राहक के साथ ही मुस्लिम समुदाय में शिक्षा के प्रसारक-प्रचारक के रूप में भी खुदाबख्श खाँ के अवदान को विशेष रूप से रेखांकित किया जाता है। ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा एवं पुस्तक संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान को ध्यान में रखते हुए खान बहादुर की उपाधि प्रदान की थी।



जीवन के आखिरी दिनों में खाँ साहब लकवाग्रस्त हो गए थे और सन् 1908 में उनका इंतकाल हो गया था। उनकी दिली खाहिश के मुताबिक पुस्तकालय परिसर में ही उन्हें दफनाया गया था। उनकी स्मृति को समर्पित वह स्मारक ज्ञानकोश के म्यूजियम के रूप में न जाने कितनी पीढ़ियों को अभिप्रेरित करता आ रहा है।





# शांति के लिए परमाणु

‘शांति के लिए परमाणु’ अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर द्वारा 08 दिसंबर, 1953 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिया गया एक भाषण था। अपने भाषण में, आइजनहावर ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने और परमाणु युद्ध के खतरे को कम करने के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तावित किया।

यह भाषण ऐसे समय में आया जब द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बमों के प्रभाव से दुनिया अभी भी जूझ रही थी। परमाणु युद्ध का भय बहुत वास्तविक था और कई देश अपने स्वयं के परमाणु हथियार विकसित करने की होड़ में लगे हुए थे।



## डॉ. कुलवंत सिंह

**शिक्षा :** स्नातक, मैटलर्जिकल एंड मेटेरियल्स इंजीनियरिंग, आईआईटी, रुड़की। एम.बी.ए. (इग्नू दिल्ली), पी-एच.डी., मुंबई विश्वविद्यालय।

**संप्रति:** प्रोफेसर, होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान।

**प्रकाशन :** 80 से अधिक तकनीकी पत्र प्रकाशित, प्लूटोनियम विज्ञान पुस्तक का संपादन, हिंदी में पाँच काव्य पुस्तकें प्रकाशित।

**सम्मान :** BARC द्वारा ‘राजभाषा गौरव पुरस्कार’, ‘भाभा फर्स्ट प्राइज अवार्ड’, ‘युप अचीवमेंट अवार्ड’ और ‘बेस्ट पी-एच.डी. पेपर अवार्ड’।

**संपर्क :** मोबाइल— 9819173477

ईमेल— kavi.kulvant@gmail.com



आइजनहावर के प्रस्ताव ने परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसका उपयोग सैन्य उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाए, एक अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की स्थापना की वकालत की। उन्होंने परमाणु हथियारों और संबंधित पदार्थों के प्रसार को रोकने के लिए सुरक्षा उपायों की एक प्रणाली बनाने का भी आह्वान किया।

शांति के लिए परमाणु कार्यक्रम का बाद के वर्षों में परमाणु प्रौद्योगिकी के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इसने अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) की स्थापना में मदद की और परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों जैसे बिजली पैदा करने के लिए परमाणु ऊर्जा संयंत्रों एवं अन्य सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए परमाणु प्रौद्योगिकी के विकास का नेतृत्व किया।

हालाँकि, इस कार्यक्रम के अपने आलोचक भी थे, जिन्होंने तर्क दिया कि इसने परमाणु प्रौद्योगिकी के उपयोग को वैध बनाने में मदद की और इसने परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए पर्याप्त कार्य नहीं किया। इन आलोचनाओं के बावजूद, परमाणु प्रौद्योगिकी के इतिहास और परमाणु युद्ध को रोकने के प्रयासों में शांति के लिए परमाणु कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बना हुआ है।

कई अन्य देशों की तरह, भारत ने भी परमाणु हथियारों के विकास के साथ-साथ परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण उपयोग का अनुसरण किया है। भारत का परमाणु कार्यक्रम 1940 के दशक में शुरू हुआ और इसने वर्ष 1974 में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया।

भारत परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय

समुदाय के प्रयासों में सक्रिय भागीदार रहा है। भारत अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) का सदस्य है और उसने परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने और परमाणु सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

“ सन् 1998 के परीक्षणों ने भारत की परमाणु नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया, क्योंकि देश ने खुद को एक परमाणु हथियार राष्ट्र घोषित किया और अपने परमाणु हथियारों के लिए ‘पहले उपयोग नहीं’ नीति की घोषणा की। भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक व्यापक परमाणु निरस्त्रीकरण योजना का भी प्रस्ताव रखा, जिसमें दुनिया भर से सभी परमाणु हथियारों के उन्मूलन का आह्वान किया गया। ”

भारत ने अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने के साधन के रूप में परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण उपयोग और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित की है।

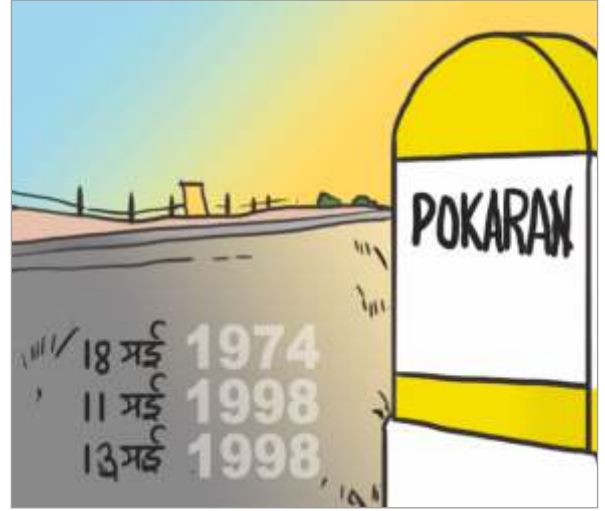
पोखरण-परमाणु परीक्षण भारत द्वारा 18 मई, 1974 को राजस्थान के पोखरण रेगिस्तान में किया गया पहला परमाणु परीक्षण था। परीक्षण का कोडनेम ‘स्माइलिंग बुद्ध’ रखा गया था।



परीक्षण दुनिया के लिए एक आश्चर्य था और कई देशों को चौकन्ना कर दिया। भारत का सफल परमाणु परीक्षण देश के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, क्योंकि इसने प्रदर्शित किया कि भारत के पास परमाणु हथियार विकसित करने की क्षमता है।

परीक्षण प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया गया था और इसे मिश्रित प्रतिक्रियाएँ मिलीं। जबकि कई भारतीयों ने परीक्षण की सफलता को भारत की तकनीकी प्रगति और सैन्य ताकत के प्रतीक के रूप में मनाया, संयुक्त राज्य अमेरिका सहित अंतरराष्ट्रीय समुदाय

ने परमाणु हथियारों के प्रसार के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मानदंड के उल्लंघन के रूप में परीक्षण की आलोचना की। परीक्षण के परिणामस्वरूप, भारत को अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा।



मई 1998 में, भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया। राजस्थान में पोखरण परीक्षण रेंज में तीन भूमिगत परीक्षणों सहित पाँच परमाणु परीक्षणों की एक शृंखला आयोजित की। इन परीक्षणों को ‘ऑपरेशन शक्ति’ नाम दिया गया था। ये परीक्षण प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में किए गए थे, और इसे पड़ोसी देशों, विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन से कथित खतरों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा गया था। परीक्षणों को भारत की परमाणु क्षमता के प्रदर्शन और भारत के एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरने के संकेत के रूप में भी देखा गया। परीक्षणों की अंतरराष्ट्रीय समुदाय के कई हिस्सों से व्यापक निंदा हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और जापान द्वारा भारत पर आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए गए।

सन् 1998 के परीक्षणों ने भारत की परमाणु नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया, क्योंकि देश ने खुद को एक परमाणु हथियार राष्ट्र घोषित किया और अपने परमाणु हथियारों के लिए ‘पहले उपयोग नहीं’ नीति की घोषणा की। भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक व्यापक परमाणु निरस्त्रीकरण योजना का भी प्रस्ताव रखा, जिसमें दुनिया भर से सभी परमाणु हथियारों के उन्मूलन का आह्वान किया गया।

प्रारंभिक निंदा के बावजूद, भारत का परमाणु कार्यक्रम तब से सामान्य हो गया है और देश ने परमाणु युद्ध के जोखिम को कम करने और परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से कई अंतरराष्ट्रीय संधियों और समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

सन् 2008 में, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने ‘यूएस-इंडिया सिविल न्यूक्लियर एग्रीमेंट’ नामक एक ऐतिहासिक

समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग का विस्तार करना था। समझौते के तहत, संयुक्त राज्य अमेरिका भारत को असैन्य परमाणु प्रौद्योगिकी और नाभिकीय ईंधन तक पहुँच प्रदान करने पर सहमत हुआ, जबकि भारत अपनी असैनिक परमाणु सुविधाओं को IAEA सुरक्षा उपायों के तहत रखने पर सहमत हुआ।



यूएस-इंडिया सिविल न्यूक्लियर एग्रीमेंट, जिसे '123 एग्रीमेंट' के रूप में भी जाना जाता है, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच एक द्विपक्षीय समझौता है जिस पर 10 अक्टूबर, 2008 को हस्ताक्षर किए गए थे।

इस समझौते को अमेरिका-भारत संबंधों में एक महत्वपूर्ण सफलता के रूप में देखा गया, क्योंकि इसने संयुक्त राज्य अमेरिका की अप्रसार की दीर्घकालिक नीति से प्रस्थान को चिह्नित किया और एक प्रमुख विश्व शक्ति के रूप में भारत की बढ़ती स्थिति की मान्यता का संकेत दिया। समझौते को भारत के असैन्य परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बढ़ावा देने के रूप में भी देखा गया था।

समझौते के तहत भारत अपनी नागरिक और सैन्य परमाणु सुविधाओं को अलग करने और अपनी नागरिक परमाणु सुविधाओं के अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण की अनुमति देने पर सहमत हुआ। भारत परमाणु सामग्री और प्रौद्योगिकी के प्रसार को रोकने के लिए अपने निर्यात नियंत्रण कानूनों और प्रावधानों को मजबूत करने पर भी सहमत हुआ।

'यूएस-इंडिया सिविल न्यूक्लियर एग्रीमेंट' अमेरिका-भारत संबंधों में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है और इसने रक्षा, प्रौद्योगिकी

और व्यापार के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

भारत के पास अपने परमाणु हथियारों के संबंध में 'नो फर्स्ट यूज' (एनएफयू) नीति है, जिसका अर्थ है कि भारत किसी भी संघर्ष में परमाणु हथियारों का उपयोग करने वाला पहला देश नहीं होगा और केवल परमाणु हमले के जवाब में उनका उपयोग करेगा। इस नीति को पहली बार 1999 में भारत के रक्षा मंत्री, जॉर्ज फर्नांडीस द्वारा घोषित किया गया था और बाद में वर्ष 2003 में भारत सरकार द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी।

एनएफयू नीति भारत के समग्र परमाणु सिद्धांत का एक हिस्सा है, जो विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध की स्थिति पर आधारित है। इसका तात्पर्य यह है कि भारत के पास परमाणु हथियार है जो एक संभावित विरोधी को भारत के खिलाफ परमाणु हथियारों का उपयोग करने से रोकने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हथियारों की दौड़ में शामिल होने या परमाणु युद्ध को भड़काने के लिए पर्याप्त नहीं है।

भारत की एनएफयू नीति इस विश्वास पर आधारित है कि परमाणु हथियार एक राजनीतिक उपकरण है, न कि एक सैन्य उपकरण, और यह कि उनका उपयोग

हमलावर और लक्ष्य दोनों के लिए विनाशकारी हो सकता है। इस नीति को क्षेत्र में तनाव कम करने और स्थिरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक विश्वास-निर्माण उपाय के रूप में भी देखा जाता है।



भारत की एनएफयू नीति देश के परमाणु सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण तत्व है और इसका उद्देश्य क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना है।





# एमेरिलिस या हिप्पीस्ट्रम लिली

## एक चरित्र चित्रण

ईश्वर ने इस दुनिया में न जाने कितने अजूबों को जन्म दिया है। यदि हम उन पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो पाएँगे कि जीव एवं वनस्पति दोनों ही अपने चरित्र एवं विशेषताओं के कारण कौतूहल से भरे पड़े हैं।

मैं एक ऐसी ही विस्मयकारी वनस्पति के विषय में आपसे चर्चा करने जा रहा हूँ जिसने मुझे प्रारंभिक रूप से अपने लावण्य एवं सौंदर्य से आकर्षित किया, परंतु वह सौंदर्य रचना कुछ ऐसी थी जो न केवल सम्मोहित करती थी, प्रत्युत एक ऐसा कौतूहल जो आपको उस वनस्पति जीव के विषय में और अन्वेषण करने को बाध्य करने लगता है। लोभ, लालच, लगाव मानव प्रवृत्ति है और लगभग इसी के चलते मेरा परिचय इस एमेरिलिस लिली की कुछ अद्भुत किस्मों पर आज से सात साल पहले फेसबुक पर हो गया।



**डॉ. मनोज शर्मा**

**संप्रति :** वरिष्ठ कैंसर विशेषज्ञ। गृह मंत्रालय द्वारा प्रमाणित लेखक एवं वक्ता।

**लेखन एवं प्रकाशन :** 200 से अधिक हिंदी में लेख एवं 30 के लगभग पुस्तकों का लेखन, प्रमुख रूप से कैंसर जागरूकता और पर्यावरण से जुड़े विषयों पर। 100 से अधिक अर्बुद शास्त्र पर शोध पत्र अथवा भाषण प्रस्तुतियाँ।

**संपर्क :** profmanojsharma@gmail.com



वास्तव में 'लिली' एक ऐसा शब्द है जिससे हम, खासतौर पर पर्यावरण या सुंदर प्रकृति में रुचि रखने वाले, से अधिकांश का परिचय हो ही जाता है। हम उनके विभिन्न आकृतियों वाले फूलों, वर्णों एवं सुगंधों से परिचित होते हैं। कभी पुष्प प्रदर्शनी में तो कभी बाग-बगीचों में और कभी विवाह के उत्सवों में की गई सजावटी मंडपों में।

गुलाबी-सफेद और लाल लिली तो मैंने छुटपन से ही अपने घर और उद्यान में देखी थी और उसे हम पूरे साल सँभाल कर भूमि में लगे रहने देते थे इस प्रतीक्षा में कि मौसम आने पर वह अवश्य पुष्पित होंगी, अन्यथा उसकी लंबी-हरी कच्ची पत्तियाँ बिना कुछ सेवा माँगे वातावरण को तरोताजा हरा-भरा रखती ही हैं और पूरे साल बिना किसी माँग के द्विगुणित होती हैं, बच्चे देती हैं और हरियाली बढ़ाती हैं।

बात उन्हीं पिंडाकर आधार की हो रही है जो एमेरिलिस लिली का मूल है, जिसे हम आम भाषा में 'लिली का बल्ब' कहते हैं। बस वही एक ऐसा रहस्य का पिटारा है जो हम सब को ऐसी शिक्षा और आदर्श सिखाता है कि हम विपरीत परिस्थितियों में भी अपने जीवन की गुणवत्ता का विकास कर सकते हैं।

हॉलैंड या नीदरलैंड ही तो वह देश है जो ट्यूलिप का स्वर्ग है और यहीं के व्यवसायी पूरे विश्व में एमेरिलिस लिली के बल्बों की आपूर्ति करते हैं जो करोड़ों डॉलर या यूरो का धंधा बन गया है। हॉलैंड में लिली की उन्नत किस्मों को उनका बहु संकरण कर नए रंग-रूप एवं आकार में विकसित किया जाता है। विश्व में अन्यत्र प्राकृतिक रूप से नम जलवायु या वर्षा वनों के आस-पास होने वाली प्राकृतिक या जंगली लिली की किस्में

लाकर उन्हें घरेलू बनाया जाता है। दक्षिण अमेरिका इस प्रकार की अति सुंदर, पर जंगल में होने वाली लिली के लिए जाना जाता है। लिली में प्रायोगिक तौर पर या फिर उनकी उन्नत किस्मों का विकास करने को लेकर अनेकानेक शौकिये पर्यावरणविद् या वैज्ञानिक निरंतर लगे रहते हैं और हर वर्ष यदि आप उनकी खरीद-फरोख्त करें तो कई ध्यानाकर्षक किस्में आपको उनकी सूची में मिलेंगी जो पिछले साल नहीं थीं।

### आइए, शुरुआत करें इस अजूबे के व्यापारिक विकास से

हर लिली में कई प्रकार होते हैं, जैसे—सिंगल लिली या डबल लिली। सिंगल या इकहरी लिली में प्रजनन तंत्र सुगमता से दिखता है, जबकि डबल यानी गुच्छा लिली में उसे खोजना पड़ता है। सिंगल लिली की विभिन्न रंगों, आकार एवं पंखुड़ियों वाली लिली के आपस में क्रॉस पोलिनेशन द्वारा ऐसे बीज तैयार किए जाते हैं जो एकदम नई और अद्भुत जाति को जन्म देते हैं। गुच्छेदार लिली के पराग को लेकर इकहरी लिली के गर्भ में प्रत्यारोपण कर गुच्छेदार लिली की भी अद्भुत किस्में तैयार की जाती हैं। अब शुरु होता है वह वर्षों लंबा सफर जो हमें एक बड़े संतरे के आकार से भी बड़ा बल्ब प्रदान किया करता है।

वास्तव में लिली के बीज एक पतले कागज जैसे होते हैं एक से डेढ़ से.मी. के और उन्हें बोया जाता है। तीन से चार साल की सेवा एवं प्रतीक्षा ही हॉलैंड में उन्हें 10-15 से.मी. व्यास वाला बल्ब बना देती है जो बाजार में आठ से 25 यूरो तक में भी बिकता है।

बाजार में आने से पहले सितंबर से अक्टूबर मास तक उन्हें एक कोल्ड स्टोरेज में आठ डिग्री तापमान पर रखा जाता है जिससे यह बाद में साधारण वातावरण में 20 से 24 डिग्री सेल्सियस तापमान में प्रस्फुटित हो उठते हैं कलियों के साथ।

जिस रूप, रंग और लावण्य के साथ ये नई किस्में बाजार में आती हैं, उनका दाम भले ही कितना हो, खरीदने वालों की होड़ लग ही जाती है, क्योंकि उनकी संख्या या कंपनी में संग्रह सीमित होता है। हमारे देश के ग्राहक हों या विदेश के, शुरु हो जाता है खरीद के लिए



उनके दिखाई गई किस्मों की सचित्र सूची से चयन और फिर ऑर्डर। पैसे का भुगतान करने के एक महीने के अंदर ही हॉलैंड या जर्मनी के विक्रेता के यहाँ से यह भारत पहुँचती रही है, जहाँ अब पिछले एक वर्ष से 40 प्रतिशत कस्टम ड्यूटी भी देनी पड़ती है। दुर्भाग्य से भारतीय डाक विभाग की शिथिलता के चलते कई विक्रेताओं ने भारत में अद्भुत लिली बल्ब भेजने बंद कर दिए हैं क्योंकि वे ग्राहक तक पहुँचते ही नहीं।

ये बल्ब भारतीय साधारण खरीदारों की दृष्टि से महंगे होते हैं, यानी एक हजार से तीन हजार रुपये तक के होते हैं। एक उत्साही उन्हें संपूर्ण रूप से कीटनाशक एवं फफूँदनाशक दवाओं से उपचार करके ही लगाता है। और मजे की बात यह है कि ग्राहक उन्हें लगाने, उसमें से निकले फूल-पत्तियों का पूर्ण आनंद लेने के पश्चात उनके द्विगुणन की प्रक्रिया के प्रयोग करने लगता है। इस महंगे बल्ब पर खर्चा करने के पश्चात ग्राहक द्वारा उसके और बल्बों की संख्या या तो जड़ों से निकली छोटी गाँठों या फिर उसके बीज बोकर बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

वास्तविकता यह है कि ये कृत्रिम रूप से बने बल्ब, वे भी हॉलैंड जैसे एकदम अलग जलवायु में पनपने के कारण बड़े ही नाजुक और संवेदनशील होते हैं। सही पोषण और शुद्ध जल न मिलने पर उनमें कीड़े या अन्य संक्रमण लगने का खतरा रहता है। वर्ण संकरित होने के कारण बहुत सारी किस्में अपने मूल में नई गाँठें या बल्ब भी पैदा नहीं करतीं। परंतु हाँ, एकबारगी यदि इन्होंने स्थानीय भारतीय मिट्टी से दोस्ती कर जलवायु की आदत डाल ली तो वे एक साधारण देसी लिली की तरह ही जीते रहते हैं।

मान के चलें कि लिली का बल्ब एक चार इंच या पाँच इंच व्यास वाली प्याज की गाँठ के बराबर है, यानी प्याज की भाँति इसमें परतें भी हैं और प्याज की जड़ वाली जगह पर यह छोटे-छोटे प्रकोष्ठों में विभाजित भी है। परंतु इसी बल्ब में सारी कायनात, प्रकृति के रहस्य छिपे हैं।



इसी बल्ब में आने वाली 20-20 से.मी. के आकार के भोपू नुमा फूलों की पंखुड़ियाँ छिपी हैं और दो-तीन इंच चौड़ी और दो फुट तक लंबी अनेकानेक पत्तियाँ। उसी बल्ब में से एक-डेढ़ या कभी दो फुट वाली एक इंच के व्यास वाली लंबी डंडियाँ चार से छह कलियों वाली, का उद्भव और विकास होने जा रहा है। तीन से पाँच इंच के व्यास के बल्ब से एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं प्रत्युत कभी-कभी चार पुष्प दंड प्रस्फुटित होकर एक गुलदस्ते का रूप ले लेते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि इतना बड़ा सौंदर्यपूर्ण उत्पादन करने की क्षमता एक सीमित आकार के जादुई पिंड (बल्ब) में आई कहाँ से? एक से.मी. के कागज वाले बीज से विकसित हो तीन-चार साल की साधना और फिर महीनों का शीत प्रहार, उसके बाद धक्के-हिचकोले खाते हजारों मील की विदेश यात्रा कर भारत में आगमन। और फिर फूलों से दिल बाग-बाग कर देना! विस्मयकारी। यह मालिक की दुनिया सारी!!

कहाँ से आता है उनका पोषण? क्या उन्हें लगाते ही उनकी जड़ें तीव्र गति से विकसित होकर मृदा से पोषण खींचना शुरू कर देती हैं?

नहीं, कदापि नहीं! उन्हें तो बस छोटे-छोटे गमलों में आधा हिस्सा मिट्टी में दबाने को कहा जाता है पुरानी सूखी जड़ों के साथ और उनका आधा त्रिकोणीय हिस्सा ऊपर रहता है।

विस्मयकारी परिस्थिति उसके विक्री किए जाने वाले रूप की यह है



कि यह पूरा बल्ब एक प्रकार की मोम के आवरण से ढक दिया जाता है। उनके लिए जो लोगों को इसे उपहार के रूप में देना चाहते हैं, वे बस इस मोमीय बल्ब को एक बालू भरे छोटे गमले में रख देते हैं और देखते-ही-देखते कुछ ही दिनों में ये एक गुलदस्ते के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

दूसरा तरीका, इसे शीशे के एक विशेष पात्र में ऐसे रखा जाता है जिससे इसकी जड़ बस पानी में रहे और देखते-ही-देखते यह भारी-भरकम फूलों वाली छड़ी पुष्पित-पल्लवित कर देता है। जड़ें धीरे-धीरे विकसित होकर अपना कार्य और विकास करती रहती हैं। है न अचरज!

प्रायः इसके उत्साही ग्राहकों को एक हृदयविदारक परिस्थिति का ऐसे सामना करना पड़ता है कि ये विदेशों से मंगाए महँगे बल्ब कहीं अपनी हजारों मील की यात्रा में फँस जाते हैं, हवाई कार्गो में या सीमा शुल्क (कस्टम) अधिकारियों के कारण। वे डिब्बे में ही बंद सूर्य की

एक किरण की प्रतीक्षा में रहते हैं, जो उन्हें दिनों या हफ्तों नहीं मिलती। ऐसे में वे मंथर गति से इस सावधानी से विकसित होकर अपनी कलियाँ बाहर निकालते हैं मानो उनकी पावती होते ही वे प्रस्फुटित हो जाएँगे। इस प्रतीक्षा में सड़न भी आंशिक रूप से हो सकती है।

कौतूहल इस बात का है कि डिब्बों में बंद, भोजन-पानी से दूर यह प्रकाश के अभाव में एकदम एक सफेद-धवल तरो-ताजगी के साथ कलियों में प्रस्फुटित होते हैं, क्योंकि इनका जीवन एक स्फुरित दशा में है। ग्राहक प्राप्ति के बाद जैसे ही ये प्रकाश के संपर्क में आते हैं, इनमें इसी दिन हल्के हरे रंग का परिवर्तन दिखता है और हफ्तों-महीनों के कारावास के पश्चात भी एक-दो हफ्ते में इनकी कलियाँ एक-एक डंडी पर पाँच-छह फूलों का गुलदस्ता तैयार करती हैं। शीतकाल में यह गुलदस्ता 15 दिन से 20 दिन तक वैसा ही तरोताजा रहता है एवं जब उसका मुरझाना शुरू होता है तब तक उसी बल्ब में से एक और मोटी कलीदार पुष्पदंड विकसित होकर मात्र एक

बल्ब अपने अनेकानेक पुष्पदंड प्रदर्शित कर आपको महीनों रिझाए रहते हैं, विशेषकर यदि आपने कई किस्में खरीदी हैं तो।

गहरे लाल, एकदम सफेद, गुलाबी, पीले, धारीदार गोल या नुकीली पंखुड़ियों के अलावा हरा रंग और न जाने एक ही रंग के कई प्रकार की किस्में आपको देखने को मिलेंगी। पुष्पित हो जाने के पश्चात ये अपने बीजकोशों को इतनी सुंदरता से प्रस्तुत करते हैं जैसे मोर के सिर की

कलगी हो। अनुभवी, उत्साही इन्हीं से निकले बीजों से धनवान होने को सपना देखते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि मात्र चार इंच की इस प्याज जैसी गाँठों के गर्भ में या उसकी मजबूत परतों में कौन-सा ऐसा जादू छिपा है जो इसे दीर्घकालिक पोषण ही नहीं प्रदान करता, बल्कि भूखी-प्यासी दुरवस्था में भी या कठिन परिस्थितियाँ झेलने, बिना पानी, हवा या प्रकाश के अभाव में भी ये दृढ़ता से अपना ऐसा कर्म करते चले जाते हैं जिसकी आशा कम-से-कम उन्हीं परिस्थितियों से गुजरने वाले मानव या अन्य पेड़-पौधे कदापि नहीं कर सकते हैं। मानव द्वारा अपने ही स्वार्थ के हेतु दी गई प्रताड़ना, उपेक्षा, लापरवाही या वंचित किए जाने के पश्चात भी ये एमेरिलिस लिली के बल्ब मानव समाज को सौंदर्य, विभिन्नता, लावण्य, सहनशीलता और इन सबके बाद अगले मौसम की तैयारी में निरंतर वर्षों तक सहयोग प्रदान कर एक आशा का संदेश देते हैं।





# निराला की उदात्त सौंदर्य भावना

निराला हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रौढ़तम स्तंभों में से एक हैं। छायावाद में निराला का स्थान प्रसाद के बाद आता है। छायावादी कवियों की मुख्य विशेषताएँ—वैयक्तिकता कल्पना की अतिशयता, अतीत मोह, अतिशय बौद्धिकता, समाज के प्रति विद्रोह भाव, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति प्रेम, रहस्यवादी, स्वच्छंदवादी, कोमलकांत पदावली का प्रयोग, विस्तृत सौंदर्य चेतना स्थूल के आधार पर सूक्ष्म का वर्णन आदि है। कवि की रचना के दो पक्ष होते हैं : कला पक्ष और भाव पक्ष। अपने अनुभूति एवं भावना को सुंदर रूप में उपस्थित करना ही कवि या कलाकार का



## डॉ. संतोष पटेल

जन्म : 04 अप्रैल, 1974, बेतिया विहार।

शिक्षा : पी-एच.डी.।

संप्रति : सहायक कुलसचिव (असिस्टेंट रजिस्ट्रार), दिल्ली टीचर्स यूनिवर्सिटी, दिल्ली सरकार, नई दिल्ली।

प्रकाशन : भोजपुरी जिंदगी (संपादक), पूर्वाकर (सह संपादक), आधा दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित, डेढ़ दर्जन से अधिक साझा संग्रह प्रकाशित।

सम्मान : साहित्य सम्मान, कबीर सम्मान, भोजपुरी भाष्कर सम्मान, भोजपुरी कीर्ति सम्मान।

संपर्क : मोबाइल— 9868152874

ईमेल— bhojpurijinigi@gmail.com

लक्ष्य होता है। अपने अनुभूत भावों को संप्रेषण द्वारा दूसरे तक पहुँचाना कवि या कलाकार की सफलता का परिचायक है। अपने सुंदर भावों को सुंदर रूपों में रखना कलाकारिता है। प्रायः सभी छायावादी कवियों ने अपनी कला को सौंदर्य से मंडित करने का सफल प्रयास किया है।

छायावादी कवियों की सौंदर्य चेतना स्थूल के प्रति सूक्ष्म सौंदर्य की चेतना है।

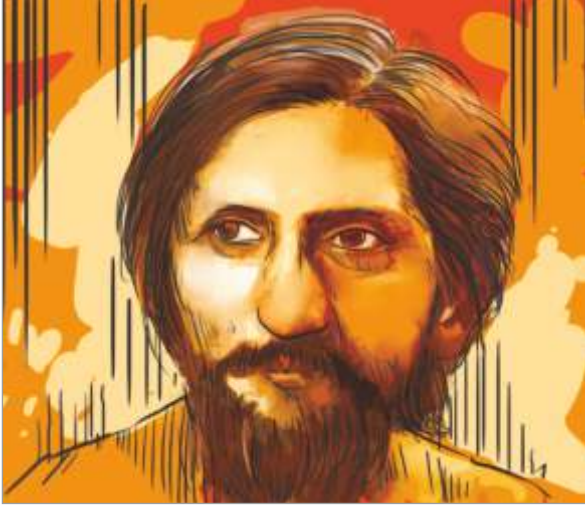
सौंदर्य भाव का संबंध हृदय के रति भाव से संबंधित है। रति भाव से उत्पन्न शृंगार रस 'रसों का राजा' कहलाता है। रति भाव सिर्फ वासनात्मक प्रवृत्तियों का परिचायक न होकर भक्ति, वात्सल्य, ममता, करुणा तथा माधुर्य आदि सभी भावों का अभिव्यंजक है। हिंदी साहित्य में

रति का विस्तृत रूप भक्ति काल में उपस्थित किया गया था, किंतु शृंगार काल एवं रीतिकाल में रचनात्मक प्रवृत्तियों की प्रबलता के कारण कवियों ने सौंदर्य का वर्णन सिर्फ वासना पूर्ति के लिए किया है।

आधुनिक युग के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने के साथ-ही-साथ सौंदर्य चेतना में भी परिवर्तन हुआ है। अब नारी का प्रेयसी



रूप ही उपस्थित करना लक्ष्य नहीं है। नारी सचिव, सखा और गृहिणी तो है ही, माता, बहन और पुत्री भी है तथा मनुष्य के जीवन में प्रभावित होने वाली धारा भी है। फलस्वरूप, छायावादी कवियों ने



नारी के उक्त विविध रूपों का अत्यंत ही मार्मिक क्षेत्र उपस्थित किया है। छायावादी कवि संसार की स्थूलता से भागकर सूक्ष्मता की ओर जाना चाहता है, इसलिए स्थूल सौंदर्य उसे आकर्षित नहीं कर सका। इस प्रकृति के चलते छायावादी कवियों में एक तरफ नारी सौंदर्य का सूक्ष्म वर्णन किया गया है तो दूसरी तरफ से प्रकृति पर नारी भावना का आरोप भी किया है।

निराला नारी में प्रेयसी, माता, पुत्री और देवी के रूपों को देखते हैं। एक तरफ उनकी नारी चेतना रहस्य भाव से युक्त है तो दूसरी ओर यथार्थ भावों से परिपूर्ण है। नारी के प्रति रहस्यवादी प्रवृत्ति की अभिव्यंजना निराला की कविता 'प्रेयसी' में हुई है। 'प्रेयसी' कविता में निराला ने नारी की दिव्यता की रक्षा पूर्ण रूप से की है। इसके अतिरिक्त 'संध्या सुंदरी', 'प्रिय के प्रति प्रभाती', 'शेष बसंती' आदि कविताओं में भी नारी के दिव्य रूप दिखाई पड़ते हैं। 'जूही की कली' का सौंदर्य मांसल है फिर भी 'तुम और मैं' तथा 'सरोज स्मृति' आदि कविताएँ उदात्त भाव से परिपूर्ण हैं। सौंदर्य के प्रति उदारता सात्विकता की देन है। उदात्त सौंदर्य का तात्पर्य सात्विक सौंदर्य भी है। कवि द्वारा चित्रित उदात्त सौंदर्य के कुछ रूप देखे जा सकते हैं। कवि की 'यमुना के प्रति' कविता में भावना का यह रूप ममता से परिपूर्ण है—

‘मुग्धा के लज्जित पलकों पर  
तू यौवन की छवि अज्ञात  
आँख मिचौली खेल रही है  
किस अतीत शिशुता के साथ?’

कवि ने यमुना को देखकर उसकी कल्पना एक मुग्धा के रूप में की है। उसकी छवि को नव यौवना मुग्धा की छवि दृष्टि के रूप में उपस्थित किया है।

स्वच्छंद कवि की यह विशेषता है कि वे सामान्य वस्तुओं में भी असामान्य सौंदर्य के दर्शन करते हैं, फलतः सामान्य वस्तुएँ भी अलौकिक रूप से परिपूर्ण बन जाती हैं। 'यमुना के प्रति' कविता में यौवना का यह रूप भी देखा जा सकता है, किंतु इसमें भी अश्लीलता नहीं है—

वह कटाक्ष-चंचल यौवन-मन  
वन-वन प्रिय-अनुसरण-प्रयास  
वह निष्पलक सहज चितवन पर  
प्रिय का अचल अटल विश्वास;  
असफल छल की सरल कल्पना,  
ललनाओं का मृदु उद्गार  
बता, कहाँ विशुद्ध हुआ वह  
दृढ़ यौवन का पीन उभार;

कवि की 'संध्या सुंदरी' एक अत्यंत ही मादक रूप लेकर उपस्थित होती है। चुपचाप आती हुई संध्या सुंदरी के चित्र पर वातावरण की अनुकूलता के रक्षा में गंभीरता और नीरवता के पर्दे डाल दिए गए हैं—

‘धीरे-धीरे उतर क्षितिज  
आ बसंती रजनी।  
अथवा  
आसमान से उतर रही  
संध्या सुंदरी  
परी-सी  
धीरे धीरे धीरे’



‘जूही की कली’ कविता में मुग्धा नायिका की अत्यंत ही मधुर कल्पना प्राकृतिक उपादान में की गई है—

‘विजन-वन-वल्लरी पर  
सोती थी सुहाग-भरी-

स्नेह-स्वप्न-मग्न  
अमल-कोमल-तनु तरुणी  
जूही की कली,



‘जूही की कली’ का सौंदर्य कुछ ज्यादा स्थूल बन गया है—  
नायक ने चूमे कपोल,  
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल ।

निराला की ‘विधवा’ कविता नारी की करुणा से परिपूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। नारी की करुणा पूर्णतः निराला के इन शब्दों में उपस्थित है—

‘वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी  
वह दीप-शिखा-सी शांत, भाव में लीन,  
वह क्रूर-काल-ताण्डव की स्मृति-रेखा-सी  
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन’

निराला की उदात्त भावना की पूर्ण व्यंजना ‘प्रेयसी’ कविता में हुई है—

‘आयी मैं द्वार पर सुन प्रिय कण्ठ-स्वर,  
अश्रुत जो बजता रहा था झंकार भर  
जीवन की वीणा में,  
सुनती थी मैं जिसे ।  
पहचाना मैंने, हाथ बढ़ाकर तुमने गहा ।  
चल दी मैं मुक्त, साथ ।’

प्रेम का उदात्त भाव उपस्थित करते हुए निराला ने ‘सम्राट अष्टम एडवर्ड’ के प्रति कविता में कहा है—

‘जो करे गंध-मधु का वर्जन  
वह नहीं भ्रमर;  
मानव मानव से नहीं भिन्न,  
निश्चय, हो श्वेत, कृष्ण अथवा,

वह नहीं क्लिन्न;  
भेद कर पंक  
निकलता कमल जो मानव का  
वह निष्कलंक,  
हो कोई सर’

निराला ने ‘सरोज स्मृति’ में अपनी पुत्री सरोज का जो चित्रण किया है, वह उदात्त तथा अलौकिक है ही, हिंदी साहित्य में अकेला भी है। पिता द्वारा पुत्री के तरुण लावण्य का यह वर्णन अत्यंत मोहक एवं पवित्र है। निराला की उदात्त भावना से ही पुत्री के शृंगार का वर्णन संभव हो सकता है। कवि पुत्री सरोज में दिवंगत प्रिया की मधुरिमा देखकर कहता है—

‘फूटा कैसा कंठ स्वर  
मां की मधुरिमा व्यंजन भर ।’

निराला की ‘राम की शक्ति पूजा’ में सीता के जिस मधुर छवि का वर्णन किया है, वह माधुर्य के साथ-ही-साथ सात्विकता से परिपूर्ण है—

‘नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण,  
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन ।’



वास्तव में निराला की प्रवृत्ति सौंदर्य चित्रण में वासनात्मक नहीं है। निराला की उदात्त सौंदर्य चेतना का प्रतीक ‘रूखी री यह डाल’ कविता की पार्वती है जो काम को विनष्ट करने वाले स्मर हर का वर्णन करना चाहती है—

‘हार गले पहना फूलों का,  
ऋतुपति सकल सुकृत-कूलों का,  
स्नेह, सरस भर देगा उर-सर,  
स्मर हर को वरेगी ।’

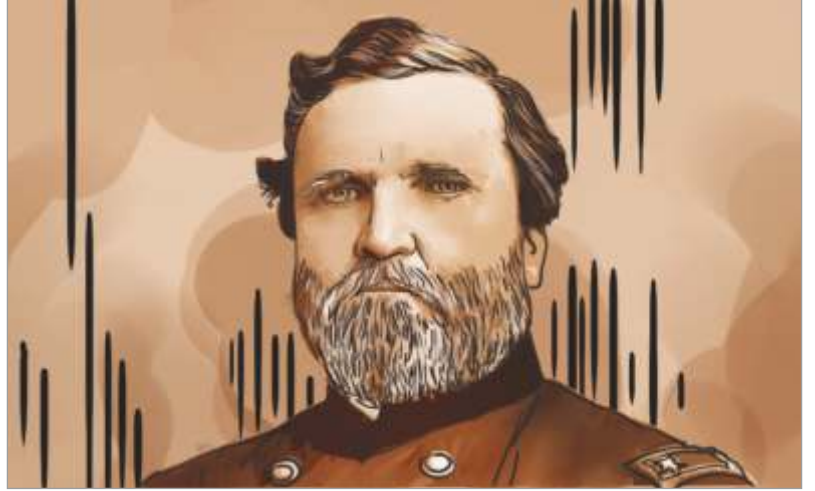
इस प्रकार निराला का सौंदर्य चित्रण सात्विकता तथा उदात्त भाव से परिपूर्ण है।





# जॉर्ज थॉमस भाड़े का लड़ाका

आयरलैंड के टिपेरी में सन् 1756 में पैदा हुआ जॉर्ज थॉमस एक भूमिहीन किसान का पुत्र था। बाल्यकाल में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई। निरक्षर व अनाथ होने के कारण उसे ब्रिटिश नौसेना में मजदूर के रूप में कार्य करना पड़ा। जब उसका जहाज मद्रास तट पर आ लगा, तब वह 25 वर्ष का था। उसने निश्चय किया कि अब जीवन के रोमांच का सामना करने का समय आ गया है। वह नौसैनिक जहाज से भाग निकला और विभिन्न स्वतंत्र सेनापतियों के लिए भाड़े के सैनिक के रूप में कार्य करने लगा। यह वह काल था जब भाड़े के सैनिकों की माँग देश में अत्यधिक थी।



हालाँकि जॉर्ज निरक्षर सैनिक था, लेकिन उसकी महत्वाकांक्षा बहुत ऊँची थी। वह स्वयं को शासक के रूप में देखना चाहता था और अपने नाम का सिक्का भी जारी करना चाहता था। क्या वह अपनी महत्वाकांक्षा को सच्चाई में बदल पाया? आइए देखते हैं कि वह अपना भाग्य बदल पाया या भाग्य ने उसके साथ ही मजाक कर दिया।

से कर लिया जाता था। इन ताकतों के ग्राहकों में अंग्रेज, मराठा, मुगल, भरतपुर, राजपुताना, दक्कन, पंजाब आदि सभी शामिल थे। इन भाड़े के सैनिकों ने 1757 के प्लासी के युद्ध से लेकर 1857 की क्रांति तक भारत के इतिहास में अनूठी भूमिका निभाई है और इसे रोचक बनाया है। उनमें से कुछ ने उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जिनमें से एक है जॉर्ज थॉमस। उसके बारे में जानना नितांत रोचक होगा।



ए.के. गांधी

जन्म : 1960 मेरठ।

शिक्षा : एम.ए., एल.एल.बी., ए.डी.सी., सी.आई.सी.।

संप्रति : वायुसेना से सेवानिवृत्त। स्वतंत्र इतिहासकार, लेखक व अनुवादक के रूप में कार्यरत।

प्रकाशन : '1857 क्रांति व क्रांतिधरा', 'प्रताप, शिवाजी और छत्रसाल', 'Dance to Freedom' व अन्य इतिहासकार के रूप में, 'निबंध लेखन की कला', 'Language Across the Curriculum' व अन्य लेखक के रूप में, व 'गोंड', 'रेजांग ला का युद्ध', 'ज्योतिपुंज' व अन्य अनुवादक के रूप में।

संपर्क : मोबाइल— 7500313951

ईमेल— akgandhi@yahoo.co.in

सन् 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद देश का राजनैतिक वातावरण अनेक प्रकार की अनिश्चितताओं से घिरा हुआ था। रह-रह कर युद्ध हो रहे थे जिनमें न केवल देशी ताकतें, बल्कि विदेशी ताकतें भी अपने वर्चस्व को बढ़ाने में व्यस्त थीं। इन सभी ताकतों को भाड़े के सैनिक बहुत भाते थे, क्योंकि उन्हें एक प्रकार से ठेके पर लिया जा सकता था और उनके लिए धन के अतिरिक्त और किसी चीज की आवश्यकता नहीं रहती थी, जैसे—प्रशिक्षण या गोला-बारूद। धन का प्रबंध भी युद्ध के बाद होने वाली लूट

जॉर्ज थॉमस ने अनेक युद्धों में अपने बुद्धि-कौशल व क्षमता को प्रदर्शित करते हुए प्रसिद्धि को प्राप्त कर लिया था। मद्रास आने के सात साल बाद सन् 1787 में वह अपने पिंडारी लड़ाकों के दल के साथ सरधना की बेगम समरू के साथ आ मिला।

जॉर्ज थॉमस की ताकत उसकी सामरिक नीति थी। युद्धक्षेत्र में वह इस प्रकार की समर-नीति का प्रयोग करता था कि शत्रु पक्ष को पता ही नहीं चल पाता था कि उसकी अगली चाल क्या होगी और जब

तक वे उसकी चाल को भाँपें, उनकी सेना को पर्याप्त हानि हो चुकी होती थी, जबकि जॉर्ज की अपनी हानि न के बराबर होती थी।

उसने बेगम समरू के लिए अनेक युद्ध जीते और इस प्रकार उसकी सेना में उन्नति प्राप्त करता गया। वह अपने सैनिकों में अत्यंत लोकप्रिय था, क्योंकि वह उनकी भलाई के काम करता था। ऐसा कहा जाता है कि उसके दिल में विधवा बेगम समरू के लिए भी कोमल भावनाएँ थीं, लेकिन यह दोषारोपण सही प्रतीत नहीं होता।

सन् 1790 में बेगम की सेना में एक फ्रांसीसी ला वेसो भी शामिल हुआ। वह उच्च कुल में पैदा हुआ था जिसका उसे बहुत घमंड था, जिसके कारण साथी सैनिक अधिकारियों और सैनिकों के साथ उसका आचरण अधिक अच्छा नहीं था। उसे लगता था कि उसके उच्च कुल के कारण उसे दूसरों की प्रशंसा मिलनी ही चाहिए और वह किसी को कुछ भी कह सकता था। उसकी भी दृष्टि बेगम पर थी और उसे लगता था कि जॉर्ज भी इसी फिराक में था। इस मनमुटाव के कारण बेगम ने जॉर्ज का स्थानांतरण टप्पल कर दिया जहाँ वह किलेदार के पद पर था।

इसके बाद भी ला वेसो जॉर्ज के विरुद्ध अफवाहें उड़ाता रहा कि वह निष्ठावान फ्रांसीसी सैनिकों को सेना से बाहर कर रहा था। ला वेसो की इन हरकतों के कारण वह अपने अधीन अधिकारियों और सैनिकों के बीच लोकप्रिय नहीं था। लेकिन उसके पक्ष में एक बिंदु था, वह यह कि बेगम स्वयं उसे पसंद करने लगी थी। उस विधवा के सूने मन में अब प्रेम तरंगें ठाठें मारने लगी थीं। उसके पति सोंब्रे का निधन 1778 में हो गया था। इसी कारण वह ला वेसो की मनमानी को सहमति देने लगी और स्थिति यहाँ तक आ पहुँची कि उसने जॉर्ज की पत्नी का निरादर तक कर दिया जो उस समय तक सरधना में ही थी।

इसके कारण जॉर्ज को खतरा महसूस हुआ और वह टप्पल से सेना लेकर आया और अपने परिवार को सुरक्षित निकालकर ले गया। टप्पल वापस पहुँचने के बाद उसने विद्रोह कर दिया जिसके कारण बेगम को उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने को मजबूर होना पड़ा। उसे घेरने के बाद भी बेगम ने उसकी सेवा को ध्यान में रखते हुए उसे अपने क्षेत्र से सुरक्षित निकल जाने की अनुमति दे दी।

इस पर, जॉर्ज थॉमस अपने सैनिकों के साथ मराठा सेनापति अप्पा खांडे राव होलकर के साथ जा मिला जो उस समय मेवात क्षेत्र का सरदार था। अनेक सैनिक अभियानों में प्राप्त प्रतिष्ठा के लिए प्रसिद्ध होने के कारण उसे मराठा सेना में एक बटालियन के सेनापति

का पद दिया गया। इस समय मराठा अपनी शक्ति व प्रभुत्व को बढ़ाने में लगे थे।

जॉर्ज ने मराठा सेनापति के रूप में अनेक सैनिक अभियानों का सफल नेतृत्व किया जो राजपूतों, हरियाणा व शेखावटी के शासकों के विरुद्ध थे। उसने मुगल क्षेत्र में भी अतिक्रमण किया। लगातार युद्ध लड़ना उसकी मजबूरी भी थी, क्योंकि उसे अपने सैनिकों को वेतन व सुविधाएँ देनी होती थीं।

इन अभियानों के कारण इस क्षेत्र में मराठा वर्चस्व की वृद्धि हुई, जिसके साथ उसे और अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उसकी सेवाओं के कारण उसे झज्जर का जागीरदार बना दिया गया।

इस समय मुगल शासक था शाह आलम द्वितीय। वह पहले ही एक अन्य भाड़े के सैनिक अब्दुल कादिर के हाथों अंधा हो चुका था और अपने बुरे समय से गुजर रहा था तथा इस समय वह मराठा शक्ति के अधीन था। लेकिन जॉर्ज द्वारा अतिक्रमण के लिए मराठाओं से सहायता लेने का कोई प्रश्न नहीं उठता था, क्योंकि जॉर्ज स्वयं भी मराठा सेनापति था।



ऐसे समय में शाह आलम ने बेगम समरू को एक गुप्त पत्र लिखकर सहायता माँगी। बेगम समरू ने ही शाह आलम की सहायता अब्दुल कादिर के विरुद्ध की थी जो उसे पुत्री के रूप में मानता था। वह तो पहले से ही जॉर्ज के विरुद्ध तैयार बैठी थी, क्योंकि उसने वर्तमान गुरुग्राम के निकट उसके क्षेत्र के दो गाँवों को हानि पहुँचाई थी। बेगम बदला लेने के लिए तुरंत तैयार हो गई और अपनी चार बटालियनों के साथ झज्जर की ओर कूच कर गई।

जब बेगम ने झज्जर से 13 मील दूर अपना शिविर लगाया तो उसके सैनिकों को लगा कि वह अभियान जॉर्ज के विरुद्ध था, वह बेगम के सैनिकों और अधिकारियों के बीच अभी भी लोकप्रिय था। बेगम भी एक चतुर सेनापति थी। अपने सैनिकों में बेचैनी देखकर वह तुरंत सरधना की ओर लौट पड़ी, लेकिन उसे हानि तो उठानी ही पड़ी। उसकी दो बटालियनों ने विद्रोह कर दिया जो उसे छोड़कर दिल्ली चली गई और बेगम के सौतेले पुत्र जफरयाब खान की अधीनता स्वीकार कर ली।

बेगम के लिए परिस्थिति इतनी खराब हो गई कि उसे विद्रोह की आशंका सताने लगी और उसने अपने प्रेमी ला वेसो के साथ भागने का निर्णय कर लिया। इस लेख में इस रोचक घटना के बारे में केवल इतना बताना उचित होगा कि भागते हुए प्रेमी जोड़े को पकड़ लिया गया जिसमें ला वेसो की मृत्यु हो गई और बेगम को लगभग आठ

महीने कैद में अमानवीय कष्टों में रहना पड़ा जिसके बाद ही वह दोबारा अपनी गद्दी को पा सकी। इस गद्दी को पाने में भी जॉर्ज ने अपनी शत्रुता भुलाते हुए बड़ी भूमिका निभाई।

इस बीच जॉर्ज स्वयं को एक योग्य शासक के रूप में स्थापित कर रहा था। उसने न केवल अपने क्षेत्र को मजबूत किया, बल्कि अपने लोगों की भलाई के कार्य भी किए। मराठा सेनापति के रूप में वह चार वर्ष तक रहा और इस काल में उसने 'जॉर्जगढ़' नामक किला बनाया जो अपभ्रंश होकर 'जहाजगढ़' के रूप में जाना जाता है।

**“ जॉर्ज ने स्वतंत्र राजा के रूप में सन् 1801 तक राज किया जब सिखों ने उसे पूरी तरह कुचल दिया। उसे अपना राज्य छोड़ ब्रिटिश राज्य में शरण लेनी पड़ी। ”**

इतिहास ने सन् 1797 में एक बार फिर करवट बदली जब अप्पा खांडे राव का निधन हो गया। जॉर्ज को प्रतीत हुआ कि एक स्वतंत्र शासक बनने की महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने का यह सही अवसर था ताकि वह अपने नाम के सिक्के जारी कर सके। साथ ही, उसने देखा कि नए सरदार से उसकी अधिक बन नहीं पाएगी। न केवल यह, महादजी सिंधिया के निधन के बाद, दौलत राव सिंधिया ने पहले होलकर के विरुद्ध अभियान चलाया और फिर अंग्रेजों के विरुद्ध। इस समय तक अंग्रेज एक बड़ी ताकत बनकर उभर चुके थे और इस समय वे महादजी सिंधिया द्वारा उत्तर भारत में रचित राजनैतिक तंत्र को नष्ट करने का मन बना चुके थे।

जब जॉर्ज ने मराठाओं के साथ अपना कोई भविष्य नहीं देखा तो उसने तुरंत ही सैनिक अभियान चलाकर रोहतक और हिसार को अपने अधिकार में ले लिया और स्वतंत्रता घोषित कर हांसी को अपनी राजधानी बना लिया। वह चाहता था कि उसे हांसी का राजा कहा जाए और उसे प्रिय था कि उसे 'टिपेरी से आया राजा' कहकर पुकारा जाए जो उसका जन्मस्थान था। उसने अपनी राजधानी में एक टकसाल का निर्माण करवाया और अपने व अपने राज्य के नाम पर मुद्रा को जारी करने लगा।

जॉर्ज का राज्य छोटा अवश्य था, लेकिन उसके सपने बड़े थे। वह मराठा क्षेत्र के विरुद्ध भी अभियान चलाना चाहता था और इस प्रयोजन के लिए उसने फुलकन मिस्ल को सहायता के लिए कहा था। जब वहाँ से कोई सकारात्मक उत्तर नहीं आया तो उसने जींद पर आक्रमण कर दिया और उसका घिराव कर दिया। सिखों के दबाव में उसे अपना घेरा उठाना पड़ा और इस टकराव से एक शांति संधि हुई, लेकिन इस क्षेत्र में शांति अधिक समय तक बनी न रह सकी।

सन् 1799 में उसे सिख दबाव का एक बार फिर सामना करना पड़ा और इसमें उसकी सेना का बड़ा भाग नष्ट हो गया। अभी भी उसमें हिम्मत बाकी थी। उसने 1800 में पटियाला पर हमला कर दिया, लेकिन सफलता उससे दूर ही रही।

जॉर्ज एक महत्वाकांक्षी लड़ाका था और इतिहास में अपने लिए जगह बनाना चाहता था। इसी प्रयास में उसने हांसी के असीगढ़ किले का पुनर्निर्माण किया। राज करने के छोटे से काल में भी वह लगातार युद्धों में व्यस्त रहा जिनके कारण उसका क्षेत्र लगातार फैलता-सिकुड़ता रहा। घग्गर नदी उसका राज्य सिख प्रभाव से अलग करती थी। अपने सर्वोच्च समय में उसका राज्य उत्तर में घग्गर से दक्षिण में रेवाड़ी और पटौदी तक फैला था और सुनियोजित प्रशासन के लिए चार परगनों में बँटा था।

उसका राज्य छोटा था, लेकिन उसकी सेना शक्तिशाली थी जिसके बल पर वह अपने से बड़ी शक्तियों तक से टकरा जाता था। उसकी सेना में 6000 पैदल सैनिक थे जो आठ बटालियनों में विभाजित थे। इनके अतिरिक्त, उसके पास सारी सुविधाओं सहित 50 तोपें और 1000 घुड़सवार थे। यह सेना उसके विभिन्न किलों की रक्षा में तैनात थी। उसकी एक बड़ी विशेषता थी कि वह अपने सैनिकों को पेंशन के रूप में भूमि देकर उन्हें वहीं बसने के लिए कहता था, जिसके कारण उस क्षेत्र की कृषि विकसित हुई ही, सेना को भी अतिरिक्त सैनिक आराम से मिल जाते थे, जिसका लाभ बाद में अंग्रेजों को भी हुआ।

अपने राज्य के आर्थिक विकास के लिए उसने औद्योगिक विकास पर भी ध्यान दिया। वह सभी प्रकार के कारीगरों को अपने क्षेत्र में बसने के लिए प्रेरित करता था।

उसने एक नाव यात्रा के दौरान अपने कार्यकलापों और संस्मरणों को विलियम फ्रेंकलिन को कह सुनाया जिसने इसे पुस्तक के रूप में लिखा और 1905 में इसे 'मिलिट्री मेमायर ऑफ जॉर्ज थॉमस' के नाम से प्रकाशित किया। उसने लेखक को सुनाया, 'मैंने सभी प्रकार के कामगार और कारीगरों को काम दिया। मैं अपनी तोपें स्वयं ढालता था और अपनी मस्कट, मैचलॉक (एक प्रकार की बंदूक), और उनका बारूद बनाना आरंभ किया। संक्षेप में, मैंने आक्रामक व रक्षात्मक युद्ध के लिए हर तरह से तैयारी की।'

उसने हिसार में जहाज कोठी व जहाज पुल का निर्माण किया। ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीय बोली में 'जॉर्ज' नाम अपभ्रंश होकर 'जहाज' नाम से जाना जाने लगा है।

जॉर्ज ने स्वतंत्र राजा के रूप में सन् 1801 तक राज किया, जब सिखों ने उसे पूरी तरह कुचल दिया। उसे अपना राज्य छोड़ ब्रिटिश राज्य में शरण लेनी पड़ी। इसी सिलसिले में वह कलकत्ता नाव से जा रहा था तब वह बीमार पड़ गया। इसी स्थिति में उसने अपनी आत्मकथा विलियम फ्रेंकलिन को कह सुनाई। शायद वह अपनी कहानी कह सुनाने के लिए ही अब तक जीवित था। उसकी मृत्यु उसी नाव में हो गई जब वह बरहामपुर में था। उसकी कब्र भी यहीं स्थित है। इसी के साथ एक ऐतिहासिक व्यक्ति की रोचक गाथा पर भी पूर्ण विश्राम लग गया।





# अच्छे बाल साहित्य की कसौटी और स्वनात्मक भूमिका

आज हिंदी बाल साहित्य का कारवाँ अपनी विजयिनी पताकाएँ फहराते हुए, तेजी से आगे बढ़ता नजर आता है, तो बरबस 'नंदन' पत्रिका के यशस्वी संपादक और बाल साहित्यकार जयप्रकाश भारती जी की बात याद आती है कि 21वीं सदी बालक और बाल साहित्य की सदी होगी और भारती जी के इस विलक्षण उम्मीदों भरे सपने के साथ



## प्रकाश मनु

**जन्म** : 12 मई, 1950, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश।

**शिक्षा** : भौतिक विज्ञान में एम.एससी., हिंदी साहित्य में एम.ए.।

**संप्रति** : लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। अब स्वतंत्र लेखन। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

**प्रकाशन** : बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। इसके अलावा उपन्यास, कविता संग्रह, आत्मकथा, जीवनी प्रकाशित। कई महत्वपूर्ण संपादित पुस्तकें और संचयन भी। कई पुस्तकों का पंजाबी, सिंधी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ समेत अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

**पुरस्कार** : साहित्य अकादेमी का पहला बाल साहित्य पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'बाल साहित्य भारती' पुरस्कार और हिंदी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित।

**संपर्क** : मोबाइल— 9810602327

ईमेल— prakashmanu333@gmail.com



ही जैसे एकाएक बाल साहित्य की समूची विकास-यात्रा मेरी आँखों के आगे कौंध जाती है।

आज भी याद है, 31 जनवरी, 1986 को मैं लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन विभाग में शामिल हुआ था और कोई 25 बरसों तक 'नंदन' के जरिए बच्चों और बाल साहित्य से बहुत करीबी रिश्ता जुड़ा रहा। वहाँ रहकर बच्चों के लिए लिखते और सोचते-विचारते हुए, पता नहीं कब मेरा पूरा जीवन ही बदलता चला गया। यह एक तरह से 'पुनर्नवा' होना था। मैं भीतर-बाहर से कुछ और होता चला गया, और पहली दफा मैंने समय के साथ निरंतर बढ़ती हुई बाल साहित्य की उस महत्ता का अनुभव किया, जिसके लिए कुछ आगे चलकर मैंने अपना समूचा जीवन ही अर्पित कर दिया।

यहाँ तक कि हिंदी बाल साहित्य का पहला बृहत् इतिहास, जिसे लिखने में मैंने अपने जीवन के कोई 20-22 वर्ष लगा दिए

और यह काम किसी तपस्या से कम न था, कभी न लिखा जाता, अगर मैं 'नंदन' पत्रिका और उसके यशस्वी संपादक जयप्रकाश भारती जी से इतने करीबी तौर से न जुड़ा होता। खासकर भारती जी का संग-साथ तो अनमोल था। अंदर से उद्बुद्ध करता हुआ-सा। वे एक स्वप्नदर्शी संपादक थे, और उनकी आँखों में हर वक्त बच्चों और बाल साहित्य के लिए कुछ करने का सपना झिलमिलाता रहता।

हिंदी बाल साहित्य का इतिहास लिखने के लिए पहली बार उन्होंने ही मेरे हृदय के तारों को झनझनाया था। वे अकसर कहते, "चंद्रप्रकाश जी, जिस साहित्य में बड़े संदर्भ ग्रंथ न हों, उसे कभी सम्मान नहीं मिलता। हिंदी बाल साहित्य की यह बहुत बड़ी कमी है, जिसे कोई महसूस नहीं करता। उसके लिए कोई कुछ करना भी नहीं चाहता। कविता, कहानी लिखना आसान है, इसलिए हर कोई बस यही करना चाहता है। पर संदर्भ

ग्रंथ तैयार करना बड़ी मेहनत का काम है, जिसके लिए पूरा जीवन समर्पित करना पड़ता है और इसके बदले में कभी कुछ मिलता भी नहीं। इसलिए कोई इस ओर नहीं आना चाहता।”

साथ ही, बड़े दुख के साथ उन्होंने यह बात भी दोहराई कि “चंद्रप्रकाश जी, अभी तक हिंदी बाल साहित्य का इतिहास तक नहीं लिखा गया। देखा जाए तो यह हिंदी बाल साहित्य और साहित्यकारों के लिए बड़ी लज्जा की बात है।”



सुनकर जैसे एक चुनौती मेरे भीतर पैदा हुई थी। मैंने अपने आप से कहा, “जो काम कोई नहीं करना चाहता, वह तुम क्यों नहीं करते प्रकाश मनु? अगर इससे बाल साहित्य समृद्ध होता है, तो चाहे जो भी मुश्किलें आएँ, तुम्हें इसे पूरा करना ही चाहिए।” और तभी मैंने खुद को यह निश्चय-सा करते देखा, “हाँ, मैं करूँगा, चाहे जो भी मुश्किलें आएँ, मैं इसे करके दिखाऊँगा।”

फिर सन् 2003 में मेधा बुक्स से मेरा लिखा हुआ ‘हिंदी बाल कविता का इतिहास’ आया तो डॉ. श्रीप्रसाद, शेरजंग गर्ग, दामोदर अग्रवाल, जयप्रकाश भारती और देवसरे जी समेत बड़े-से-बड़े साहित्यकारों ने किस तरह आनंदविभोर होकर इसकी चर्चा की और कितना प्यार, कितना आदर मुझ पर लुटाया, वह भूलता नहीं है। शायद यही कारण है कि ‘हिंदी बाल कविता का इतिहास’ आने के साथ ही, मैंने जैसे भीतर-ही-भीतर तय कर लिया था कि अब चाहे जो भी हो, हिंदी बाल साहित्य का इतिहास लिखना ही है। यह काम कितना गुरुरत है, इसका मुझे अहसास था। बल्कि सच पूछिए, तो यह सिर पर पहाड़ उठा लेना था।

भारती जी अब तक ‘नंदन’ से सेवामुक्त हो चुके थे। कुछ समय बाद ही वे असमय गुजर गए। ये बेहद दुख भरे क्षण थे। मन म्लान था, पर जो धुन भारती जी ने मन में पैदा की थी, वह कम नहीं हुई। बीच राह में आने वाले कष्टों और मुश्किलों की कमी न थी। लेकिन

आखिर सन् 2018 में प्रभात प्रकाशन से मेरा लिखा हुआ ‘हिंदी बाल साहित्य का इतिहास’ आया। हिंदी बाल साहित्य का पहला बृहत् इतिहास, जिसे लिखने की तैयारी मेरे भीतर मोटे तौर से सन् 1995 से चल रही थी।

इसी बीच मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि हिंदी बाल साहित्य के जिन बड़े और सिद्धहस्त लेखकों ने बच्चों के लिए लिखने में अपना समूचा जीवन अर्पित कर दिया, उनकी शिखरयत और कामों के बारे में कोई विशेष जानकारी लोगों को नहीं है। बच्चे भी अपने लिए लिखने वाले बड़े लेखकों के बारे में कुछ न जानते थे। यह स्थिति दुखद थी। लिहाजा ‘हिंदी बाल साहित्य के शिखर व्यक्तित्व’ और ‘हिंदी बाल साहित्य के निर्माता’ सरीखे चर्चित ग्रंथों में मैंने उन पर लिखा और यह सिलसिला अब भी थमा नहीं है। शायद मेरे जीवन की अंतिम साँसों तक चलेगा।

कुछ अरसे से बाल साहित्य की संगोष्ठियों और समारोहों में मैं ज्यादा नहीं जा पाता। पर जिन दिनों जाता था और बच्चों के बीच कहानी, कविताएँ सुनाने और उनसे बतियाने का अवसर मिलता था, तब के कुछ अनुभव हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं पाया। ऐसा ही एक छोटा-सा प्रसंग है। मैंने बच्चों को अपनी पसंद की कुछ कहानियाँ सुनाई थीं और बच्चों ने उनका खूब आनंद लिया था। बाद में उनसे बातें हो रही थीं, तो बहुत बच्चों ने उन कहानियों और उनके पात्रों के बारे में बड़े दिलचस्प सवाल पूछे। खासे कौतुक और जिज्ञासा भरे सवाल। उनका जवाब देना बड़ा रोमांचक था।



तभी एक छोटा-सा बच्चा खड़ा हुआ और उसने सवाल पूछा। पर यह सवाल कहानी के बारे में नहीं था और कुछ ऐसा था कि एक क्षण के लिए तो मैं कुछ अचकचा ही गया। उसने पूछा, “मनु जी, बाल साहित्य से क्या फायदा? क्यों हम बाल कविता, कहानियाँ पढ़ें?”

अब इस सवाल का क्या जवाब हो सकता है? थोड़ी देर तो मुझे कुछ सूझा ही नहीं। फिर एकाएक बच्चे के विकास में बाल साहित्य

की व्यापक रचनात्मक भूमिका की ओर मेरा ध्यान गया, तो मैंने उसे समझाया कि दुनिया की सारी चीजें केवल फायदे के लिए नहीं होतीं। और अगर फायदे के लिए होतीं, तो यह दुनिया बड़ी नीरस और असुंदर होती। यों अगर केवल फायदा ही देखें, तो भला भगतसिंह क्यों देश की आजादी की खातिर फाँसी के तख्ते पर झूल गए?

“ इस दुनिया में बहुत कुछ है, जो केवल फायदे के लिए नहीं है। इनमें बहुत सी चीजें हम अपने आनंद के लिए करते हैं। बहुत सी सच्चाई के रास्ते पर चलने की जिद के लिए, या लोगों की भलाई के लिए, अपनी आन-बान के लिए, देश की शान के लिए। तो बाल साहित्य को भी फायदे के तराजू पर नहीं तोला जा सकता। बच्चों को अपने लिए लिखी गई पुस्तकों से आनंद मिलता है, तो यह भी कोई छोटी बात नहीं है। यों इसके साथ ही कई बार उन्हें अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं और उलझनों का हल मिल जाता है, आगे की राह सूझ जाती है। ”

चंद्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों से लड़ते हुए अपनी जान दे दी। और अगर फायदा ही देखें तो कोई माँ अपनी संतान के लिए इतना कष्ट, इतनी तकलीफें क्यों झेलती है? क्या फायदे के लिए?

इस दुनिया में बहुत कुछ है, जो केवल फायदे के लिए नहीं है। इनमें बहुत सी चीजें हम अपने आनंद के लिए करते हैं। बहुत सी सच्चाई के रास्ते पर चलने की जिद के लिए, या लोगों की भलाई के लिए, अपनी आन-बान के लिए, देश की शान के लिए। तो बाल साहित्य को भी फायदे के तराजू पर नहीं तोला जा सकता। बच्चों को अपने लिए लिखी गई पुस्तकों से आनंद मिलता है, तो यह भी कोई छोटी बात नहीं है। यों इसके साथ ही कई बार उन्हें अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं और उलझनों का हल मिल जाता है, आगे की राह सूझ जाती है।

फिर अगर फायदा ही देखना है तो बाल साहित्य बच्चे को एक अच्छा और संवेदनशील इनसान बनाता है। लिहाजा बड़ा होकर अगर वह डॉक्टर बनेगा तो ऐसा संवेदनशील डॉक्टर बनेगा जो किसी गरीब और असहाय का दर्द भी समझ पाएगा। अगर इंजीनियर बना तो अच्छा इंजीनियर बनेगा जो थोड़े से लालच के लिए घटिया सामग्री का इस्तेमाल नहीं करेगा। उसके बनाए स्कूल हों, अस्पताल या पुल, वे बात की बात में भरभराकर नहीं गिर जाएँगे। देश में अगर ऐसे इनसान होंगे, तो देश स्वाभिमान से तनकर खड़ा होगा और तरक्की की राह पर आगे बढ़ेगा। बाल साहित्य से अगर यह फायदा है तो मैं समझता हूँ, कोई छोटा फायदा तो यह नहीं है।

पर यह दीगर बात है कि बाल साहित्य से इतना कुछ होता है, हो सकता है। पहली बात तो फिर भी वही है कि बाल साहित्य मन को आनंदित करता है। बच्चे आनंद के लिए उसे पढ़ते हैं और पढ़कर खुशी से उनके चेहरे चमकने लगते हैं।

समूचे बाल साहित्य की यह कसौटी है कि अगर वह बच्चे को आनंदित नहीं करता, तो वह बाल साहित्य नहीं है। बाल साहित्य बहुत कुछ करता है, पर सबसे पहले तो वह बच्चे को आनंदित करता है और अंत में आनंद की यह अनुभूति, भीतर की गहरी रचनात्मक तृप्ति के रूप में बच्चे के मन में रहती है। वही बार-बार उसे बाल साहित्य की ओर खींचकर लाती है। एक अच्छा बालगीत बार-बार बच्चे के होठों पर नाचता, फुरफुराता है। एक अच्छी कहानी बार-बार उसकी स्मृतियों में आकर सुकून देती है। और हर बार एक अच्छे दोस्त की तरह गरमजोशी से उसका हाथ पकड़कर अपने साथ एक अनोखी यात्रा पर ले जाती है और एक अच्छे उपन्यास से उसकी दोस्ती होती है तो वह जिंदगी भर चलती है। इसलिए कि उपन्यास केवल शब्दों से रची गई कृति नहीं है, वह अपने आप में एक पूरी साँस लेती और धड़कती हुई दुनिया है। बच्चा उसे पढ़ता है तो उसके भीतर-बाहर जो अनवरत यात्राएँ होती हैं, वे जिंदगी भर चलती हैं। कई बार तो सुख-दुख के क्षणों में एक गहरा सुकून उससे मिलता है।

बाल साहित्य की कोई पचास बरस लंबी सृजन यात्रा के बाद मेरा यह यकीन और पुख्ता हुआ है कि अच्छा बाल साहित्य वह होता है, जो बच्चे का दोस्त साहित्य हो। वह सुख-दुख या मुश्किलों में हमेशा बच्चे के साथ खड़ा नजर आता है और किसी अंतरंग दोस्त की



तरह उसकी उँगली पकड़कर साथ ले चलता है। वह बच्चे को कभी भटकने नहीं देता। बड़े से बड़े दुख और उदासी में वह सिर्फ हिम्मत ही नहीं बँधाता, बल्कि आगे की राह भी दिखाता है।

सच पूछिए तो बाल साहित्य की यह ऐसी रचनात्मक भूमिका है, जो कल भी थी, आज भी है, और आने वाले कल में भी रहेगी। कोई इसे नकार नहीं सकता। शायद यही कारण है कि आज बाल साहित्य का कारवाँ इतनी तेजी से आगे बढ़ता नजर आता है कि बड़े आलोचक और चिंतक भी उसकी महत्ता को स्वीकार कर रहे हैं। 21वीं सदी का यह सबसे नायाब तोहफा है, जिसका हमें खुले दिल से स्वागत करना चाहिए।





# भारतीय रेल की मालगाड़ियों की रोचक जानकारी

भारतीय रेलवे में प्रतिदिन 10,000 से अधिक मालगाड़ियाँ चलती हैं। पिछले वर्ष यह आँकड़ा 9,164 मालगाड़ियाँ प्रतिदिन था। इन मालगाड़ियों से प्रतिदिन लगभग 3.5 मिलियन टन विभिन्न प्रकार के माल की दुलाई होती है। भारतीय रेलवे में कुल 3,20,000 वैगन हैं। रेलवे में चलने वाली कुल रेलगाड़ियों में से मालगाड़ियाँ लगभग 70 प्रतिशत और यात्री रेलगाड़ियाँ लगभग 30 प्रतिशत राजस्व अर्जन करती हैं। ऊपर से यात्री रेलगाड़ियों को चलाने, उनकी मरम्मत तथा साफ-सफाई में बहुत ज्यादा खर्च करना पड़ता है, जिससे यात्री गाड़ियों से प्राप्त होने वाली आय और कम हो जाती है, जबकि मालगाड़ियों से प्राप्त आय ज्यादा होती है



**विमलेश चंद्र**

**शिक्षा :** इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग एवं रेल ट्रांसपोर्ट तथा मैनेजमेंट में डिप्लोमा।

**प्रकाशन :** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग, गणित, साहित्य, व्यंग्य तथा रेल विषय पर 404 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। 'भारतीय रेल : एक परिचय' पुस्तक प्रकाशित।

**संप्रति :** सहायक कारखाना प्रबंधक, भावनगर, गुजरात। विभिन्न विषयों पर लेखन एवं पाठन।

**पुरस्कार :** रेलवे के क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी तथा लेखन क्षेत्र में कई पुरस्कार।

**संपर्क :** मोबाइल : 9574011888

**ई-मेल :** vimleshchandra.awmbvp@gmail.com

तथा इनकी मरम्मत पर हुआ खर्च, यात्री गाड़ियों की तुलना में काफी कम होता है। एक बार मालगाड़ी की मरम्मत होने पर यह एक महीने या 75,000 किमी. तक चलती रहती है। इसकी साफ-सफाई तथा संरक्षा एवं सुरक्षा कार्य भी यात्री गाड़ियों की तुलना में कम होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय रेल यात्री प्रधान तथा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने वाली रेलवे है। इसलिए कम मुनाफे के बावजूद यात्री गाड़ी को प्राथमिकता दी जाती है। यात्री रेलगाड़ियों का इतिहास तथा इनकी सामान्य जानकारी रोचकता से भरी हुई है, किंतु मालगाड़ियों की रोचकता भी कम नहीं है। इसमें भी अनेक रोचक तथ्य हैं। इन्हीं रोचक तथ्यों की जानकारी इस लेख में दी जा रही है।

## मालगाड़ियों के प्रकार

मालगाड़ियाँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं। पहली, व्यावसायिक या वाणिज्यिक मालगाड़ियाँ तथा दूसरी, विभागीय

मालगाड़ियाँ। व्यावसायिक या वाणिज्यिक मालगाड़ियाँ वे मालगाड़ियाँ होती हैं, जिसमें कोई भी व्यक्ति या संस्था अपना सामान बुक करा कर कहीं भी भेज सकता है, जबकि विभागीय मालगाड़ियों का उपयोग रेलवे के अपने सामानों को लाने-ले जाने के लिए किया जाता है। व्यावसायिक मालगाड़ियों में थ्रो गुड्स ट्रेन, लॉन्ग डिस्टेन्स गुड्स ट्रेन, फ्राइट चीफ, एक्सप्रेस गुड्स, जम्बो ट्रेन, शेरपा ट्रेन, आर्डिनरी ट्रेन, लिंक गुड्स ट्रेन, क्रेन ट्रेन, पिकअप ट्रेन, लॉन्ग हॉल गुड्स ट्रेन इत्यादि शामिल होती हैं। जबकि विभागीय मालगाड़ियों में रेलवे स्लीपर ढोने वाली स्लीपर स्पेशल ट्रेन, रेल लाइन पर पत्थर डालने वाली रेलगाड़ियाँ, जिन्हें 'बैलास्ट ट्रेन' या 'मटेरियल ट्रेन' कहते हैं। दुर्घटना के समय काम आने वाली ब्रेक डाउन ट्रेन तथा अन्य मालगाड़ियों में पानी ढोने वाली वाटर टैंक ट्रेन, ओडीसी ट्रेन, मिलिटरी ट्रेन इत्यादि शामिल हैं।

## विशेष प्रकार की मालगाड़ियाँ

कोयला खदानों में हूपर वैगनों वाली मालगाड़ियों को 'मेरी गो राउंड' (MGR) ट्रेन कहते हैं। बिना रुके चलने वाली तथा दो मालगाड़ियों को एक साथ जोड़कर चलने वाली (116 वैगन) को 'नॉन-स्टॉप गुड्स' या 'लॉन्ग हॉल गुड्स ट्रेन' कहते हैं। कुछ जगहों पर काट्रेक्ट के आधार पर मिनी रैक वाली मालगाड़ियाँ भी चलती हैं। उन्हें सामान्यतः हाफ रैक या मिनी रैक गुड्स ट्रेन कहते हैं। जब दो हाफ रैक को पास में स्थित अलग-अलग स्टेशनों से लोडिंग या अनलोडिंग



किया जाता है तथा उन्हें पुनः एक साथ जोड़कर चलाया जाता है तब उसे 'टू प्वाइंट रैक' कहा जाता है। पार्सल सामानों की दुलाई के लिए पार्सल ट्रेन भी चलती है, जिसमें पार्सल वॉन लगा होता है। ज्यादा क्षमता वाली पार्सल वॉन को 'ग्रीन वोगी' कहते हैं। इसमें सामान्यतः फल तथा सब्जियों की दुलाई होती है। यात्रीगाड़ी में भी एक या दो पार्सल वॉन लगाए जाते हैं। इसे 'ब्ल्यू पार्सल वॉन' कहते हैं। कुछ खंडों पर रेफ्रीजरेटर युक्त पार्सल वॉन भी चलाया जाता है, जिसमें प्रायः मांस तथा फल, सब्जी ले जाए जाते हैं। जब मालगाड़ियों को लगातार किसी निर्धारित स्टेशनों के बीच नियमित रूप से चलाया जाता है, तो उस रैक को 'क्लोज सर्किट रैक' (30 दिन तक मान्य यात्रा) कहा जाता है तथा जिस मालगाड़ी का यात्रा मार्ग बदलता रहता है, उसे 'प्रीमियम रैक' (15 दिन तक मान्य यात्रा) कहा जाता है तथा जो रैक केवल एक ट्रिप के लिए चलाया जाता है, उसे 'इंड टू इंड रैक' कहते हैं। कुछ रेलवे में 'तेज श्री पार्सल सेवा' नामक पार्सल रेलगाड़ी चलाई जाती है। अनेक मालगाड़ियों की शुरुआत का कोई निर्धारण नहीं होता है तथा वे माँग के अनुसार चलाई जाती हैं, जबकि कुछ मालगाड़ियों को उनके बनाए गए समय पर या प्रिंशेड्यूल या

टाइम टेबल सर्विसेज के आधार पर चलाया जाता है। इन रेलगाड़ियों को 'लिंग या क्रेकटेन, क्विक ट्राजिट सर्विस' कहा जाता है।

## मालगाड़ियों का नामकरण

एक पुरानी कहावत है कि नाम में क्या रखा है? लेकिन आज के जमाने में नाम में बहुत कुछ रखा है। एक तरह से कोई भी नाम किसी का अपना खुद का पहचान होता है। तो ठीक यही बात रेलगाड़ियों पर भी लागू है। यदि यात्रीगाड़ी जैसी बात होती तो कोई भी उचित नाम रख सकते हैं। फिर वह नाम प्रचलित हो जाता। लेकिन कुछ मालगाड़ियों को छोड़कर किसी का कोई नियत समय तो है नहीं। इसलिए इनका कोई नियत नाम भी नहीं है, लेकिन नाम तो होना जरूरी है। नहीं तो फिर इनकी पहचान कैसे होगी? मालगाड़ियों का नामकरण बहुत ही रोचक होता है। जैसे कि 26 अंग्रेजी अक्षरों में से J तथा U अक्षर को छोड़कर बाकी 24 अक्षरों को 24 घंटों में बाँट दिया गया है। घंटों के हिसाब से प्रथम घंटे के लिए A तथा अंतिम 24 घंटे के लिए Z अक्षर का उपयोग किया जाता है। जिस निर्धारित समय पर गाड़ी जाने वाली होती है, उसके मिनट को गाड़ी के नाम के बाद उसके नंबर के रूप में दर्शाया जाता है। कुछ मालगाड़ियों के विशेष नाम भी दिए जाते हैं, जैसे—ग्रीनएरो,

ब्ल्यूफ्रेम, रेडस्टार, ब्लैक गोल्ड, ग्रीन बुलेट, शालीमार स्पेशल, साल्ट कोर्ट्स, अहमदाबाद एरो इत्यादि। इसी प्रकार गाड़ी का पहला दो तीन अक्षर गाड़ी के प्रकार के हिसाब से रख देते हैं। बाद में और अक्षर जोड़ देते हैं। जैसे कि कोई POH वाली मालगाड़ी साबरमती से बनकर बिलासपुर जाती है तो उसका नाम होगा, EIS/POH बिलासपुर, मतलब E-इम्पटी, I-इंटेंसिव एक्जाम, S-साबरमती, मतलब यह मालगाड़ी खाली है जो साबरमती में इंटेंसिव एक्जाम होकर POH के लिए बिलासपुर जा रही है। कुछ रेलवे में जहाँ मालगाड़ी जाने वाली होती है, उस स्टेशन का कोड और उसमें जो सामान भरा गया है, दोनों के नाम को जोड़कर मालगाड़ी का नाम दे दिया जाता है। जैसे कि कोई मालगाड़ी खाद (फर्टिलाइजर) भर कर नई दिल्ली जा रही है तो उसका नाम होगा NDLS (F/G) कुछ रेलवे में वैगन के प्रकार और वह लोडेड (L) है या खाली (E) है। इन दोनों के नाम को जोड़कर मालगाड़ी का नाम दे दिया जाता है, जैसे—BCNE। इस तरह इनके नामकरण के कई सिस्टम प्रचलित हैं। कुछ मालगाड़ियों की समय सारणी दी हुई है। वे अपने निर्धारित समय पर निर्धारित स्टेशन से चलती हैं और अपने निर्धारित स्टेशन

पर निर्धारित समय पर पहुँच भी जाती हैं। कुछ तो निर्धारित समय से पहले ही पहुँच जाती हैं। इस तरह की कुछ मालगाड़ियों की शुरुआत 20 साल पहले हुई थी।

### पार्सल सेवा के मालभाड़ा का मापन स्केल

पार्सल सेवाओं में राजधानी पार्सल सेवा को स्केल-आर, प्रीमियम पार्सल सेवा को स्केल-पी, स्टैंडर्ड पार्सल सेवा को स्केल-एस तथा इकोनॉमी पार्सल सेवा को 'स्केल-ई' कहा जाता है।

### मालगाड़ियों की गति

मालगाड़ियों की गति उनके लोड, उनमें लगे इंजनों की संख्या तथा इंजनों की क्षमता एवं रेल लाइनों की संरचना पर निर्भर करती है। फिलहाल एक समतल रेल लाइन पर 4700 टन लोड वाली मालगाड़ी में डब्ल्यूडीजी-2 इंजन की गति 68 किमी. प्रति घंटा, डब्ल्यूडीजी-4 इंजन की गति 82 किमी. प्रति घंटा, डब्ल्यूडीजी-5 इंजन की गति 80 किमी. प्रति घंटा, डब्ल्यूडीजी-7 इंजन की गति 92 किमी. प्रति घंटा तथा डब्ल्यूडीजी-9 रेल इंजन से 100 किमी. प्रति घंटा की अधिकतम गति प्राप्त होती है। मेन लाइनों पर मालगाड़ियों की गति सामान्यतः 75 किमी. प्रति घंटा तथा औसत गति 40-45 किमी. प्रति घंटा होती है, जिसे अब बढ़ाकर 55-60 किमी. प्रति घंटा किया जा रहा है।



### मालडिब्बों (वैगन) के प्रकार

मालडिब्बे अनेक प्रकार के होते हैं, जिनमें मुख्यतः –

- (1) **बॉक्स एन** : कोयला, लौह अयस्क इत्यादि की ढुलाई हेतु,
- (2) **बीसीएन/ए** : ढके हुए या कबर्ड वैगन-खाद्यान्न, सीमेंट इत्यादि की ढुलाई हेतु,

- (3) **बॉक्स वैगन** : कोयला और अन्य थोक वस्तुएँ ढोने हेतु,
- (4) **बीटीपीएन** : पेट्रोलियम उत्पादों की ढुलाई हेतु,
- (5) **बीओबीएक्स/बीओबीएस** : गिट्टी, अयस्क ढुलाई हेतु,
- (6) **बीएलसीए/बीएलसीबी** : कंटेनर सपाट वैगन-कंटेनर ढुलाई हेतु,
- (7) **बीएफकेएन/बीएफकेई** : कंटेनर सपाट वैगन,
- (8) **बीओवाई-खुला बोगी माल डिब्बा** : लौह अयस्क ढुलाई हेतु,
- (9) **बॉक्सएनएचएल** : 100 किमी. प्रति घंटा की रफ्तार से चलने वाला उच्च एक्सल लोड वाला खुला माल डिब्बा-कोयला लदान हेतु,
- (10) **बीसीएनएचएस** : उच्च गति की ढकी हुई बोगी वाला वैगन,
- (11) **बॉक्सएनसीआर** : जंगरोधी खुला माल डिब्बा,
- (12) **बोस्ट/एचएस** : इस्पात उत्पादों की ढुलाई हेतु,
- (13) **बीएफएनएस** : उच्चगति वाली बोगी सपाट एअर ब्रेक वैगन,
- (14) **बॉबवाईएन/एचएस** : उच्च गति वाली बोगी होपर वैगन,
- (15) **बीसीसीएनआर** : ऑटोमोबाइल कारों के परिवहन हेतु ढका माल डिब्बा उपयोग होता है।

### लॉन्ग हॉल नॉन स्टॉप गुड्स ट्रेन

भारतीय रेल पर सर्वप्रथम 07 अगस्त, 2010 को लखनऊ और मुगलसराय के बीच 108 वैगनों के साथ मालगाड़ी का परीक्षण किया गया था, जिसमें दो मालगाड़ियों को एक साथ में जोड़ा गया था।

इसके बाद 22 अप्रैल, 2011 को पटना में इस प्रकार की मालगाड़ी चलाई गई थी। पश्चिम रेलवे में 22 अक्टूबर, 2011 को सर्वप्रथम अहमदाबाद और गांधीधाम के बीच दो मालगाड़ियों को जोड़कर 120 वैगनों वाली इस प्रकार की मालगाड़ी का परीक्षण किया गया था। इस परीक्षण के बाद पश्चिम रेलवे में 11 मई, 2011 को मुद्रा पोर्ट से भिलडी तक दो मालगाड़ियों को एक साथ जोड़कर इसे 'पायथन ट्रेन' नाम से चलाया गया था। इसमें 90 कंटेनर वाले वैगन लगे थे। यह 'पायथन' नाम एक लंबे शरीर वाले साँप के नाम पर रखा गया है। 22 अप्रैल, 2012 को धनबाद मंडल में बरवाडीह, गोमोह, आसनसोल से इस प्रकार की मालगाड़ी चलाई गई। बंगलौर और धरमावरम के बीच भी इस

प्रकार की मालगाड़ियाँ चलाई गई थीं। अब भारतीय रेल के कई और खंडों पर भी इस प्रकार की रेलगाड़ी चलाई गई हैं। इस प्रकार की मालगाड़ी को सामान्यतः 'नॉन-स्टॉप लॉन्ग हॉल गुड्स ट्रेन' कहते हैं। तुगलकाबाद से मुंबई के बीच इस प्रकार की मालगाड़ी नियमित समय पर चलाई जा रही है। इस प्रकार की मालगाड़ियों में बीसीएनए रैक तथा कंटेनर रैक वाली मालगाड़ियाँ शामिल हैं।

## जम्बो एवं सुपर जम्बो मालगाड़ी

जो मालगाड़ी 3,500-3,750 टन भार वाली होती है, उसे 'जम्बो रैक' तथा जिस कवर्ड वैगन वाली मालगाड़ी में 4,500-4,750 टन लोड होता है, उसे 'सुपर जम्बो रैक मालगाड़ी' कहते हैं।

## इंटर मॉडल ट्रांसपोर्ट

भारत में वाबाश किलोस्कर रोडरोलर रेलगाड़ी कोंकण रेलवे या जेएनपीटी पोर्ट से नागपुर के बीच चलाई जाती है। इसी प्रकार कोंकण रेलवे द्वारा मुंबई (कोलाड) से गोवा (वरना) के बीच रो-रो (Ro-Ro) अर्थात् रोल ऑन-रोल ऑफ सेवा 26 जनवरी, 1999 से चलाई जा रही है। इसके अतिरिक्त कोंकण रेलवे में मंगलौर (सूरतखल) से कोलाड (मुंबई) के बीच यह सेवा उपलब्ध है। इस सेवा के अंतर्गत लोडेड ट्रकों को प्लैट वैगन वाली मालगाड़ी पर रखा जाता है तथा यात्रा पूरी होने पर इन ट्रकों को पुनः उतार दिया जाता है। इससे ट्रकों के यात्रा समय तथा ईंधन लागत में काफी कमी आती है।

## अंतरराष्ट्रीय मालगाड़ी

भारत और पाकिस्तान के बीच मालगाड़ी सेवा अटारी से होते हुए लाहौर तक जाती थी। उसी प्रकार पाकिस्तान की मालगाड़ी भारत तक आती थी। सामान को उतारने के बाद इन मालगाड़ियों को यथा शीघ्र वापस भेज दिया जाता था। भारत

और बांग्लादेश के बीच मालगाड़ी सेवा गेडे-दर्शना तथा पेट्रोपोल-बेनापोल मार्ग से तथा सिंहबाद-रोहनपुर रेलमार्ग से नियमित रूप से चलती है। भारत और नेपाल के बीच मालगाड़ी रेल सेवा बीरगंज और रक्सौल रेलमार्ग से होकर नियमित रूप से चलती है।

## मालगाड़ियों की योजनाएँ

'निजी मालभाड़ा टर्मिनल' (पी.एफ.टी.) नामक यह योजना 31 मई, 2010 को शुरू की गई थी। इसमें कुशल और किफायती लॉजिस्टिक सेवाएँ मुहैया कराने के लिए निजी निवेश के साथ मालभाड़ा टर्मिनलों के नेटवर्क का तेजी से विकास कार्य शुरू किया जाना शामिल है। समर्पित मालगाड़ी गलियारा अर्थात् डेडिकेटेड फ्रेक कॉरिडोर का निर्माण मालगाड़ियों के तीव्र परिचालन हेतु एक अलग रेलमार्ग बनाया जा रहा है, जिसमें कुछ नई रेलवे लाइनों का निर्माण तथा कुछ परिचालित रेलवे लाइनों को एक समूह में बनाकर तथा इसे आपस में जोड़कर इस कॉरिडोर का निर्माण हो रहा है। पूर्वी और पश्चिमी

कॉरिडोर का ज्यादातर लाइन का निर्माण हो गया है और मालगाड़ियाँ चल रही हैं। विशेष मालगाड़ी प्रचालक योजना (एस.एफ.टी.ओ.) के अंतर्गत उर्वरक, शीरा, खाद्य तेल, कास्टिक सोडा, पेट्रोकेमिकल, एल्यूमिना, थोक सीमेंट, फ्लाई ऐश इत्यादि की दुलाई में वृद्धि तथा मालडिब्बों में निजी निवेश हेतु यह योजना 31 मई, 2010 को शुरू की गई थी। ऑटोमोबाइल मालगाड़ी प्रचालक योजना (ए.एफ.टी.ओ.) के अंतर्गत ऑटोमोबाइल अर्थात् दो पहियों, तिपहियों, कारों, टैक्टरों इत्यादि के परिवहन हेतु मालडिब्बों की खरीद एवं परिचालन हेतु यह योजना 19 जुलाई, 2010 को शुरू की गई थी। मालडिब्बा निवेश योजना के अंतर्गत माल डिब्बों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत, उद्योग जगत, उत्पादक संघों या सेल ग्रुप इत्यादि के माध्यम से माल डिब्बे खरीदने के लिए यह योजना बनाई गई है। उदारीकृत माल डिब्बा निवेश योजना के अंतर्गत अंतिम उपभोक्ता



जैसे कि उत्पादकों, निर्माताओं और उपभोक्ताओं को विशेष प्रयोज्य माल डिब्बा और उच्च क्षमता वाले मालडिब्बों की खरीद में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा उन्हें मालभाड़ा में रियायत देने का प्रावधान है। मालपट्टा योजना (WLS) के अंतर्गत मालडिब्बों को पट्टे पर दिया जाता है। यह योजना 15 अप्रैल, 2008 को शुरू की गई थी। इसमें पीपीपी मार्ग के माध्यम से रैकों को शामिल किया जाता है। टर्मिनल विकास योजना

(टी.डी.एस.) के अंतर्गत यह योजना 15 अप्रैल, 2008 को शुरू की गई थी। इसके अंतर्गत निजी सेक्टर द्वारा नए रेलवे टर्मिनस के विकास को बढ़ावा देना है, ताकि माल यातायात के रेल संचालन को सुगम बनाया जा सके। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यात्रीगाड़ियों की तरह ही मालगाड़ियाँ भी अपनी अनेक विशेषताओं और विविधताओं के साथ रोचकता से भरी हैं।

## सबसे लंबी मालगाड़ी

स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 15 अगस्त, 2022 को भारतीय रेल के दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे द्वारा कोरबा से नागपुर के पास राजनाँदगाँव तक कुल 267 कि.मी. के बीच सुपर 'वासुकी' नाम की एक स्पेशल मालगाड़ी चलाई गई थी जो भारतीय रेल में अब तक की सबसे लंबी मालगाड़ी है। इस एक मालगाड़ी में एक साथ कुल 295 वैगन और 6 इंजन लगे थे। इसकी लंबाई 3.5 कि.मी. थी। इसमें 27,000 टन कोयला लदा था।





# चलती-फिरती लाईब्रेरी घोड़ा लाईब्रेरी

—शिव मोहन यादव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 24 सितंबर को प्रसारित 'मन की बात' कार्यक्रम में घोड़ा लाईब्रेरी का जिक्र करते हुए कहा कि उत्तराखंड के कुछ युवा शिक्षा के क्षेत्र में सेवा भाव से काम कर रहे हैं। नैनीताल जिले में कुछ युवाओं ने बच्चों के लिए अनोखी घोड़ा लाईब्रेरी की शुरुआत की है। सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसके जरिए दुर्गम इलाकों तक बच्चों के लिए पुस्तक पहुँचाई जा रही है।

उत्तराखंड की ऊँची-नीची दुर्गम पहाड़ियों और कठिन रास्तों से बच्चों तक किताबें पहुँचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इसे एक सामाजिक संस्था और यहाँ के लोगों ने पूरा कर दिखाया है, घोड़ा लाईब्रेरी के माध्यम से। जलना गाँव कोटाबाग ब्लॉक के अंतर्गत आता है। इस प्रखंड के पर्वतीय गाँव बाघनी, महलधुरा, आलेख, दिनवाखरक, गौतिया, बांसी आदि गाँवों को घोड़ा लाईब्रेरी के जरिए ज्ञान से आलोकित किया जा रहा है। पहले इन गाँवों के ज्यादातर बच्चे पहाड़ों पर घूमते रहते थे, अब घोड़ा लाईब्रेरी के आने से बच्चों और बड़ों में भी पढ़ने की प्रवृत्ति तेजी से पनपी है।

उत्तराखंड की इन दुर्गम पहाड़ियों पर पुस्तकें पहुँचाने का केवल एक माध्यम बचा था, घोड़े। इसके लिए जानकारों ने पहल शुरू की चलती-फिरती लाईब्रेरी की। अब यह लाईब्रेरी न केवल दरवाजे-दरवाजे पहुँच जाती है, बल्कि पहाड़ों को फतह करके दूसरे गाँवों में बच्चों और बड़ों को जागरूक और शिक्षित कर रही है।

घोड़ा लाईब्रेरी से क्षेत्रीय बच्चे अत्यधिक आकर्षित और प्रभावित हैं, क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें बाल साहित्य की पुस्तकें पढ़ने को मिल रही हैं। गर्मी की छुट्टियाँ हों, चाहे सर्दियाँ या फिर बरसात! स्कूल खुले हों या बंद हों, हर मौसम में घोड़ा लाईब्रेरी काम कर रही है।

## यूँ शुरू हुई घोड़ा लाईब्रेरी

'हिमोत्थान' नाम की एक सामाजिक संस्था ने अक्टूबर 2022 में उत्तराखंड के चार जिलों, नैनीताल, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल और जौनपुर में 650 प्राथमिक विद्यालयों में काम करना शुरू किया। संगठन का ध्यान पुस्तक संस्कृति, बुनियादी वर्णमाला ज्ञान, साक्षरता विकसित करना और सरकारी स्कूलों की स्कूल प्रबंधन समिति को सशक्त बनाना है।

संस्था के प्रोजेक्ट एसोसिएट शुभम बधानी बताते हैं, "हमारी संस्था जहाँ काम करती है, वहाँ कम बिजली-पानी और खराब सड़कों जैसी कई समस्याएँ हैं। इन गाँवों में बेहतर शैक्षिक माहौल प्रदान करना मुश्किल है। पहले हम नैनीताल के कोटाबाग ब्लॉक के कुछ गाँवों में एक मोबाइल लाईब्रेरी की अवधारणा लाए। गाँवों से शैक्षिक प्रेरकों की भर्ती की और उन्हें प्रशिक्षित किया। वे अपनी साइकिलों से गाँव-गाँव किताबें ले जाने लगे। वहीं, जून से भारी बारिश के कारण इन गाँवों से संपर्क अचानक टूट गया। गाँवों में शिक्षा



की प्रक्रिया जारी रखने के लिए गाँववालों ने हमें घोड़े उपलब्ध कराए। शिक्षा प्रेरक इन घोड़ों पर किताबें लेकर गाँवों का दौरा करने लगे।"

वर्तमान में संस्था के पास 10 घोड़े और 20 शिक्षा प्रेरक हैं। ग्रामीण हर हफ्ते एक घोड़ा देते हैं, जिससे हम पुस्तकें पहुँचाते हैं। शुभम कहते हैं कि 25 फीसदी गाँव, जहाँ वे काम कर रहे हैं, बारिश के कारण अभी भी संपर्क से कटे हुए हैं। ऐसे गाँवों तक पहुँचने के लिए घोड़ों और शिक्षा प्रेरकों की संख्या बढ़ाने की योजना है।

## बच्चे होंगे लाभान्वित

सुभाष चंद्र बदानी एक शैक्षिक प्रेरक हैं। उन्होंने 12वीं तक की पढ़ाई पूरी की है, वे सप्ताह में दो बार सालवा, बासी, चारा, आलेख, डुडालिया और चनिखत जैसे गाँवों में घोड़ों पर किताबें लेकर जाते हैं। वह बताते हैं कि "हमारा उद्देश्य है कि बच्चे पढ़ाई से विमुख न हों। इसीलिए हम उन्हें इस घोड़ा लाईब्रेरी के माध्यम से निःशुल्क पुस्तकें देते हैं। 10-15 बच्चे आते हैं। हम बच्चों के साहित्य के बारे में कहानियाँ सुनाने के लिए कहते हैं। इससे कुछ ही महीनों में बच्चों में नई चीजें सीखने की काफी रुचि बढ़ी है।"

# आओ भारतीय भाषाएँ सीखें

हिंदी	संस्कृत	पंजाबी	उर्दू	कश्मीरी	सिंधी	मराठी	कोंकणी	गुजराती	नेपाली	बांग्ला
पोशाक आदि	परिधानादि	पोशाक आदि	पोशाक वगैरह	पलव दलव	पोशाक वगैरह	पोशाक इत्यादि	भेस	पोशाक वगैरे	पोसाक आदि	पोशाकादि पोशाक आदि
अंगिया	अंगिका	अंगी	अंगिया (चोली)	बबगंड बाडी	चोली अंगी	चोली	चोली	चोली, बांय वगरनो स्त्री नो कवजो	चोली, कन्चोलो	आङ्गिया, गुंवा
अंगोछा	प्रोञ्छम	परना, अंगोछा	अंगोछा	अंगोचि	अंगोछो	पंचा	वालो, पंचो	अंगूछो, पंचियुं	गम्छा	गामछा
अचकन	आचकनम्	अचकन	अचकन	अचकन	डिघो कोटु	उत्तर अंगरखा	ज्युदी	अचकन	सेरबानी अचकन	चापकान
कमीज	वस्त्रभेद कञ्चुकभेद	कमीज़	कमीस	कुरतैन्य	कमीज़, खमीस	सदरा, शर्ट	खोमीस शर्ट	पहेरण, खमीस	कमिच, कमिज	कामिज
कुरता	चोलकः	कुरता	कुरता	कुरत	कुड़ितो, कुरितो	कुडते	सदरो	कुरतुं	कुर्ता	कुर्ता पाञ्जाबि
कोट	प्रावारकः, कञ्चुकम्	कोट	कोट	कोठ	कोटु	कोट	कोट	कोट, डगलो	कोट	कोट
चोली	चोली अंगिका	चोली	चोली	बबगंड, बुलोज, चोली	चोली	चोळी	पोलको	चोळी, पोलकुं	चोली, कन्चोलो	काँचुलि नुपीगी फुरित ब्लाउज
जाँघिया	अंतरीय कच्छा	जाँघिया	जाँघिया	कछि	कछो	चड्डी	चड्डी	जाँघियो	जाँघिया	जाङ्गिया आन्डरवेयर
टोपी	शिरस्कम्	टोपी	टोपी	टूप्य	टोपी	टोपी	तोपी	टोपी	टोपी, शिरपोस	टुपी
तहमत	धौतम्	तहमत	तहबंद, तहमद	तहमद	लुंगी, तहमत	लुंगी	लुंगी	लुंगी	लुंगी	लुङ्गि
तौलिया	प्रोञ्छम्	तोलीआ	तौलिया	तौलिया, तोली	दुवालु	दुवाल	टॉवेल	तुवालो	तौलिया, भुवादार	तोयाले
दस्ताना	करच्छदः	दसताना	दस्ताना	अथर्पंजि	दस्तानो	हातमोजे	हातमेय	हाथनुं मोजुं	पन्जा	दस्ताना
धोती	धौतम्	धोती	धोती, लुंगी	दूत्य	धोती	धोतर	धोतर	धोतियुं	धोती, फरिया	धुति

असमिया	मणिपुरी	ओड़िआ	तेलुगू	तमिल	मलयालम	कन्नड़	डोगरी	संताली	मैथिली	बोडो
पोशाक वेशभूषा	फीजेट नधिडवा	पोषाक वेशभूषा	दुस्तुलु मोदलेनवि	उडैगल् मुदलियन	वस्त्रड्डळ मुतलायव	उडिगे- तोडिगे	पशाक वगेरा	हर बाँदे	पहिरन आदि	गाननाय- जोमनाय बायदिसिना
काँचुलि अंगिया	ब्लाँज गुम्बा फुरित अकौबा	अंगा	रविके रवक्क	रविककै	बोडिसु	कुप्पस	अंगी	ब्लाउज	आडी	अंगिया, बदिस सिडाव गानग्रा खसाव
गामोछा	खुदै, गमछा	गामुछा	अंगवस्त्रमु	मेल्चेट्टि	अंगवस्त्रम्	अंगवस्त्र	परना	गामछा	गमछा	गामसा, फालि
चापकण ओढ़णि	अचोनबा फुरित	उत्तरीय उतुरि	जुब्बा	नींड कोट्टु	निलयकि	निलुवंगि	अचकन	अचकन	अचकन	मोनसे,रोखोमनि खद गस्ला
कामिज	फुरित	कमिज	चोक्का	चट्टे चोक्काय्	उटुप्पुं कुप्पायम्	अंगि, शरटु	कमीज	कामिज	कमीज	गस्ला, खामिज
कुर्ता पांजाबी चोला	पुम्यात	कुर्ता, पंजावि	चोक्का	जिब्बा	जुब्ब	जुब्ब	कुरता	कुर्ता-पञ्जावि	कुरता	कुर्ता, पान्जावि गस्ला
कोट	कोट	कोट	कोटु	कोट्टु	कोट्टुं	कोटु	कोट	कोट	कोट	खद
काँचुलि ओढ़णी	ब्लाँज गुम्बा नुपीगी फुरित	चोली	रविके	रविककै	चोळि	रविके	चोली	चोली	आडी	ब्लाउज, सिडाव गानग्रा खरा, अंगिका
जाडिया	अन्डरवेयर	जंधिया	चेड्डी	लंगोडु/ अंडरवेयर	निक्कर	चड्डी, निक्कर	जांधिया	जाँधिया	कच्छा	जाडिया
टुपी	तूपी	टोपी	टोपी	तोप्पि	तोप्पि	टोपि	टोपी	टुपि	टोपी	थुफि
लंगी	लोंगी खुदै	लुंगी	लुंगी	मुण्डु	लुकि	लुंगी	तैहमत	लुडगि	लुंगी	लुडि
गामोछा	फदी, खुदै	तउलिया	टवलु	तुवालै	तूवाल तोर्लु	टवलु करवस्त्र	तौलिया	तोवालि	तौलिया	गामसा, थावेल
हातमोजा	खुत-मोजा	दस्ताना, करत्राण	चेजोडु, ग्लोव	कै उरै	कय्युर	कै चील	दस्ताना	दस्ताना	दस्ताना	आखाइ मुजा
चुरिया	फैजोम	धोति	पंचे	वेट्टि	डबिल् मुण्डुं दोत्ति	पंचे	धोती	धुति	धोती	दुथि, धुति

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा कोश से साभार)



# हिंदी नाटकों में कला और सत्ता का संघर्ष एक कलाकार के संदर्भ में

साहित्य में संघर्ष एक बहुआयामी उपादान है। रचनाकार को रचना की ओर प्रेरित करने के साथ ही वह वैचारिक पृष्ठभूमि को निर्मित करने का कार्य भी करता है। साहित्य में यह संघर्ष द्वंद्वत्मकता के कारण उभरकर सामने आता है, जो अभिनेता या कलाकार के जीवन संघर्ष के रूप में एक सामाजिक वातावरण का निर्माण करता है। जब जीवन पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तो यही संघर्ष साहित्य का एक प्रभावी अंग बन जाता है। साहित्य में हम संघर्ष के कई रूप देख सकते हैं, फिर चाहे वह नाटक विधा हो या



## प्रवीण कुमार सहगल

**शिक्षा :** एम.ए., साहित्यरत्न, पी.जी.डी.आई.सी.एस.।

**संप्रति :** स्वतंत्र लेखन। साहित्य-सृजन के साथ-साथ शैक्षिक-सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय।

**लेखन एवं प्रकाशन :** 20 वर्षों से लेखन कार्य में सक्रिय। देश-विदेश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में हर विधा में लगभग 500 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित।

**सम्मान :** युवा लेखन सृजन पुरस्कार, आर्यस्मृति साहित्य सम्मान के साथ-साथ देश-प्रदेश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित।

**संपर्क :** मोबाइल— 9871346063

ईमेल— praveensehgal217@gmail.com

सिनेमा जगत। इन दोनों ही रूपों में कलाकार के संघर्ष को चित्रित करने का प्रयास हिंदी साहित्य में किया जाता रहा है।

हिंदी नाटकों में संघर्ष का स्वरूप दो रूपों में हमारे सामने आता है, पहला बाह्य संघर्ष और दूसरा आंतरिक संघर्ष। हिंदी नाटकों में यह संघर्ष विपरीत परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होता है। संघर्ष के कई रूप हैं जैसे परिस्थिति विशेष के संदर्भ में, नैतिकता और व्यक्ति के संदर्भ में, व्यक्ति और समुदाय, समुदाय और समाज, समाज और देश के रूप में संघर्ष और द्वंद्व उत्पन्न होता है। आंतरिक संघर्ष परस्पर विरुद्ध परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होता है और इसका संबंध पूर्णतः व्यक्तित्व से होता है, परंतु बाह्य संघर्ष व्यक्तित्व और समाज दोनों की विपरीत प्रतिक्रिया स्वरूप उभरकर सामने आता है। आंतरिक संघर्ष श्रेष्ठता की

कसौटी है, क्योंकि वह व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष की ओर प्रेरित करता है। हिंदी नाटकों में यह संघर्ष सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और भी कई रूपों में हमारे सामने आता है। व्यक्तित्व का निर्माण समाज में रहकर होता है, परंतु जब यही समाज उसके व्यक्तित्व और अस्मिता को खंडित करते हुए उसके होने पर ही प्रश्नचिह्न लगा दे तो व्यक्ति का व्यक्तित्व छिन्न-भिन्न हो जाता है, जिसका प्रभाव कलाकार के ऊपर विरोधात्मक रूप में दृष्टिगोचर होता है। अशोक वाजपेयी के साहित्य और कला विषयक विचार उनके साहित्यिक प्रतिरोध को अभिव्यक्त करते हैं—“महान साहित्य इस बात को ध्यान रखकर नहीं लिखा जा सकता है कि पाठक क्या करेंगे, दर्शकों पर क्या प्रभाव होगा।”

साहित्य में संघर्ष का यह द्वंद्व व्यक्ति, परिवार, समाज और सत्ता सभी के विरुद्ध दिखाई देता है। मनुष्य के सामाजिक विकास की प्रक्रिया उसके परिवार से प्रारंभ होती है, जो कालांतर में उनके आंतरिक संघर्ष का कारण बनता है। हिंदी नाटकों में कला और सत्ता

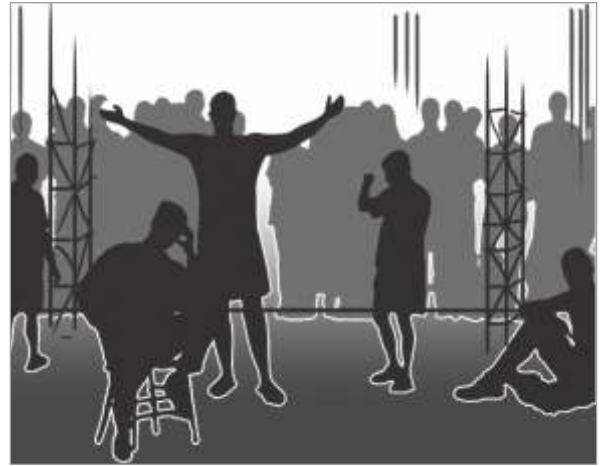
“ उपन्यास, कविता, नाटक सभी में निरंतर कला विषयक संघर्ष को चित्रित किया गया है। जीवनभर संघर्षरत रहने के बाद भी कालिदास का संपूर्ण जीवन कला को समर्पित है। इसी प्रकार जगदीश चन्द्र माथुर का ‘कोणार्क’, भीष्म साहनी का ‘हानूश’, सुरेन्द्र वर्मा का ‘आठवाँ सर्ग’, शंकर शेष का ‘मूर्तिकार’, सुदर्शन का ‘काला पहाड़’, नंदकिशोर का ‘पागलघर’, सुमित्रानंदन पंत का ‘शिल्पी’, हबीब तनवीर का ‘आगरा बाजार’, नरेन्द्र मोहन का ‘अभंगगाथा’ आदि नाटकों में कला के विविध आयामों के माध्यम से कला जगत को समझने का प्रयास है। इन नाटककारों ने परंपरागत जड़ता को तोड़ते हुए ‘अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता’ को अपने नाटकों में स्थान दिया। ”

का संघर्ष ऐसी प्रक्रिया है जो प्राचीनकाल से आज तक चली आ रही है। कला हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जिसके बिना जीवन की कल्पना करना ही कठिन है। यही कारण है कि हिंदी नाटककारों ने भी अपने नाटकों में कला के इस संघर्ष को वाणी दी। अस्मिता की यह लड़ाई कलाकार की प्रतिक्रिया का कारण बनी। हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में इस प्रकार की अभिव्यक्ति होती रही है। उपन्यास, कविता, नाटक सभी में निरंतर कला विषयक संघर्ष को चित्रित किया गया है। माओत्से तुंग ने अपनी पुस्तक ‘कला साहित्य और संस्कृति’ में कला और कलाकार के संबंध को चित्रित करते हुए लिखा है—‘क्रांतिकारी लेखक व कलाकार अपने सृजनात्मक श्रम से जनता के जीवन में मौजूद साहित्यिक व कलात्मक कच्चे माल को विचारधारात्मक रूप में एक ऐसा कला साहित्य बना देते हैं जो विशाल जनसमुदाय की सेवा करता है। इसमें उन्नत स्तर वाला वह कला साहित्य भी शामिल है, जिसे प्रारंभिक स्तर के कला साहित्य के आधार पर विकसित किया जाता है तथा जिसकी जनसमुदाय के उस भाग को जरूरत होती है।’

हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में इस प्रकार की अभिव्यक्ति होती रही है। उपन्यास, कविता, नाटक सभी में निरंतर कला विषयक संघर्ष को चित्रित किया गया है। जीवनभर संघर्षरत रहने के बाद भी कालिदास का संपूर्ण जीवन कला को समर्पित है। इसी प्रकार जगदीश चन्द्र माथुर का ‘कोणार्क’, भीष्म साहनी का ‘हानूश’, सुरेन्द्र वर्मा का ‘आठवाँ सर्ग’, शंकर शेष का ‘मूर्तिकार’, सुदर्शन का ‘काला पहाड़’, नंदकिशोर का ‘पागलघर’, सुमित्रानंदन पंत का ‘शिल्पी’, हबीब

तनवीर का ‘आगरा बाजार’, नरेन्द्र मोहन का ‘अभंगगाथा’ आदि नाटकों में कला के विविध आयामों के माध्यम से कला जगत को समझने का प्रयास है। इन नाटककारों ने परंपरागत जड़ता को तोड़ते हुए ‘अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता’ को अपने नाटकों में स्थान दिया। साथ-ही-साथ समसामयिक जीवन की असंगतियों की पीड़ा को झेला, भोगा और युग-जीवन की द्वंद्वपूर्ण संघर्षमयी विसंगतियों, मनःस्थिति को नाटक के माध्यम से रंगमंच पर प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया। नाटक एक दृश्य विधा है जो पाठक और दर्शक को कलाकार की मनःस्थितियों से सीधे जोड़ता है। इन नाटकों में कला और कलाकार के जीवन संघर्ष के माध्यम से कला की उपयोगिता व उसके सिमटते रूप की अभिव्यक्ति भी देखी जा सकती है।

समकालीन नाटकों की यदि बात की जाए तो इनमें सबसे पहला नाम शंकर शेष का आता है, जिन्होंने कला को कई रूपों में समझने का प्रयास किया है। शंकर शेष के नाटक ‘मूर्तिकार’ का यह अंश कलाकार की मानसिक स्थिति को साफ-साफ उजागर करता है—“वे तो समझौता कर ही नहीं सकते। वे तो वही चित्र बनाएँगे जो उनकी आत्मा का स्वर बोलते हुए कलाकार स्वयं भी महसूस करता है। समझौते से सुविधाएँ मिल सकती हैं, ऊँचाइयाँ नहीं।” यही कारण है कि कालिदास, हानूश, विशु, प्रकाश, मूर्तिकार सभी इन समस्याओं को झेलते हुए अपनी कला के लिए समर्पित हैं। घर की आर्थिक दशा खराब होते हुए भी अपनी कला से विमुख नहीं होते। कला की यह साधना जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर सकती। कलाकार का यह आंतरिक संघर्ष बना रहता है।



समकालीन हिंदी नाटककारों ने कला को केंद्र में रखकर नाटक लिखे। कलाकार सिर्फ कला तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह अपने परिवेश को भी व्याख्यायित करता है। ‘शिल्पी’ नाटक में जहाँ एक शिल्पकार के आंतरिक मनःस्थिति को उजागर किया है, वहीं हबीब तनवीर का ‘आगरा बाजार’ तो समकालीन परिवेश पर ही तीखा व्यंग्य करता है जहाँ एक ककड़ी वाला नजीर को अपनी कला के

माध्यम से 'ककड़ी' पर एक नज्म (गज़ल) लिखने को कहता है। यह बाजार की ही उपज है, जहाँ हरेक वस्तु को बेचने के लिए कलाकार गीतों का प्रयोग करता है। भवानी प्रसाद अपनी कविता 'गीतफरोश' में फिल्म जगत और सिनेमा जगत पर भी व्यंग्य करते हैं, जहाँ कलाकार अपनी कला को बेचने के लिए मजबूर है। भवानी प्रसाद मिश्र की यह कविता कलाकार की स्थिति पर व्यंग्य करती है, जहाँ वह पल-पल कला के व्यवसायीकरण का आदी हो कला बेचने को तैयार है।

हिंदी उपन्यासों में भी वैश्वीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है। इनमें देवेन्द्र सत्यार्थी के तो अधिकांश उपन्यासों में कला और कलाकार के जीवन संघर्षों को चित्रित किया गया है, जिसमें 'कठपुतली' में नाटक और रंगमंच से जुड़े कलाकारों की साधना को चित्रित करने का प्रयास किया है। वहीं 'दूधगाछ' में संगीत और संगीतकारों के जीवन संघर्षों को स्वर देने का प्रयास किया है। 'कथा कहे उर्वशी' में मूर्तिकार की संवेदना और साधना का अंकन है। भैरव प्रकाश गुप्त की 'धरती' में भी एक सच्चे सर्जक साहित्यकार के जीवन की समस्याओं को शब्दबद्ध किया गया है।

वैश्वीकरण की लड़ाई कला को परास्त करने में कोई कमी नहीं छोड़ती। साहित्य जगत को ही लें, वहाँ न जाने कितने रचनाकार हैं, जिन्हें अब तक समाज ने स्वीकारा नहीं। निराला, मुक्तिबोध ऐसे ही रचनाकार हिंदी जगत में हुए जिन्हें ख्याति मरणोपरांत मिली। मुक्तिबोध की कविताएँ जब अनूदित होकर पेरिस में छपीं तो यूरोप में चर्चा का विषय बनीं। मतलब रचना का छपना, प्रकाशित होना, कहीं-न-कहीं यह बाजार का ही हिस्सा है। कला की स्थिति इतनी खराब होने पर भी सच्चा साहित्यकार हार नहीं मानता, बल्कि निरंतर साधना में रत रहता है। आज कला का यह बिखराव जहाँ कला की महत्ता को कम कर रहा है वहीं एक वर्ग ऐसा भी है जो तमाम परेशानियों के बाद भी कला के व्यापक प्रसार-प्रचार में अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

नाटक साहित्य में मोहन राकेश नाट्य रचना का ऐसा युग लेकर आए, जिन्होंने रंगमंच को कल्पनालोक से उतारकर जमीनी हकीकत

से लोगों को रू-ब-रू कराया। पहली बार व्यक्ति का आंतरिक संघर्ष और बाह्य संघर्ष इनके नाटकों में विचार का केंद्रबिंदु बने। इन नाटककारों ने लोक वेदना और उनकी दैनिक समस्याओं को नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। नाटकों में जहाँ व्यक्ति को प्रधान माना गया, वहीं उसके अस्तित्व को समझने, जानने का प्रयास भी किया गया। 'आषाढ़ का एक दिन' कवि की ऐसी ही त्रासदी को प्रस्तुत करता है। राजकवि होना सिर्फ सत्ता का हकदार होना नहीं है, बल्कि इस राजकवि की प्रशस्ति के पीछे का जीवन ही संघर्षमय है, जो एक कवि की काव्य सर्जना पर अंकुश लगा देता है। लेखक जब अपने परिवेश से कट जाता है तब उसकी लेखकीय क्षमता भी प्रभावित होती है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों के कला विषयक संघर्ष को भीष्म साहनी ने बड़ी बेबाकी से दिखाया है। नाट्यकृति 'हानूश' में भीष्म



साहनी जी ने चेकोस्लोवाकिया की लोककथा को आधार बनाया है, जहाँ एक कलाकार अपने अथक प्रयासों के बावजूद घड़ी को बनाता है। 'हानूश' भीष्म साहनी का पहला नाटक है जो 1977 में आपातकाल के दौरान लिखा गया। यहाँ भीष्म साहनी ने एक संघर्षशील कलाकार की कला को साकार किया है। कलाकार 'हानूश' ने 17 वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद इस घड़ी को बनाया है। कला की उत्कर्षता के लिए राजसत्ता द्वारा पुरस्कार दिया गया, लेकिन साथ ही उसकी दोनों आँखें निकलवा दी गईं, ताकि वह दूसरी घड़ी न बना

सके। नाटककार यहाँ बार-बार प्रश्न उठाता है कि आखिर कब तक एक कलाकार राजसत्ता का शिकार होता रहेगा? आँखों के न होने पर भी एक बार पुनः बंद घड़ी को क्रियाशील करने की कोशिश करता है। भीष्म साहनी ने अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से सत्ता के विभिन्न शोषणकारी रूपों को बेनकाब किया है। 'हानूश' को सामने रखकर उन्होंने वर्चस्व की राजनीति को उखाड़ते हुए सत्ता के शोषणकारी रूप को प्रस्तुत किया है जो एक कलाकार को समझौता करने के लिए मजबूर कर देता है। भीष्म साहनी की तरह ही जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा आदि नाटककारों ने अपने नाटकों में कला और कलाकार के सृजनशील संघर्ष को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समय में भी देखा जाए तो एक कलाकार इस राजनीति का शिकार होता हुआ शोषण को झेलता है। आज के संदर्भ में भी कलाकार सत्ता के शिकार होते जान पड़ते हैं। अभिव्यक्ति की आजादी आज छिनती जान पड़ती है। इसी कड़ी में सुदर्शन चोपड़ा का नाटक

“ सच्चा कलाकार स्वाभिमानी होता है, जो जीवन की सुख-सुविधाओं के आगे झुक नहीं सकता। इसलिए वह अभावों को झेलता है, विपत्तियों से टकराता है, किंतु हार नहीं मानता। एक कलाकार पूर्णतः अपनी आत्मा को कला को समर्पित करता है, क्योंकि समझौते व्यक्ति को कमजोर बनाते हैं जिससे कलाकार हास की ओर अग्रसर होता है। ”

‘काला पहाड़’ में भी वर्गीय मानसिकता को उभारने का प्रयास किया गया है। आज का मनुष्य कई प्रकार के दबावों को एक साथ झेल रहा है। उसे कुछ करने की भी आजादी नहीं है, ऐसे परिवेश में एक कलाकार या सामान्य मनुष्य अपनी इच्छानुसार कोई कार्य नहीं कर सकता।

वर्तमान में हम देख सकते हैं कि जीते जी निराला, मुक्तिबोध, दिनकर ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने इस अभाव का जीवन जिया, परंतु झुके नहीं। एक कलाकार जीवन जीने की भौतिक वस्तुएँ नहीं जुटा पाता, वहीं उसके मरने के बाद उसकी जन्म शताब्दियाँ मनाई जाती हैं, स्मारक बनाए जाते हैं।

अधिकांशतः देखा गया है कि कला और कला की साधना जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर सकते। कलाकार का यह आंतरिक संघर्ष बना रहता है, यही कारण है कि ‘कालिदास’, ‘हानूश’, ‘विशु’, ‘प्रकाश’, ‘मूर्तिकार’ सभी इन समस्याओं को झेलते हुए भी अपनी कला के लिए अपना जीवन



समर्पित करते हैं। घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के बावजूद ये कला से विमुख नहीं होते। सच्चा कलाकार स्वाभिमानी होता है, जो जीवन की सुख-सुविधाओं के आगे झुक नहीं सकता। इसलिए वह

अभावों को झेलता है, विपत्तियों से टकराता है, किंतु हार नहीं मानता। एक कलाकार पूर्णतः अपनी आत्मा को कला को समर्पित करता है, क्योंकि समझौते व्यक्ति को कमजोर बनाते हैं जिससे कलाकार हास की ओर अग्रसर होता है।

वर्तमान समय में आज का कलाकार अधिक प्रयोगात्मक हो गया है। इसलिए उसकी कला, कला साधना को समर्पित नहीं, बल्कि एक साधन है जो उसे ऊँचाइयों की सीढ़ी पर चढ़ा सकती है। आज देखा गया है कि कला का सम्मान नाम-मात्र के लिए रह गया है। यह उसी व्यक्ति को दिया जाता है जो उच्च वर्ग के व्यक्ति होते हैं या फिर उनकी प्रशासनिक पकड़ होती है।



हिंदी नाटकों में कला और कलाकार का संघर्ष निरंतर सत्ता के विपक्ष में रहा। कलाकार का यह संघर्ष व्यक्तिगत हो ऐसा नहीं है, बल्कि उसका यह संघर्ष अंदर और बाहर दोनों के प्रति है। व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व जिस बाह्य प्रतिक्रिया से प्रभावित होता है, उसी के विरुद्ध यह संघर्ष छिड़ता है, फिर चाहे वह पारिवारिक विखंडन हो या सामाजिक कुरीतियाँ। कलाकार सिर्फ अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता है, बल्कि वह समग्र मानवीय पीड़ा को अपने नाटक में समाहित करता है, जो संपूर्ण कलाकारों की आवाज भी होती है। आज का लेखक (कलाकार) वर्तमान समय की इस विभीषिका को झेल रहा है।

हिंदी नाटकों में कला का यह अंतर्द्वंद्व कला विषयक अच्छाइयों और बुराइयों को हमारे सामने रखता है। कला के प्रति अलग-अलग जीवन दृष्टियों का अध्ययन और कलाकार का कला विषयक जीवन संघर्ष निश्चित ही यहाँ समसामयिक जीवन की तमाम बुराइयों से पाठक को परिचित करवाते हुए कला की उपयोगिता को सिद्ध करता है। हिंदी नाटकों का कला विषयक संघर्ष वर्तमान जीवन की समस्याओं से परिचित करवाते हुए हमें संघर्षशील होने की प्रेरणा देता है।





# तुसाद के अतिरिक्त और भी कई संग्रहालय हैं देश में सिक्थ प्रतिमाओं के

देशवासियों, विशेष रूप से दिल्ली वालों के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि लंदन स्थित मैडम तुसाद संग्रहालय की एक शाखा राजधानी, नई दिल्ली के कनॉट प्लेस की रीगल सिनेमा बिल्डिंग में भी खुल चुकी है। लंदन का मैडम तुसाद संग्रहालय न केवल अपनी मोम से बनी आदमकद प्रतिमाओं के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, अपितु विश्व में 22 स्थानों पर मैडम तुसाद संग्रहालय स्थापित हो चुके हैं। नई दिल्ली में मैडम तुसाद का यह 23वाँ संग्रहालय है। दर्शक यहाँ स्थापित प्रसिद्ध बॉलीवुड कलाकारों के अतिरिक्त देश-विदेश के अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों व राजनीतिज्ञों के मोम के पुतलों के साथ फोटो



या सेल्फी लेने के अतिरिक्त उनको छूकर देखने का अनुभव व आनंद भी आसानी से उठा सकते हैं। यहाँ मोम में ढले बॉलीवुड कलाकार व चर्चित खिलाड़ी हैं तो देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी हैं।

कुछ लोग समझते हैं कि नई दिल्ली के कनॉट प्लेस की रीगल सिनेमा बिल्डिंग में खुलने वाला मैडम तुसाद संग्रहालय मोम से बनी अथवा सिक्थ प्रतिमाओं का भारत का पहला संग्रहालय है। वास्तव में देश में पहले से ही मोम से बनी प्रतिमाओं के कई अच्छे संग्रहालय मौजूद हैं। यूँ तो देश में अनेक ऐसे कलाकार हुए हैं जिन्होंने मोम की प्रतिमाएँ बनाई हैं, लेकिन मोम की प्रतिमाओं को संग्रहालय का रूप देने का सबसे पहला काम किया है केरल में जन्मे कलाकार सुनील कण्डलूर ने। 24 दिसंबर, 2005 को तमिलनाडु के कन्याकुमारी में सुनील कण्डलूर ने देश का पहला मोम की मूर्तियों का संग्रहालय स्थापित किया, जिसे बाद में

सन् 2009 में उन्होंने इसे महाराष्ट्र के लोनावला में स्थानांतरित कर दिया।

## सेलेब्रिटी वेक्स म्यूज़ियम (लोनावला)

मुंबई और पुणे के मध्य पुराने हाईवे पर लोनावला के पास 'वासोली' नामक स्थान पर स्थित 10,000 वर्ग फुट में फैला सुनील कण्डलूर का सेलेब्रिटी वेक्स म्यूज़ियम बहुत सुंदर बन पड़ा है। जब मैं पहली बार 'सेलेब्रिटी वेक्स म्यूज़ियम' नामक यह संग्रहालय देखने गया था तो इसमें 30 के लगभग प्रतिमाएँ प्रदर्शित थीं। आज उनकी संख्या तीन गुना से भी अधिक हो चुकी है। यह संग्रहालय पूरी तरह से सुनील कण्डलूर के व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम है। जहाँ तुसाद संग्रहालय में मूर्तियों के निर्माण में अनेक कलाकार व सहायक काम करते हैं वहीं सुनील कण्डलूर अकेले के दम पर सारा काम करते हैं। केरल राज्य के अलेप्पी जिले के 'कण्डलूर' नामक गाँव में जन्मे



## सीताराम गुप्ता

जन्म : 06 जुलाई, 1954, दिल्ली।

शिक्षा : हिंदी भाषा के अतिरिक्त रूसी, उर्दू, फारसी व अरबी भाषाओं का भी अध्ययन। टेलिविजन प्रजेंटेशन में डिप्लोमा।

प्रकाशन/कृति : कविता-संग्रह 'मेटामॉर्फोसिस' तथा मन की शक्ति द्वारा उपचार विषयक पुस्तक 'मन द्वारा उपचार' फुल सर्कल द्वारा प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य तथा भाषा विषयक लेख, व्यंग्य, कथा-साहित्य आदि प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल - 9555622323

ईमेल - srgupta54@yahoo.co.in

सुनील कण्डलूर ने वर्ष 1993 में फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा किया। लंदन स्थित मैडम तुसाद संग्रहालय की मोम द्वारा निर्मित मूर्तियों के विषय में पढ़कर सुनील का रुझान इस कला को विकसित करने की ओर हुआ।

### सेलेब्रिटी वेक्स म्यूज़ियम (कोच्चि)

सुनील कण्डलूर ने वर्ष 1999 में भगवान श्रीकृष्ण का आवक्ष (बस्ट) मोम का पुतला बनाया जो इस विधा में उनका प्रथम प्रयास था। इसके बाद उन्होंने केरल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री के. करुणाकरण की मोम की सर्वांग आदमकद प्रतिमा बनाई। सुनील कण्डलूर अब तक शताधिक मोम की प्रतिमाएँ बनाकर प्रदर्शित कर चुके हैं। उनकी बनाई गई मोम की प्रतिमाओं में देश-विदेश के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों, समाजसुधारकों, आध्यात्मिक पुरुषों, योगाचार्यों, सिने-कलाकारों तथा अन्य प्रसिद्ध गणमान्य व्यक्तियों की प्रतिमाएँ सम्मिलित हैं। लोनावला में स्थापित सेलेब्रिटी वेक्स म्यूज़ियम की सफलता से प्रेरित होकर उन्होंने केरल के कोच्चि में भी मोम की प्रतिमाओं का एक संग्रहालय शुरू किया। वहाँ पर भी 40 से अधिक मोम से बनी आदमकद प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। सुनील कण्डलूर द्वारा स्थापित इन दोनों संग्रहालयों में कुल मिलाकर एक हजार के आस-पास दर्शक प्रतिदिन आते हैं जो बहुत बड़ी बात है।

### वेक्स वर्ल्ड म्यूज़ियम (ऊटी)

सुनील कण्डलूर के अतिरिक्त श्रीजी भास्करन भी एक उत्साही सिक्थ प्रतिमा कलाकार हैं। उन्होंने सन् 2002 में मोम द्वारा निर्मित अपनी पहली मूर्ति तैयार की थी और वो मूर्ति थी एपीजे अब्दुल कलाम साहब की। वह मोम से निर्मित कलाकृतियों के चार संग्रहालय अब तक स्थापित कर चुके हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। श्रीजी भास्करन ने सबसे पहले तमिलनाडु के 'ऊटी' नामक सुरम्य पर्वतीय स्थल पर मार्च 2007 में वेक्स वर्ल्ड म्यूज़ियम स्थापित किया। इसमें 40 से अधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों व स्वतंत्रता सेनानियों की मोम की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। श्रीजी भास्करन ने जुलाई 2008 में पुराने गोवा में धार्मिक महत्व की मूर्तियों का एक संग्रहालय भी प्रारंभ किया था।

### मेलॉडी वर्ल्ड वेक्स म्यूज़ियम (मैसूर)

इसके बाद अक्टूबर 2010 में श्रीजी भास्करन ने कर्नाटक के मैसूर में मेलॉडी वर्ल्ड वेक्स म्यूज़ियम की स्थापना की। जैसा कि नाम से ही विदित होता है मेलॉडी वर्ल्ड वेक्स म्यूज़ियम में 470 संगीत वाद्यों व संगीतज्ञों की मोम से निर्मित प्रतिमाएँ रखी गई हैं। वर्ष 2012 में श्रीजी भास्करन ने 'कोडईकनाल' नामक स्थान पर मोम से बनी 40 धार्मिक प्रतिमाओं का संग्रहालय भी बनाया। श्रीजी भास्करन भारतीय कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए विशेष रूप से प्रयासरत रहे और उसी के अंतर्गत उन्होंने कर्नाटक के मैसूर में ही सन् 2016 में

मैसूर नृत्य संग्रहालय की स्थापना की। भारतीय शास्त्रीय व लोक नृत्यों पर आधारित मोम की 64 प्रतिमाएँ यहाँ पर देखी जा सकती हैं। हर लिहाज से सिक्थ प्रतिमाओं के विकास में श्रीजी भास्करन का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। यह योगदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि सुनील कण्डलूर की तरह ही श्रीजी भास्करन ने भी व्यक्तिगत स्तर पर ही ये सब-कुछ संभव किया।

### मदर्स वेक्स म्यूज़ियम (कोलकाता)

सुशांत रे बंगाल के ऐसे सिक्थ प्रतिमा कलाकार हैं जिनका आसनसोल में मोम की प्रतिमाओं का अपना एक निजी संग्रहालय है। इन्हीं सुशांत रे के प्रयासों से ही पश्चिम बंगाल के कोलकाता में मदर्स वेक्स म्यूज़ियम की स्थापना संभव हो पाई है। 'मदर टेरेसा' के नाम पर बने इस मोम की प्रतिमाओं के संग्रहालय की स्थापना कोलकाता के पास न्यू टाउन स्थित फाइनार्स सेंटर बिल्डिंग के छठे माले पर की गई है। 10 नवंबर, 2014 को प्रारंभ हुए 5000 वर्गफुट में फैले इस संग्रहालय में प्रारंभ में रवींद्रनाथ टैगोर, किशोर कुमार, लता मंगेशकर, मिथुन चक्रवर्ती आदि प्रसिद्ध कलाकारों की डेढ़ दर्जन के लगभग प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं और इसका विस्तार जारी है।

### जॉनीज़ वेक्स म्यूज़ियम (शिमला)

12 मई, 2016 को शिमला के विलो बैंक्स एस्टेट में भी 'जॉनीज़ वेक्स म्यूज़ियम' नाम से एक संग्रहालय का उद्घाटन किया गया। इसमें भी डेढ़ दर्जन के लगभग मोम की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं, लेकिन सुनने में आया है कि इन मूर्तियों को लंदन से बनवाकर मँगवाया गया है। वास्तव में बाहर से मोम की मूर्तियाँ बनवाकर संग्रहालय स्थापित करने का उतना महत्व नहीं जितना यहाँ अपने देश में मूर्तियाँ बनाने और इस कला को विकसित करने का है। शिमला के अतिरिक्त मसूरी में भी 'देवभूमि वेक्स म्यूज़ियम' नाम से एक संग्रहालय है। पिछले दिनों राजस्थान के उदयपुर में भी मोम से बनी प्रतिमाओं के एक संग्रहालय का प्रारंभ हुआ है। जयपुर में भी सिक्थ प्रतिमा संग्रहालय बनने का समाचार सुनने में आया है।

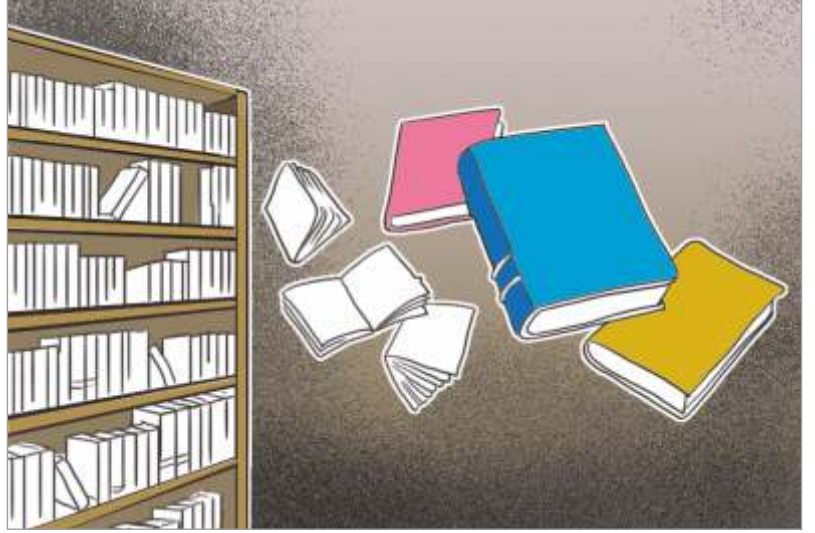
इन संग्रहालयों की विशेषता यह है कि अधिकांश संग्रहालयों में अन्य महत्वपूर्ण लोगों के मुकाबले फिल्मी दुनिया के लोगों को बहुत ज्यादा स्थान दिया गया है। अन्य क्षेत्रों के महत्वपूर्ण लोगों को भी पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। दूसरे, मोम से बनी मूर्तियों के संग्रहालय बनाने का महत्व तभी है जब यहाँ के कलाकार इस कला की ओर आकर्षित हों और इस कला का निरंतर विकास हो। देखना यह है कि तेजी से खुलते जा रहे मोम की प्रतिमाओं के संग्रहालय तुसाद संग्रहालय का कहाँ तक मुकाबला कर पाते हैं। कला के किसी भी क्षेत्र में काम चाहे कम मात्रा में किया जाए, लेकिन काम उच्च कोटि का होना चाहिए। मोम द्वारा निर्मित मूर्तियों के संबंध में भी यह उतना ही महत्वपूर्ण है।





# अद्भुत और अनोखे पुस्तकालय

अध्ययन-अध्यापन, पठन-पाठन, साहित्य सृजन भारत में आदिकाल से ही विद्यमान हैं। आदि-अनादि काल से ही भारत में साहित्य रचा जा रहा था जिसका प्रमाण वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण जैसे अनेक ग्रंथ हैं जो प्राचीन हैं और भारत की मेधा का प्रमाण भी हैं। आश्रम परंपरा में भी छात्र-छात्राओं को किसी भी स्थान पर बैठकर पठन-पाठन का कार्य कराया जाता था, धीरे-धीरे इसने एक पुस्तकालय का रूप ले लिया, जहाँ बैठकर सभी छात्र-छात्राएँ पढ़ने-लिखने का कार्य करने लगे। डिजिटल वर्ल्ड में पढ़ा तो कम जा रहा है, लेकिन लिखा प्रचुर मात्रा में जा रहा है, जबकि सत्य तो यह है कि चंद लाइन लिखने के लिए कई पुस्तकों को पढ़ना पड़ता है। वर्तमान समय में पुस्तक संस्कृति खत्म होती जा रही है, जो देश और सभ्य समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है। कहा



जाता है कि मनुष्य स्वभाव से ही हिंसक प्रवृत्ति का है, लेकिन पुस्तकें उसके स्वभाव परिवर्तन में अहम किरदार अदा करती हैं। जब कोई व्यक्ति पुस्तकें पढ़ेगा तो वास्तव में वह अच्छा इंसान बनने की तरफ प्रवृत्त होगा और समाज में अच्छा व्यवहार करेगा।

पिछले दशकों से पुस्तक संस्कृति में गिरावट आई है। पुस्तकालय में लोग जाना पसंद नहीं करते हैं, बल्कि डिजिटल माध्यम से आधा-अधूरा पढ़कर कुछ भी लिख और बोल देते हैं। देश को शिखर पर पहुँचाने के लिए पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देना होगा जिसके लिए अनेक संस्थाएँ, गैर-सरकारी संस्थाएँ भी प्रयासरत हैं।

पठन-पाठन और सृजन की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने के लिए देश में कई ऐसे समूह हैं जो गाँव-देहात में लाइब्रेरी खोल रहे हैं और गरीब, मजदूर, असहाय बच्चों की मदद कर रहे हैं तथा उनको पढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। ऐसे ही कुछ अद्भुत और

अद्वितीय पुस्तकालय हैं जो वास्तव में देश की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं।

पूर्वोत्तर भारत के राज्य अरुणाचल प्रदेश के मियाव जिले में एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें 22 वर्ष तक के विद्यार्थी बैठकर पढ़ सकते हैं। इसके लिए केवल 50 रुपये शुल्क रखा गया है, जो जीवनपर्यंत मुफ्त सुविधाएँ देती है। इस पुस्तकालय के संबंध में चांगलांग के सन्नी के. सिंह कहते हैं कि बच्चों में पढ़ने की संस्कृति स्थूल अवस्था में जा चुकी है जिसको दोबारा गति देनी है और नई पीढ़ी में शिक्षा का जनसंचार करना है।

पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल में युवाओं की इतनी बड़ी संख्या होने के बाद भी इस उपसंभाग में डॉक्टर, इंजीनियर, वकील और प्रशासक नहीं हैं। मुख्य वजह प्रतिस्पर्धा संस्कृति का अभाव है। इसके अलावा प्रतियोगी पुस्तकें भी आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए



## डॉ. अकरम हुसैन

जन्म : 03 जून, 1988।

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पी-एच.डी. (हिंदी)।

लेखन/प्रकाशन : भारतीय समाज और हिंदी उपन्यास, इसके अलावा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध-आलेख प्रकाशित।

संप्रति : राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, बूँदी में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत।

संपर्क : मोबाइल— 8791633435

ईमेल— akramhussainqadri@gmail.com

एनएएलसी के माध्यम से वहाँ के छात्र-छात्राओं में पुस्तक संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इसी संबंध में एनएएलसी के उपायुक्त कहते हैं कि “हमारा विचार एक ऐसी व्यवस्था तैयार करना है जहाँ सभी उम्र वर्ग के बच्चों को अध्ययन के लिए आरामदेह माहौल मिले और वे अपने आत्मविश्वास का स्तर ऊँचा कर सकें।”

“ पाँच नदियों के प्रदेश पंजाब के मोगा जिले के रणसीकलां गाँव में भी वहाँ के बाशिंदों ने मिलकर महाराजा रणजीत सिंह लाईब्रेरी का शुभारंभ किया। यहाँ ‘किताबें पढ़ने आओ, पैसा कमाओ’ स्कीम के जरिए बच्चों, नौजवानों और बुजुर्गों में पुस्तक पठन को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। इस कार्य को युवा सरपंच प्रीत इंदर पाल सिंह मिंटू ने किया है, जो स्वयं में नए तरह का प्रयोग है। इस पुस्तकालय का समय शाम पाँच से सात बजे तक है। इस लाईब्रेरी में पढ़ने आने वाले हर वर्ग के व्यक्तियों के लिए एक प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है जिसमें पढ़ी गई पुस्तकों से प्रत्येक वर्ष की 31 मार्च को दस प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उत्तर देने वाले व्यक्ति को उचित इनाम भी देने का प्रावधान है। ”

‘सिल्क और डायमंड सिटी’ नाम से विख्यात गुजरात प्रदेश के सूरत शहर में भी तीन सरकारी शिक्षकों ने मिलकर पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक ऐसे पुस्तकालय की शुरुआत की जिसमें किताबें मुफ्त दी जाती हैं और एक महीने के बाद वापस ले ली जाती हैं। इन शिक्षकों ने इसका नाम ‘पुस्तक परब’ दिया है। इसके अंतर्गत शिक्षक जितेन्द्र मकवाणा कहते हैं, “राष्ट्र निर्माण के लिए अच्छे विचार नागरिकों में जरूरी हैं, जो किताबों से ही मिल सकते हैं, पर मोबाइल और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के बीच नई पीढ़ी किताबों से दूर होती जा रही है। ऐसे में उन्हें विचार आया कि नई पीढ़ी को किताबों के पास लाने की जरूरत है।” इस विचार के बाद ‘पुस्तक परब’ की शुरुआत हुई और तीनों अध्यापकों ने जनता से किताबें दान करने को कहा और देखते-ही-देखते उन्हें अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग मिला और पढ़ने की शक्ति को बल प्राप्त हुआ और समाज में बदलाव के संकेत भी नजर आए। भावी पीढ़ियाँ भी पुस्तकों को मित्र समझने लगीं। इस ‘पुस्तक परब’ को जितेन्द्र मकवाणा के साथ राघव डाभी और किशोर परमार का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

पाँच नदियों के प्रदेश पंजाब के मोगा जिले के रणसीकलां गाँव में भी वहाँ के बाशिंदों ने मिलकर महाराजा रणजीत सिंह लाईब्रेरी का शुभारंभ किया। यहाँ ‘किताबें पढ़ने आओ, पैसा कमाओ’ स्कीम के जरिए बच्चों, नौजवानों और बुजुर्गों में पुस्तक पठन को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। इस कार्य को युवा सरपंच प्रीत इंदर पाल सिंह मिंटू

ने किया है, जो स्वयं में नए तरह का प्रयोग है। इस पुस्तकालय का समय शाम पाँच से सात बजे तक है। इस लाईब्रेरी में पढ़ने आने वाले हर वर्ग के व्यक्तियों के लिए एक प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है जिसमें पढ़ी गई पुस्तकों से प्रत्येक वर्ष की 31 मार्च को दस प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उत्तर देने वाले व्यक्ति को उचित इनाम भी देने का प्रावधान है। पुस्तक संस्कृति के संरक्षण और उन्नयन के संदर्भ में युवा सरपंच कहते हैं कि “यह राज्य की पहली लाईब्रेरी होगी जिसमें पढ़ने के लिए पैसा भी दिया जाएगा, जिससे निश्चित ही पंजाब जैसे उर्वरा शक्ति वाले राज्य में पठन-पाठन की संस्कृति बढ़ेगी। युवा शक्ति जो नशे में चूर है, उसको बचाया भी जा सकेगा। फिर से हँसता पंजाब, लहराता पंजाब, खेलता पंजाब जैसे सपनों को साकार किया जा सकेगा।”

उत्तराखंड स्थित ‘गाँव घर फाउंडेशन’ ने पर्यटन और किताबों का अद्भुत मेल करने की ठानी और मणिगुह को ‘पुस्तकालय गाँव’ बना दिया। उनके द्वारा किताबों को मंदिर से जोड़ दिया गया है ताकि लोग किताबों को धर्म से जोड़ने लगे।

उत्तराखंड की सुंदर और सुरम्य पहाड़ियों को यदि इस तरह कला, पुस्तकालय से जोड़ दिया जाए तो प्रदेश का पर्यटन दोगुनी रफ्तार पकड़ लेगा। इसका उदाहरण लेते हुए प्रकृति और किताबों का यह मेल हमारे देश की तस्वीर भी बदल सकता है।

‘गाँव घर फाउंडेशन’ चार लोगों का फाउंडेशन है जिसमें रेखा फाउंडेशन की पहल ‘सूफीनामा’ से जुड़े सुमन मिश्रा, उनकी पत्नी बीना नेगी, आलोक सोनी और राहुल रावत शामिल हैं। बीना नेगी और राहुल रावत उन करोड़ों उत्तराखंडियों में से हैं, जिनके पिता मूलभूत सुविधाओं के अभाव में गाँव से पलायन कर दिल्ली में बस गए। आलोक सोनी मीडिया जगत में जाना-माना नाम है, वह हिंदुस्तान टाइम्स से लंबे समय तक जुड़े रहे।

वर्ष 2022 में इन चारों ने सोचा कि उत्तराखंड के मणिगुह गाँव में पहाड़ के लोगों के लिए क्या काम किया जा सकता है और इस पर उन्होंने शोध शुरू किया। सुमन मिश्रा उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के मणिगुह गाँव की भौगोलिक स्थिति से अच्छी तरह से परिचित हैं। पहाड़ में कोई काम शुरू करना हो तो पर्यटन से जुड़ा कोई भी कार्य सबसे बेहतर होता है। पर्यटकों को मणिगुह की तरफ आकर्षित करने के लिए गाँव घर फाउंडेशन ने महाराष्ट्र के महाबलेश्वर से 17 किलोमीटर दूर स्थित भिलार गाँव का उदाहरण लिया। भिलार गाँव देश के पहले ‘पुस्तक गाँव’ के रूप में प्रसिद्ध है और सुमन मिश्रा की टीम ने मणिगुह को भी भिलार की तरह किसी विशेष थीम पर विकसित करने का विचार किया। विकल्प के रूप में उनके सामने लोकतांत्रिक गाँव, कला गाँव, पुस्तकालय गाँव उपलब्ध थे।

पुस्तकालय गाँव बनाने में यह समस्या थी कि आजकल लोग मोबाइल में इतना डूब गए हैं कि किताब नहीं पढ़ते तो वह पुस्तकालय

क्यों आएँगे, तब उन्होंने सोचा कि पुस्तकालय को गाँव की पहचान से जोड़ दिया जाए तो लोग अपनी पहचान बचाने जरूर आगे आएँगे। इस तरह उन्होंने मणिगुह में एक पुस्तकालय शुरू किया।

पुस्तकालय गाँव में विभिन्न विषयों पर दस हजार से ज्यादा किताबें उपलब्ध हैं और साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए भी अनेक पुस्तकें रखी गई हैं। इन किताबों में कई लेखकों और कवियों के निजी संग्रह भी शामिल हैं जो और कहीं नहीं मिलता। इनमें ललित मोहन थपलियाल, शशि भूषण द्विवेदी, भगवान सिंह और अविनाश मिश्र शामिल हैं। उर्दू साहित्य का भी एक बड़ा संग्रह यहाँ देवनागरी में उपलब्ध है।

गाँव के बच्चों को कंप्यूटर सीखने के लिए पहले अगस्त्यमुनि जाना पड़ता था, लेकिन अब फाउंडेशन ने गाँव में ही कंप्यूटर उपलब्ध करवा दिए हैं। ऑनलाइन अंग्रेजी क्लास और साथ में प्रोजेक्टर पर स्मार्ट क्लास की सुविधा भी पुस्तकालय में उपलब्ध है। पुस्तकालय में बच्चों और बड़ों की भीड़ रहने लगी है। सिर्फ एक पुस्तकालय से किसी गाँव को 'पुस्तकालय गाँव' नहीं कहा जा सकता है। पहाड़ के गाँवों में लोग जंगली जानवरों के डर से जल्दी ही अपने घरों में कैद हो जाते हैं या घर से ज्यादा दूर नहीं जाते। इसी वजह से उन्होंने मणिगुह के आस-पास के क्षेत्रों में पुस्तकालय मंदिर बनाए। ये पुस्तकालय मंदिर अस्पताल, स्कूल और मंदिर जैसी जगहों के आस-पास रखे गए हैं। इनकी छत फाइबर से बनी है और इनमें कुछ किताबें रख दी गई हैं। इन पुस्तकालय मंदिरों की चाबी लड़कियों के हाथ में दी गई है। पुस्तकालय को मंदिर से जोड़ने की वजह से लोग अब किताबों को धर्म से जोड़कर देखने लगे हैं और उनका झुकाव किताबों की तरफ बढ़ गया है।



इसी अनुभव से उन्होंने एक प्रयोग किया, पर्यटन के साथ किताब और गाँव में सबका विकास। सुमन मिश्रा ने गाँववालों को अपने आस-पास की सुंदर पहाड़ियों में घूमने आए लोगों के लिए 'होम स्टे' खोलने के लिए प्रेरित किया। इन पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए ही इस जगह को पुस्तकालय गाँव के तौर पर विकसित करने का सुझाव दिया। गाँव के ही कुछ लोगों की समिति इस 'होम स्टे' का संचालन करती है। गाँववालों को यह न लगे कि पुस्तकालय सिर्फ 'गाँव घर फाउंडेशन' का है, इसके लिए उनसे कहा गया कि 'होम स्टे' से मिलने वाले किराए का कुछ हिस्सा पुस्तकालय के लिए भी दिया जाए ताकि वह गाँववालों का पुस्तकालय भी रहे। इस तरह गाँव के लोग अब इतने जागरूक हो चुके हैं कि उनके आर्थिक विकास की परिभाषा में पुस्तकालय का विकास भी शामिल है।

पंजाब के होशियारपुर में कोरोनाकाल के समय में दो ई-रिक्शा को लाइब्रेरी रूप में तैयार किया गया जिसमें लगभग 600 किताबें रखकर पेट्रोल पंप पर खड़ा किया गया था। वहाँ आने वाले सभी पुस्तक प्रेमियों को निशुल्क किताबें पढ़ने के लिए दी गईं। पुस्तक देने के कुछ नियम हैं, जैसे—पुस्तक देते समय पुस्तक प्रेमी का आधार कार्ड, 200 रुपये सिक्क्योरिटी तथा 25 दिन बाद किताब को वापस करने का प्रावधान रखा गया है। इस पुस्तकालय की पंच लाइन है 'किराए पर लो, पढ़ो और लौटाओ'। इस पुस्तकालय को संचालित करने का श्रेय अनिल सूद जी को जाता है जो अपने पेट्रोल पंप पर ही यह लाइब्रेरी रखते हैं। उसके अलावा जिले के कई स्थानों पर यह ई-रिक्शा जाता रहता है और पाठकों को लाभ पहुँचाता है। इस स्कीम की फाउंडर सना कौशल गुप्ता जी हैं।

ऊँट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है। कुछ ऐसा ही कारनामा किया है संयुक्त निदेशक जोधपुर के प्रेमचंद सांखला जी ने। उन्होंने रेतीले जगह पर जहाँ आवागमन का कोई साधन नहीं था, वहाँ पर ऊँट के माध्यम से किताबें ले जाकर छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया, जिसका लाभ वहाँ के बच्चों को मिल रहा है। वर्तमान समय में ऐसे रेगिस्तानी स्थानों पर चल लाइब्रेरी की माँग बढ़ रही है।

इस पुस्तकालय का स्लोगन है 'रूम टू रीड'। इस लाइब्रेरी में लगभग 1500 किताबें हैं जिन्हें ऊँट पर लादकर ले जाया जाता है।

बिहार सरकार ने भी 'दीदी लाइब्रेरी' की शुरुआत की है जिसके माध्यम से गरीब और मजदूरों के बच्चों को पढ़ाने का संकल्प है तथा उन्हें पढ़ने के लिए मुफ्त में किताबें मुहैया कराने का भी निर्णय लिया गया है। 'दीदी लाइब्रेरी' से अनेक छात्राएँ लाभान्वित हो रही हैं। विद्वान भी सरकार की इस पहल की प्रशंसा कर रहे हैं।

लाइब्रेरी शुरू करना मुश्किल नहीं है, उसे सुचारु रूप से चला पाना असल चुनौती होती है। कई पुस्तकालय इस वजह से बंद हो जाते हैं कि वहाँ लाइब्रेरियन की व्यवस्था नहीं है। स्थानीय लोगों को साथ लेकर और उनकी समस्याओं का हल निकालकर कोई पुस्तकालय बनाया जाए तो स्थानीय लोगों की रुचि उस तरफ बढ़ती है। इंस्टाग्राम, फेसबुक रील्स के इस दौर में किताबें तो रखी जा सकती हैं, लेकिन पाठक तैयार करना असल चुनौती है। भारतीय गाँवों की चुनौतियाँ वैसे ही कम नहीं होती हैं। कई ग्रामीण इलाकों तक तो सड़क भी नहीं पहुँची होती है। यह तय है कि भविष्य में प्रकृति और किताबों का यह मेल देश के गाँवों की तस्वीर जरूर बदल देगा। इस तरह के प्रयास अवश्य सफल होंगे तथा समाज को पुस्तक और रोजी-रोटी से भी जोड़ेगा तो निश्चित ही गाँव से पलायन रुकेगा।





# अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य

अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य पर विवेचन से पूर्व अपनी भाषा बोध के साथ-साथ दूसरी भाषा का बोध समुचित होना आवश्यक है, क्योंकि दूसरी भाषा के बोध के बिना तुलनात्मक साहित्य का विवेचन ठीक से नहीं हो सकता है। इसलिए अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा में उपलब्ध साहित्य में निहित भावादृश की समानता का होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, मध्यकालीन संत कबीर, रविदास, दादू आदि की विचारधारा 19वीं शती के बाउल फकीर लाल शाह, सूरदास और गुजराती के नरसिंह मेहता, आधुनिक काल में आधुनिक बांग्ला गद्य के पुरोधे ईश्वरचन्द्र गुप्त से



**डॉ. रामचंद्र राय**

जन्म : 02 अगस्त, 1949

शिक्षा : पी-एच.डी.।

संप्रति : विश्वभारती, शांतिनिकेतन में राजभाषा हिंदी के प्रथम प्रभारी व शांतिनिकेतन हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक सचिव के रूप में कार्यरत।

लेखन : बांग्ला एवं हिंदी के आधुनिक गद्य के निर्माता ईश्वरचंद्र गुप्त तथा भारतेन्दु हरिश्चंद्र पर तुलनात्मक शोध कार्य। बांग्ला से हिंदी में अनुवाद कार्य व तुलनात्मक विषयों पर लेखन कार्य एवं पुस्तकों का प्रकाशन। मधुबनी की लोककला पर अन्वेषण-विश्लेषण, सर्वेक्षण एवं लेखन कार्य।

संपर्क : मोबाइल— 9932825660

ईमेल— drrcroy@gmail.com

आधुनिक हिंदी गद्य के पुरोधे भारतेन्दु हरिश्चंद्र, तमिल के सुब्रमण्यम स्वामी के साथ हिंदी के मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं से की जा सकती है जो एक-दूसरे की विचारधारा से मेल खाती है। इस हेतु एक भाषा की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से दूसरी भाषा के साहित्य को समझा जा सके। इस भाषा के साहित्य को समझने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। संस्कृत में 'वद्' धातु है जिसका अर्थ होता है—'कहना' या 'बोलना'। इसी प्रकार अंग्रेजी के ट्रांसलेशन का 'ट्रांस+लेशन' है।

'वद्' धातु के साथ उपसर्ग 'अनु' जोड़ दिया गया है। 'अनु' का अर्थ होता है—'पुनः कहना' या 'बोलना'। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का अर्थ हुआ 'पुनः कहना' या 'बोलना'। वैसे प्रत्येक मानव जब से बोलना आरंभ करता है तब से वह अनुवादक स्वतः हो जाता है। बच्चे घर में अपने परिवारवालों के साथ जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उससे

अलग भाषा का प्रयोग घर में किसी अतिथि के आगमन पर करता है। तब वह एक ऐसी भाषा का प्रयोग करने लगता है जो शिष्ट होती है। इस प्रकार मानव जन्म से ही अनुवादक होता है। साहित्य की एक भाषा की तुलना अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा के साथ की जा सकती है। इसलिए एक भाषा के साहित्य की तुलना दूसरी भाषा के साहित्य के साथ करने के लिए मूल भाषा का बोध होना आवश्यक है। अर्थात् जिस भाषा में मूल रचना है, उस भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। यही नहीं, अनुवादक जिस भाषा की मूल रचना को अपनी भाषा में अनुवाद करना चाहता है, तब उसे उस भाषा का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है। यही नहीं, जिस विषय के साहित्य का अनुवाद करना चाहता है, उस विषय के साहित्य का सम्यक ज्ञान होना भी आवश्यक है। अंत में 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' अर्थात् अनुवाद करने का अभ्यास भी आवश्यक है।

सामान्यतः अनुवाद दो ही प्रकार के होते हैं—साहित्यिक अनुवाद और भावानुवाद। साहित्यिक अनुवाद, शासकीय क्रियाकलाप के लिए किया जाता है। शासकीय क्रियाकलापों के अंतर्गत नियम, अधिनियम, अध्यादेश, सूचना आदि से जुड़ी होती है। इसलिए प्रत्येक

“ रचनाकार अपनी रचनाओं में जिस अनुभव को व्यक्त करता है, वह सामान्य अनुभव न होकर विशिष्ट और अधिकांशतः वैयक्तिक अनुभव होता है। जो सृजनकार अपनी रचनाओं में सामान्य अनुभव को व्यक्त करते हैं, वे कभी प्रतिष्ठित नहीं होते हैं और शीघ्र ही भुला दिए जाते हैं। सृजनकर्ता अभिधा शक्ति पर निर्भर न करके लक्षणा और व्यंजना शक्ति पर अधिक से निर्भर करता है। सृजनकर्ता एक प्रकार से शब्दों को नई अर्थ-व्यंजना और नया संदर्भ प्रदान करता है। इसलिए साहित्यिक कृतियों के अनुवादक को अपने शब्द का स्वयं निर्माण करना पड़ता है। जो अनुवादक ऐसा नहीं करते हैं, वे सफल अनुवादक की श्रेणी में नहीं आते हैं। ”

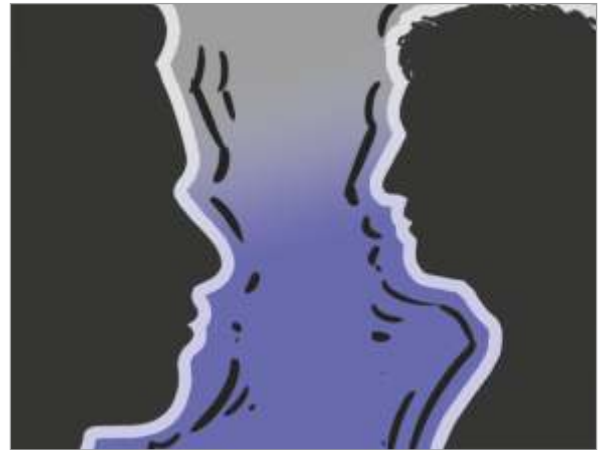
शब्द का शाब्दिक अनुवाद होना आवश्यक होता है। अगर शासकीय कार्य में आने वाले शब्दों को ज्यों-का-त्यों प्रतिशब्द अनुवाद में नहीं दिया जाए तब अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है। इस हेतु पारिभाषिक शब्दावली का चयन किया जाता है। वैसे अंग्रेजी के एक शब्द 'Director' को लेते हैं। उत्तर भारत की भाषाओं में निदेशक/निर्देशक शब्द का प्रयोग किया जाता है, किंतु उसी शब्द का प्रयोग मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों में संचालक के रूप में किया जाता है। झारखंड के कार्यालयों में आमंत्रण के लिए 'आहूत', Release के लिए 'विरमित' शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। हमारे देश में मुगल शासकों के बाद अंग्रेज आए। वे भारत में अपनी संस्कृति के साथ-साथ अपनी भाषा भी लाए जो अभी तक शासकीय कार्य, आम बोलचाल के प्रयोग में ज्यों-का-त्यों प्रयोग में आ रहे हैं। यद्यपि शासकीय प्रयोग के लिए भारतीय भाषाओं के शब्दों का चयन किया गया है, किंतु उन शासकों के द्वारा प्रचलित शब्दों का प्रयोग शासकीय कार्यों में अधिक-से-अधिक होता है। उदाहरणस्वरूप, न्यायालय में प्रचलित शब्दों को देखा जा सकता है—अदालत, कचहरी, वकील, मुख्तार, मुहरील, दस्तावेज, कबाला, अमीन, मेज, कुर्सी, सोफा, टिकट, पेंशन, रिटायरमेंट, रेल, स्टेशन, पावर हाउस इत्यादि। ये साहित्यिक अनुवाद के शब्द समूह हैं।

भावानुवाद, सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद भाव से किया जाता है। इस हेतु अनुवादक को सृजनात्मक साहित्य की स्रोत भाषा का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है इसलिए सृजनात्मक साहित्य का

अनुवाद करना जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना कठिन भी होता है। साहित्य में मानव के इंद्रियबोध, भाव, विचार आदि इतने सूक्ष्म और अमूर्त होते हैं कि उन्हें शब्दबद्ध करना प्रत्येक रचनाकार के लिए चुनौती का कार्य होता है, इसलिए इस चुनौती का सामना करने के लिए वह पूरी शक्ति को झोंक देता है और भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता का अधिक-से-अधिक प्रयोग करता है। इसलिए शब्दानुवाद में प्रत्येक शासकीय शब्दों के लिए उसके अनुकूल शासकीय शब्दों का प्रयोग होता है, किंतु साहित्य के अनुवाद के लिए शब्दानुवाद से कार्य नहीं चल सकता है। साहित्यिक रचनाओं के जिन अनुवाद को सफल अनुवाद कहा जाता है, वे अधिकांशतः भावानुवाद ही होते हैं, अर्थात् अनुवाद के माध्यम से पुनः सृजन ही होते हैं।

रचनाकार अपनी रचनाओं में जिस अनुभव को व्यक्त करता है, वह सामान्य अनुभव न होकर विशिष्ट और अधिकांशतः वैयक्तिक अनुभव होता है। जो सृजनकार अपनी रचनाओं में सामान्य अनुभव को व्यक्त करते हैं, वे कभी प्रतिष्ठित नहीं होते हैं और शीघ्र ही भुला दिए जाते हैं। सृजनकर्ता अभिधा शक्ति पर निर्भर न करके लक्षणा और व्यंजना शक्ति पर अधिक से निर्भर करता है। सृजनकर्ता एक प्रकार से शब्दों को नई अर्थ-व्यंजना और नया संदर्भ प्रदान करता है, इसलिए साहित्यिक कृतियों के अनुवादक को अपने शब्द का स्वयं निर्माण करना पड़ता है। जो अनुवादक ऐसा नहीं करते हैं, वे सफल अनुवादक की श्रेणी में नहीं आते हैं।

साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में अनुवादक को मूल रचना के भाव को इस प्रकार रखना चाहिए जो मूल रचना के समानधर्मा हो। इसलिए साहित्य के अनुवादक को इस प्रकार से अनुवाद करना आवश्यक है जिससे उनको विशिष्ट अनुवादक की श्रेणी में ला सके।



इस हेतु साहित्यिक कृतियों के अनुवादक को स्रोत या मूल भाषा के शब्दों का ज्ञान अत्यंत ही आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक भाषा के अपने रूढ़ शब्द, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि होते हैं। उन रूढ़ शब्दों से परिचित होना आवश्यक होता है। अगर इसके लिए प्रतिशब्द अनूदित

भाषा में न हो तब उन शब्दों को ज्यों-का-त्यों रख देना चाहिए, नहीं तो उन शब्दों का लालित्य बोध समाप्त हो जाएगा। उदाहरणस्वरूप, मैथिली भाषा का एक शब्द 'भूरुकवा' और बांग्ला भाषा का एक शब्द 'खुरो' उल्लिखित भाषाओं के रूढ़ शब्द हैं, जिनका अनुवाद सटीक नहीं हो सकता है। इन शब्दों को अनुवाद में ज्यों-का-त्यों रखते हुए, इनका अर्थ अपनी भाषा में पाद टिप्पणी में विस्तार से समझाया जा सकता है।



मैथिली भाषा का 'भूरुकवा' शब्द बहुत ही रूढ़ शब्द है। इसका प्रतिशब्द नहीं हो सकता है। फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' उपन्यास में 'भूरुकवा' शब्द का प्रयोग किया गया है। बिहार का मिथिलांचल, अत्यंत ही ग्रामीण क्षेत्र है। वहाँ के लोग अपने कृषि कार्य से उत्पन्न अन्न से ही जीवनयापन करते हैं। ग्रामीण दिनभर शारीरिक परिश्रम करने के बाद थके-माँदे रहते हैं, इसलिए संध्या होते ही रात्रि का भोजन करने के बाद विश्राम करने के लिए चले जाते हैं। उनके पास समय के बोध के लिए घड़ी भी नहीं रहती है, इसलिए रात-दिन मिलाकर 24 घंटे को प्रति तीन घंटे में बाँटकर एक प्रहर से संबोधित करते हैं। चौबीस घंटे को आठ प्रहर में विभाजित करते हैं। रात्रि के तीन प्रहर बीत जाने के बाद, आकाश में पश्चिम की दिशा में एक तारे का उदय होता है जिसे 'भूरुकवा का तारा' कहा जाता है। इस तारे के उगने से ग्रामीण को चौथे प्रहर का बोध होने लगता है कि अब थोड़े ही समय में सुबह होने वाली है। इसलिए भूरुकवा के तारे के उगने के बाद, ग्रामीण अपने दैनिक कार्य का आरंभ करने में लग जाते हैं। इसी प्रकार बांग्ला भाषा का एक रूढ़ शब्द 'खुरो' है जिसे प्यार से काका, चाचा आदि के लिए संबोधित करते हैं। इस शब्द का प्रयोग मोहित चट्टोपाध्याय ने अपने बांग्ला नाटक 'जलपीपी' में किया है। इस नाटक की कथावस्तु बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के सुंदरवन क्षेत्र के रहने वालों लोगों की है। इस क्षेत्र के अधिकांश लोग अपनी जीविका का निर्वाह मछली पकड़ने से ही करते हैं। मैंने इस नाटक का अनुवाद हिंदी में 'पनडुब्बी' शीर्षक से किया था जो साहित्य अकादेमी

की हिंदी पत्रिका में प्रकाशित भी हुई है। बांग्ला में 'खुरो' बहुत आदर-सम्मान से संबोधित किया जाता है। हिंदी में इसका अर्थ काका, चाचा आदि होता है। मैंने अपने हिंदी अनुवाद में 'खुरो' शब्द का प्रति शब्द काका, चाचा आदि न देकर ज्यों-का-त्यों बांग्ला का 'खुरो' शब्द ही रख दिया था। क्योंकि 'खुरो' शब्द बांग्ला का रूढ़ शब्द है। अगर मैं अनुवाद में इसके स्थान पर 'काका' या 'चाचा' शब्द रख देता तब इसका लालित्य बोध क्षुण्ण हो जाता, इसलिए मैंने ज्यों-का-त्यों 'खुरो' शब्द ही रख दिया था। मेरे इस अनुवाद को प्रकाशित होने से पूर्व समकालीन भारतीय साहित्य के संपादक ने मेरे इस अनुवाद को पुनरीक्षण के लिए एक ऐसे पुनरीक्षक के निकट भेजा था जो मूलतः हिंदी भाषी हैं, किंतु उपाधि से अपने को बांग्ला भाषी कहते हैं। उन्होंने अपने पुनरीक्षण के दौरान 'खुरो' शब्द का अर्थ लंगड़ा, अपंग समझा और 'खुरो' शब्द को काटकर लंगड़ा रख दिया। फलतः संपादक महोदय ने मेरे अनुवाद को लौटा दिया। उन्होंने अपनी टिप्पणी में लिखा कि यह अनुवाद सटीक नहीं हुआ है। इसके बाद मैंने संपादक महोदय को लिखा कि आपने जिस पुनरीक्षक को मेरे अनुवाद को पुनरीक्षण के लिए भेजा था, उनको बांग्ला का सम्यक ज्ञान नहीं है। संपादक महोदय को विस्तार से समझाने के बाद उन्होंने मेरे इस अनूदित नाटक को 'पनडुब्बी' के नाम से ज्यों-का-त्यों समकालीन भारतीय साहित्य के अंक में प्रकाशित किया। इसलिए साहित्य का अनुवाद करने वालों को साहित्य का अनुवाद करने से पूर्व उस भाषा के शब्दों का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है।



रचनाकार अपने साहित्यिक कृतियों के सृजन करते समय अपने आस-पास के प्रचलित लोकोक्तियों, मुहावरों, कहावतों आदि का प्रयोग करते हैं, क्योंकि लोकोक्तियों का उद्गम लोक से हुआ है जिसे सृजनकार अपनी रचना में लालित्यबोध लाने के लिए करते हैं। इसलिए अपनी-अपनी भाषाओं में सृजनकार लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। अनुवादक को अनूदित भाषा में प्रयुक्त लोकोक्तियों,

मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक-दो लोकोक्तियों, मुहावरों आदि को देखा जा सकता है। अंग्रेजी में 'A drop of water in the ocean' है, इसका अनुवाद हिंदी में इस प्रकार है—ऊँट के मुँह में जीरा का फोरण। इसी प्रकार बांग्ला में एक लोकोक्ति है 'रथ देखा कोला बेचा'। इसका हिंदी अनुवाद 'एक पंथ दो काज' है। इसी प्रकार बांग्ला का 'नाच न जाने उठुन बेंका' का हिंदी अनुवाद 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' है। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि मैथिली में जितनी लोकोक्तियाँ हैं, उतनी लोकोक्तियाँ अन्य भाषाओं में हैं या नहीं, मुझे इसकी जानकारी नहीं है। मैथिली की एक-दो लोकोक्तियाँ उदाहरणस्वरूप दी जा रही हैं—'माय कराय कुटाऔन पिसाउन बेटा के नाम दुर्गा दत्त बाबू' अर्थात् गरीब के रहने के बावजूद अमीरी दिखाना। 'घर पर खर नेय कान पर बीड़ी' अर्थात् खाने-पीने के लिए कुछ नहीं, किंतु बाबूगिरी दिखाना इत्यादि।

मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें आदि सभी अनूदित भाषा में नहीं मिलती हैं, विशेषकर अंग्रेजी में, क्योंकि भारतीय भाषाओं में शब्दालंकार और अर्थालंकार का विधान है, किंतु यूरोपीय भाषा में नहीं है। इसका कारण यह रहा है कि भारतीय साहित्य की अत्यंत ही दीर्घ परंपरा रही है। भरत मुनि ने केवल चार अलंकारों की बात कही थी, किंतु आजकल भारतीय साहित्य में शताधिक अलंकारों का विधान है, क्योंकि भारतीय अलंकार प्रिय होते हैं, अपने जीवन के हर पक्ष को सजा-सँवारकर रखते हैं। इसलिए भारतीय भाषाओं के साहित्य को आर्य भाषाओं में अनुवाद करने पर भारतीय अलंकारों के सौंदर्य की रक्षा नहीं कर पाते हैं। इसके बावजूद प्रत्येक भाषा में अपना सौंदर्यबोध और चमत्कार अपने ढंग का होता है।

“ अनुवादक जिस भाषा के साहित्य का अनुवाद करते हैं, उनको उस भाषा के स्रोत शब्द का ज्ञान आवश्यक है। मैं मातृभाषा की भाँति बांग्ला बोलता हूँ, किंतु कभी-कभी कविता को पढ़ते समय इसके रूढ़ शब्दों को समझने में असुविधा हो जाती है। इसलिए मेरा विचार है कि साहित्य की अन्य विधाओं में अनुवाद करते हैं, वह ठीक है, किंतु कविताओं का अनुवाद, अगर कवि जीवित हैं तब उनके निकट जाएँ एवं उनसे कविता के संबंध में विचार-विमर्श करें। हिंदी के जयशंकर प्रसाद की कामायनी के कई अनुवाद अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, किंतु कोई भी अनुवाद विश्व मंच पर स्वीकृत नहीं हुआ है, क्योंकि कामायनी के भाव, जयशंकर प्रसाद ही समझते थे। ”

साहित्य की अन्य विधाओं में कवि विधा का अनुवाद सहज कार्य नहीं होता है, क्योंकि कवि ने किस मुहूर्त में अपनी कविता की रचना की है और उनके कहने का तात्पर्य क्या रहा है वह कवि ही

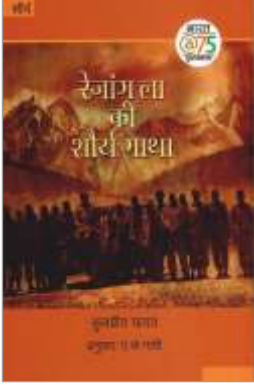
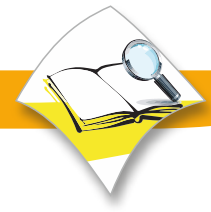
कह सकते हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ने अपने काव्य ग्रंथ गीतांजलि, खेया और नवैद्य काव्य ग्रंथों से एक सौ तीस पदों का चयन करने के



बाद 'songs of offerings' नाम से अंग्रेजी में खुद अनुवाद किया था जिसकी भूमिका डब्ल्यू वी यीट्स, वीटर्नीट्ज़ आदि कवि-मनीषियों ने रवीन्द्रनाथ के अंग्रेजी अनुवाद को उपयुक्त शब्दों से संशोधन किया। फलस्वरूप उन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार सन् 1913 में मिला जिसका भारतीय नामकरण 'गीतांजलि' हुआ, क्योंकि इसमें अधिकांश पद बांग्ला गीतांजलि के ही हैं। इसके बाद हिंदी में सन् 1914 से लेकर आजतक गीतांजलि के अनुवाद हो रहे हैं। इन अनुवादों में कौन-से अनुवाद अंग्रेजी के 'songs of offerings' से समानता रखते हैं, कहा नहीं जा सकता है। अनुवादक जिस भाषा के साहित्य का अनुवाद करते हैं, उनको उस भाषा के स्रोत शब्द का ज्ञान आवश्यक है। मैं मातृभाषा की भाँति बांग्ला बोलता हूँ, किंतु कभी-कभी कविता को पढ़ते समय इसके रूढ़ शब्दों को समझने में असुविधा हो जाती है। इसलिए मेरा विचार है कि साहित्य की अन्य विधाओं में अनुवाद करते हैं, वह ठीक है, किंतु कविताओं का अनुवाद, अगर कवि जीवित हैं तब उनके निकट जाएँ एवं उनसे कविता के संबंध में विचार-विमर्श करें। हिंदी के जयशंकर प्रसाद की कामायनी के कई अनुवाद अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, किंतु कोई भी अनुवाद विश्व मंच पर स्वीकृत नहीं हुआ है, क्योंकि कामायनी के भाव, जयशंकर प्रसाद ही समझते थे। अनुवादक नहीं समझ पा रहे हैं।

अंत में मेरा यह विचार है कि तुलनात्मक साहित्य पर विवेचन से पूर्व जिस भाषा के साहित्य के दूसरी भाषा के साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन करें तब तुलनीय साहित्य की भाषा को समझना आवश्यक है। इस हेतु अगर तुलनीय साहित्य के स्रोत भाषा से अच्छी तरह से अवगत नहीं हों तब अनूदित साहित्य बहुत हद तक सहायता पहुँचा सकता है।





समीक्षक : ज्योति यादव

लेखक : कुलप्रीत यादव

अनुवादक : ए.के. गांधी

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,  
भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 185

मूल्य : रु. 290/-

## रेजांग ला की शौर्य गाथा

» आमतौर पर सैन्य संघर्ष पर बेहद कम पुस्तकें लिखी जाती हैं। इस दिशा में 'रेजांग ला की शौर्य गाथा' एक अभिनव कथा है। भारत-चीन युद्ध (सन् 1962) के समय भारतीय सेना की एक बहादुर सैन्य टुकड़ी के मात्र 120 जवानों ने सुविधा और संसाधनों के अभाव में भी किस तरह मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह न करते हुए देश पर फ़ना होने का निश्चय कर लिया था, यह पुस्तक उसी संघर्ष का जीवंत दस्तावेज़ है। कुलप्रीत यादव की 'रेजांग ला

की शौर्य गाथा' पुस्तक मूल रूप से अंग्रेजी में 'द बैटिल ऑफ़ रेजांग ला' का हिंदी अनुवाद है, जो ए.के. गांधी ने किया है।

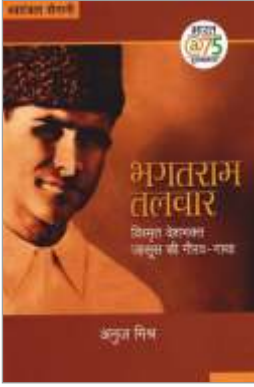
इस पुस्तक के लेखक कुलप्रीत यादव स्वयं भारतीय नौ सेना के उच्च अधिकारी रहे हैं, अतः उन्होंने सेना के दुर्लभ साक्ष्यों और तथ्यों को इकट्ठा कर, इस युद्ध में शामिल कुछ जीवित सैनिकों और उनके परिजनों से साक्षात्कार कर पुस्तक को एक शानदार रूप दिया है। कुल 12 अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक के सभी अध्याय कुल 12 तिथियों में विभाजित हैं, जिसका प्रथम अध्याय '29 सितंबर, 1962; बारामुला, जम्मू व कश्मीर' नाम से है तो अंतिम अध्याय '18 नवंबर, 1962, सायं चार बजे, चीन की सीमा में' से समाप्त होता है। लद्दाख स्थित 'रेजांग ला' का युद्ध विश्व के दुर्गम युद्धों में से एक था। 13 कुमाऊँ रेजिमेंट की चार्ली कंपनी ने 18 नवंबर, 1962 को अपने से कई गुना अधिक संख्या एवं अत्याधुनिक हथियारों से लैस चीनी आक्रमण का सामना किया। कुल 120 सैनिकों की इस टुकड़ी का नेतृत्व मेजर शैतान सिंह कर रहे थे। इन सैनिकों के पास ब्रिटिश सरकार के छोड़े गए पुराने हथियारों, सीमित मात्रा में गोला-बारूद के साथ भयानक ठंड से मुकाबला करने के लिए उपयुक्त वस्त्र और रसद सामग्री तक का अभाव था। इन सैनिकों के पास अगर कुछ था तो वह था 'देश के प्रति न्यौछावर होने का जज्बा'। इसीलिए सैनिकों ने 'दादा किशन देव की जय' बोलते हुए 'अंतिम सिपाही, अंतिम गोली' तक लड़ने की कसमें खाईं। लेफ्टिनेंट जनरल के. बहादुर सिंह (सेवानिवृत्त), भूतपूर्व जी.ओ.सी.-इन-सी, केंद्रीय कमान ने अपने वक्तव्य में कहा था कि "मुझे इतिहास के पृष्ठों में इस तरह के किसी और युद्ध के बारे में ज्ञात नहीं है।"

पुस्तक के प्रथम अध्याय में बताया गया है कि कैसे बहुत ही सूक्ष्म समय में 13 कुमाऊँ बटालियन को बारामुला से लेह स्थानांतरित करने का आदेश दिया गया। दूसरे अध्याय में लेह के मौसम के बारे में जानकारी दी गई है। इसे समझने के लिए कंपनी कमांडर द्वारा सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा गया है कि "यहाँ पहली समस्या जिसका आप सामना करेंगे, वह है जीवित रहना; शत्रु से लड़ना उसके बाद आएगा।" फिलहाल 120 सैनिकों की यह टुकड़ी, जिसके पास इस तरह के युद्ध का कोई भी अनुभव नहीं था, वह इस परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार थी।

पुस्तक के अंतिम चार अध्याय युद्ध के अंतिम दिन 18 नवंबर, 1962 पर हैं, जिनमें चीनी सेना द्वारा किए गए लगातार हमलों पर चर्चा है। लगभग 3000 चीनी सैनिकों द्वारा पूरे चुशुल घाटी पर लगातार हमले जारी थे, लेकिन 13 कुमाऊँ बटालियन के जवान किसी भी कीमत पर हार मानने को तैयार नहीं थे। अंतिम समय में हथियारों के अभाव में हट्टे-कट्टे और कुश्ती, पहलवानी में निपुण गॉव की मिट्टी में पले-बढ़े जवानों ने चीनी सैनिकों को पटक-पटक कर मारा। इसके अलावा उन्होंने राइफल के बैनटों से भी दुश्मन को मार गिराया। बहरहाल एक प्रशिक्षित और विशाल सेना के आगे वैयक्तिक शौर्य कितने समय तक ठहर सकता था? इस युद्ध में भारत की मात्र एक बटालियन ने चीन के लगभग 3000 सैनिक मार गिराए। परिणामस्वरूप चीन का हौसला टूट गया और उसने एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी। चार्ली कंपनी के 120 बहादुर सैनिकों में से 110 ने मृत्यु का वरण किया, लेकिन पराजय का नहीं। उन्होंने अपना बलिदान देकर चीन को वहीं रोक दिया। चीनियों को भी समझ में आ गया था कि इसके आगे जाना ठीक नहीं है।

इस संग्रहणीय पुस्तक में लेखक ने बेहद रोमांचकारी और सजीव ढंग से एक युद्ध की दास्तों को लोगों के सामने रखा है। जीवित सैनिकों के एवं अन्य सैनिकों के परिजनों से साक्षात्कार और उनके चित्रों को पिरोकर पुस्तक को मोहक आकार दिया है। लेखक आशा करता है कि लद्दाख में बने रेजांग ला शौर्य स्मारक पर इस पुस्तक के पाठक देश के वीर जवानों को श्रद्धांजलि देने जरूर जाएँ।

भारतीय सेना के किसी एक बटालियन को एक युद्ध में इतने सैन्य पुरस्कार अब तक के इतिहास में नहीं मिले हैं जितने इस बटालियन को मिले हैं। मेजर शैतान सिंह को सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से, जबकि उसी बटालियन के आठ अन्य सैनिकों को वीर चक्र, चार को सेना मेडल और एक को मेंशन इन डिस्पैच का सम्मान दिया गया। 13 कुमाऊँ के कमांडिंग ऑफिसर (सीओ) को अति विशिष्ट सेवा मेडल से अलंकृत किया गया।



समीक्षक : राजेंद्र भट्ट

लेखक : अनुज मिश्र

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,

भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 172

मूल्य : रु. 245/-

## भगताराम तलवार : विस्मृत देशभक्त जासूस की गौरव-गाथा

प्रस्तुत पुस्तक एक अदम्य देशभक्त, साहसी और चतुर जासूस भगताराम तलवार की प्रेरक जीवन-गाथा है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौर में अग्रणी जन-नायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दूसरी विदेशी ताकतों की मदद से ब्रिटिश शासन से देश को मुक्त कराने की मुहिम शुरू की। नेताजी कोलकाता में अपने घर से नज़रबंदी के दौरान फरार होकर देश के पश्चिमोत्तर

सीमांत में स्थित पेशावर पहुँच गए। यहीं से संभावित विदेशी मदद की तलाश में वह गुप्त रूप से ब्रिटिश भारत की सीमा पार कर काबुल (अफगानिस्तान) पहुँचे और फिर वहाँ स्थित अनेक विदेशी दूतावासों की गुप्त-चुप मदद से तत्कालीन सोवियत संघ से होते हुए जर्मनी और फिर जापान पहुँचे। फिर नेताजी ने आज़ाद हिंद फौज के जरिए ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ शानदार संघर्ष किया।

नेताजी की यह गौरव-गाथा तो देशभर में जानी-पहचानी है, लेकिन नेताजी को पूरी गोपनीयता के साथ ब्रिटिश भारत की सीमा पार कराकर, पेशावर से अफगानिस्तान में जलालाबाद और काबुल पहुँचाने वाले, वहाँ उनके रहने-खाने का बंदोबस्त करने वाले और ब्रिटिश-विरोधी दूतावासों से निरंतर संपर्क कर, उनकी मदद से उनकी जर्मनी तक निर्विघ्न यात्रा सुनिश्चित कराने वाले भगताराम तलवार की कहानी देश में अनजानी-सी ही रह गई।

यह पुस्तक इस देशभक्त और बेहद कार्यकुशल जासूस की गाथा को हिंदीभाषी समुदाय तक पहुँचाने का प्रशंसनीय प्रयास है, लेकिन भगताराम तलवार और उनके परिवार की यह गाथा मात्र नेताजी से जुड़े इसी प्रसंग तक सीमित नहीं है। इसके अनेक अनजाने गौरवपूर्ण अध्यायों से भी यह पुस्तक हमें परिचित कराती है।

पुस्तक में नेताजी के पेशावर आने के बाद से उनके गुप्त-चुप तरीके से काबुल (अफगानिस्तान) जाने-रहने, सोवियत संघ, जर्मनी और इटली के दूतावासों से संपर्क के प्रयासों और अंततः सोवियत संघ के रास्ते जर्मनी चले जाने और फिर भगताराम द्वारा कोलकाता में सुभाष बाबू के परिवार तक यह सूचना पहुँचाने का विस्तृत विवरण है। इस प्रयास में भारतीय उद्यमी उत्तमचंद्र मल्होत्रा और अन्य अनेक देशभक्तों का भी योगदान रहा।

इस पुस्तक से पता चलता है कि यह काम कितना जोखिम भरा था; कैसे-कैसे खतरे, आशाएँ-निराशाएँ इस दौर में सामने आईं; कैसे नेताजी ने इस दौर में एक गूँगे-बहरे पठान का वेश बनाए रखा और हर बार कितनी चतुरता, धैर्य और साहस से भगताराम ने इन मुश्किलों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए, नेताजी को अफगानिस्तान के पार सोवियत सीमा के अंदर पहुँचा दिया।

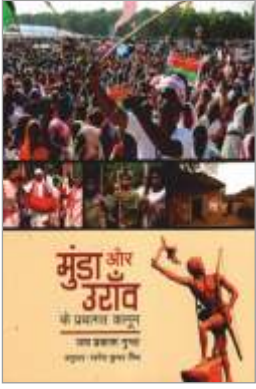
भगताराम को बार-बार रणनीतियाँ बदलनी पड़ीं। मदद ब्रिटिश-विरोधी ताकतों से ही मिल सकती थी। समाजवादी नीतियों के प्रति नेताजी के सहज आकर्षण के चलते, शुरू में प्रयास सोवियत दूतावास से मदद लेने और उनका आश्रय लेते हुए सोवियत संघ पहुँचने के थे।

भाषाई दिक्कतों से सोवियत दूतावास से संपर्क करने के अनेक प्रयास असफल रहे। जो प्रयास थोड़ा आगे बढ़े भी, तो दूतावास का रवैया उत्साही नहीं था। दूतावासों के चक्कर लगाना शक को न्योता देना था और एक-एक दिन जोखिम भरा था। आखिरकार जर्मनी और इटली के दूतावासों के जरिए मदद मिली। कई बार आसरा बदलना पड़ा।

अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक समीकरणों के नाटकीय बदलावों ने काम और जटिल कर दिया। विश्वयुद्ध के शुरू के दिनों में सोवियत संघ युद्ध में सीधे शामिल नहीं था और जर्मनी से उसकी मित्रता थी। इसीलिए सुभाष बाबू सोवियत संघ से जर्मनी जा सके। सुभाष बाबू के अभियान के साथ तब समर्पित और साहसी भारतीय कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग था, क्योंकि सुभाष बाबू खुद भी कांग्रेस के समाजवादी खेमे के प्रमुख नेता रहे थे।

सन् 1942 में जर्मन हमले के बाद, सोवियत संघ के ब्रिटेन के नेतृत्व वाले मित्र देशों के पक्ष में और जर्मनी-इटली के विरुद्ध हो जाने से हालात एकदम बदल गए। एक तरफ, भारतीय कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के लिए जर्मनी और जापान के पाले में खड़े नेताजी का समर्थन करना कठिन हो गया, दूसरी ओर जर्मनी-इटली से मदद ले रहे भगताराम जैसे जासूसों का कार्य ज्यादा जटिल और चुनौतीपूर्ण हो गया। यह भगताराम का कौशल ही था कि वह जर्मनी, इटली, रूस और इंग्लैंड सभी सत्ताओं को साधते हुए अपने काम निकालते रहे। नेताजी और उनके परिवार के लिए उनकी निष्ठा बनी रही, लेकिन उनकी जासूसी क्षमताओं और संपर्कों को देखते हुए, विभिन्न सरकारें उनकी सेवाएँ लेती रहीं। पुस्तक में इस मुद्दे को लेकर, भगताराम की निष्ठा पर शक जाहिर करने वाले एक लेखक मिहिर बोस के आरोपों के भी तर्कपूर्ण उत्तर दिए गए हैं।

भारत की आज़ादी के बाद भगताराम पीलीभीत (उत्तर प्रदेश) में बस गए। वहीं कार्यरत प्राध्यापक अनुज मिश्र ने भगताराम के बारे में उपलब्ध सभी जानकारी को बड़े सटीक तरीके से और प्रवाहपूर्ण भाषा में सँजो कर यह पुस्तक लिखी है।



समीक्षक : राजेंद्र भट्ट

लेखक : जय प्रकाश गुप्ता

अनुवादक : रत्नेश कुमार मिश्र

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,

भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 240

मूल्य : रु. 465/-

## मुंडा और उराँव के प्रथागत कानून

» कृषि की शुरुआत के बाद मानव-जाति के विभिन्न समुदाय जब एक जगह टिक कर रहने लगे होंगे तो उन्होंने अपने सामूहिक जीवन को नियमबद्ध करने के लिए अनेक कायदे-कानून बनाए होंगे। इनके पीछे तत्कालीन समाज की उभरती परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ, जन-विश्वास, मान्यताएँ रही होंगी। धीरे-धीरे इनके पीछे धार्मिक-सामाजिक आग्रह जुड़ गए होंगे और ये नियम रूढ़ हो गए होंगे।

निश्चय ही ये नियम-प्रथाएँ स्थानीय जनजीवन के अनुरूप रहे होंगे। इनके संकलित रूप को ही प्रथागत कानून (कस्टमरी लॉ) कहा जाता है। ये प्रथागत कानून आमतौर पर विभिन्न जनजातीय समुदायों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहाँ किसी देश के कानून विधि-विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न बारीकियों को ध्यान में रखकर अकादमिक तरीके से गढ़े जाते हैं और किसी आधुनिक विवेकशील समाज के सामूहिक जीवन के अनुरूप होते हैं, वहीं प्रथागत कानूनों के पीछे किसी विशिष्ट अंचल पीढ़ियों के जन-विश्वास, वहाँ की विशिष्ट आवश्यकताएँ-अनुभव होते हैं।

इस पुस्तक में दो प्रमुख जनजातियों मुंडा और उराँव के प्रथागत कानूनों का विस्तृत वर्णन और विश्लेषण है। पुस्तक में, सर्वप्रथम प्रथागत कानूनों के परिप्रेक्ष्य को समझाया गया है। इसके बाद, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इन दोनों जनजातियों की सामाजिक जनसांख्यिकीय रूपरेखा विस्तार से बताई गई है। इन जनजातियों के मानव-वैज्ञानिक परिचय के बाद वैदिक काल से अब तक इनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और इनकी जन-संस्कृति में हस्तक्षेप होने पर इनके विद्रोहों और उनके नायकों के विवरण है। इन आंदोलनों को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समानांतर देखा गया है। अगले अध्याय में इन जनजातियों में विभिन्न निर्णय लेने वाली सामाजिक संस्थाओं, पंचायतों, उनके स्तरों, संघटनों तथा अंतर-ग्राम संबंधों की चर्चा है। देश के संवैधानिक प्रावधानों के इन स्थानीय संस्थाओं पर प्रभाव और इनके विभिन्न प्रावधानों की सांविधिक स्वीकृति का विश्लेषण है।

अगले तीन महत्वपूर्ण अध्यायों में गोद लेने, विरासत और उत्तराधिकार की प्रथाओं की चर्चा है। अगले अध्याय में खेती-किसानी और इन क्षेत्रों की जमीन की खरीद-बिक्री, हस्तांतरण के कायदे-कानून दिए गए हैं। इन नियमों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और इन कानूनों के आधार पर बने, स्थानीय तौर पर लागू आधुनिक कानूनों (जैसे छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम आदि) का भी ब्यौरा है। अगले अध्याय में विवाह, विवाह-विच्छेद, पुनर्विवाह, वर्जनाओं, जन्म-मृत्यु, नाते-रिश्तेदारी से जुड़ी रस्मों, त्योहारों-उत्सवों और युवा सामाजिक संस्थाओं का विवरण है। समान नागरिक संहिता की बहस के मद्देनजर, इन प्रथाओं की समझ देश-समाज में नियमों की एकरूपता बनाम विविधता के बीच संतुलन बनाने के लिए जरूरी है।

जनजातीय क्षेत्रों में वनों, वनोपजों और वन-आधारित अर्थव्यवस्था का बहुत महत्व है। यह मुद्दा भावनाओं और शोषण की आशंकाओं से जुड़ा है। पुस्तक में प्रथागत कानूनों का वनों से जुड़े मुद्दों के सापेक्ष विश्लेषण किया गया है। सामाजिक अपराधों, संघर्षों के कारणों, कुप्रथाओं (जैसे जादू-टोने, नरबलि आदि) को लोगों को विश्वास में लेकर समय के साथ बदलने की आवश्यकताएँ बनी रहती हैं।

मुंडा और उराँव जनजातियों से जुड़े विधानों और सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दिया गया है। पुस्तक के अंत में अनेक प्रथागत कानूनों से जुड़ी समस्याओं, वर्तमान परिवर्तनों और परंपराओं के टकरावों, जनजातीय समाज में घुसपैठ के सामाजिक प्रभावों, आक्रोश, धर्मांतरण आदि मुद्दों की भी चर्चा है।

ऐसे महत्वपूर्ण विषय और नियमों की सरल, प्रवाहपूर्ण लेकिन प्रामाणिक भाषा-शैली में प्रस्तुति बहुत महत्वपूर्ण है। आमतौर पर हिंदी में ऐसे प्रामाणिक 'ज्ञान-विज्ञान साहित्य' (नॉलेज लिटरेचर) की बहुत कमी है। इस पुस्तक का मूल शोध भी अंग्रेजी भाषा में ही था।

झारखंड राज्य सरकार के डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय शोध संस्थान के साथ अनुबंध करके इतनी महत्वपूर्ण पुस्तक का हिंदी संस्करण प्रकाशित कर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने सामाजिक दृष्टि से जागरूक प्रकाशक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनुवादक ने बहुत मेहनत, निष्ठा, संवेदनशीलता और धैर्य के साथ यह अनुवाद किया है। इस पुस्तक का फलक मानव विज्ञान, विधि, समाजशास्त्र और आदिवासी अध्ययन तक विस्तृत है। इन सभी क्षेत्रों के विद्वानों, विद्यार्थियों तथा देश की एकता-विविधता को गहराई में समझने वाले पाठकों के लिए ऐसी पुस्तकों की बहुत आवश्यकता है।



समीक्षक : सूर्य कांत शर्मा  
लेखक : रसिक बिहारी विभु महाराज  
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,  
भारत, नई दिल्ली-110070  
पृष्ठ : 178  
मूल्य : रु. 245/-

## ब्रज खिरक

हमारा भारतवर्ष संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन के साथ-साथ भक्ति और शक्ति का भी विलक्षण संगम है। यहाँ भक्त और भगवान दोनों में कभी कहीं दास्य तो कभी कहीं सख्य भाव या अंदाज़-ए-बयाँ है। रहस्यवाद से लेकर लौकिक और पारलौकिक उद्धारण और उदाहरण हैं। देवता भी यहाँ कभी मनुष्य रूप से लेकर सजीव और निर्जीव में जन्म लेने को आ जाते हैं।

जी हाँ, बात ब्रज प्रदेश

और कृष्ण की हो रही है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित और इस समीक्षित पुस्तक 'ब्रज खिरक' में यही आश्चर्य लोक अपने सुंदरतम और मनोहारी रूप में आपको पढ़ते-पढ़ते सोचने और महसूस कर आनंद उठाने को मिलेगा। चूँकि विषय ही ऐसा है कि अध्यात्म और दर्शन में जब भक्ति के समावेश से कोई सर्जना होती है तब पाठक से भी गांभीर्य की अपेक्षा अनिवार्यतः हो ही जाती है।

यूँ भी इस पुस्तक के लेखक अब दिवंगत युवा रहे हैं, जिनका जीवन भक्ति और अध्यात्म से सराबोर रहा है और सटीक शब्दों में कहा जाए तो गहन अनुभूति अध्ययन और अनुसंधान के पश्चात ही यह उल्लेखनीय पुस्तक सुधि पाठकों के सम्मुख आई है। पुस्तक में कुल छह अध्याय हैं यथा विषय प्रवेश, ब्रज का महत्व और महात्म्य, ब्रज की विभिन्न मान्यताएँ, वैदिक संप्रदायों में ब्रज, वैष्णव पुराण और ब्रज, ब्रज संस्कृति : विविध संदर्भ।

लेखक ने हरसंभव प्रयास किया है कि पाठक सहज और सरल भाषा में ब्रज के अर्थ, संदर्भ, भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धर्म और दर्शन में क्या-क्या और कैसे-कैसे हैं, को समझें और साथ-ही-साथ कृष्ण के स्वरूप और उनके महात्म्य को समझ कर भारतीयता को भी समझें।

वर्तमान समय का युवा पाठक आजकल नैनो गति से नैनो परिणाम या गति विधि का उत्प्रेरक है। अतः ऐसे युवाओं हेतु इस पुस्तक का पहला मुखपृष्ठ यथा नांदीवाक् को दत्तचित्त हो पढ़ना, एक उपयुक्त पुस्तक परिचय हो सकता है। इस विषय का प्रेमी पाठक भी इससे लाभान्वित हो सकता है। विषय प्रवेश में ब्रज, ब्रज मंडल, वृंदावन लौकिक-इहलौकिक-नित्य वृंदावन, गोलोक, मथुरा मंडल,

मथुरा तत्व, राधा भाव, सखी भाव, कृष्ण एवं राधा का एक दिव्य स्वरूप जैसे गूढ़ तत्वों को सहजता से समझाया गया है।

पाठकों को ब्रज के महत्व और उसके महात्म्य का ज्ञान और आनंद आगे के अध्यायों में होता जाता है। ब्रज प्रदेश की अनेकानेक मान्यताएँ यथा धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक; ब्रज के आचाराओं का विहंगम पटल पाठक के सामने खुलता है। ब्रज यूँ भी लीलाधर कृष्ण के साथ इतना गड्डमड्ड है कि दोनों की कल्पना एक साथ ही की जा सकती है। अध्याय 'वैदिक संप्रदायों में ब्रज' एक गागर में सागर-सा नियोजन और आयोजन है। उदाहरण के तौर पर वैष्णव और ब्रज, सनक, निंबार्क, श्री अथवा रामानुज, ब्रह्म अथवा माध्य के साथ-साथ रुद्र अथवा विष्णुस्वामी संप्रदायों में संबंध को बताया गया है।

पुस्तक के अंतिम दो अध्याय—'वैष्णव पुराण और ब्रज' में विभिन्न पुराणों—विष्णु पुराण, हरिवंश, पदम, स्कंध, ब्रह्मवैवर्त, मत्स्य, वराह इत्यादि पुराणों में ब्रज महिमा और संबंध के संग महात्म्य को प्रभावपूर्ण ढंग से बताया गया है। पुस्तक का एक और उल्लेखनीय अध्याय ब्रज संस्कृति के प्रभावी और अनिवार्य घटकों यथा गो, गोप, गोपी और गोकुल के अतिरिक्त रासलीला वात्सल्य, सख्य, दास्य, माधुर्य और भक्ति पर टिप्पणियाँ विशेष, पाठकों को पठन और आध्यात्मिक आनंद से लबरेज़ करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती हैं। कुल मिलाकर संक्षेप में यह कहना उपयुक्त होगा कि यह पुस्तक भारतीय संस्कृति और भारतीयता के समग्र विधान में मील का पत्थर होगी।

## अवध संस्कार : लोकाचार और लोकगीत

यह पुस्तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा लोक संस्कृति और साहित्य शृंखला के अंतर्गत प्रकाशित हुई है। इसमें अवध क्षेत्र के कुछ मुख्य संस्कारों और उन संस्कारों से जुड़े लोकगीतों का वर्णन है। लेखिका मनोरमा मिश्रा ने इन लोकगीतों के ऐसे अनेक पहलुओं की चर्चा की है, जो अकसर हमारी दृष्टि से ओझल रह जाते हैं। उनके अनुसार,

इस पुस्तक का उद्देश्य आज के सांस्कृतिक संकट के समय की



समीक्षक : रमेश कुमार सिंह  
लेखिका : मनोरमा मिश्रा  
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,  
भारत, नई दिल्ली-110070  
पृष्ठ : 174  
मूल्य : रु. 235/-

संस्कृति-संस्कार और लोकाचार से परिचय-विमुख पीढ़ी को लोकगीतों में निहित लोकमंगल के भाव से परिचित कराना है।

लेखिका के शब्दों में, लोकगीत लोक संस्कृति के सच्चे दर्पण हैं। इन गीतों में लोक का हृदय धड़कता है। इनमें मिट्टी की खुशबू होती है और जन-मन की सहज अभिव्यक्ति होती है। इनके सामाजिक सरोकार भी होते हैं।

हिंदू शास्त्रों में जिन 16 संस्कारों का वर्णन है, उनमें जन्म, जनेऊ और विवाह से जुड़े हुए संस्कार प्रमुख हैं। इस पुस्तक में इन्हीं संस्कारों और इन पर आधारित लोकगीतों को प्रस्तुत किया गया है। लेखिका के अनुसार, ये संस्कार अवध क्षेत्र के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं, क्योंकि जन्म जहाँ चेतना के भौतिक अस्तित्व को स्थापित करता है, तो जनेऊ ज्ञानार्जन का प्रस्थान बिंदु है और विवाह संतति विकास की यज्ञशाला है।

जन्म से जुड़े अवधी संस्कार गीतों में पुत्र जन्म की कामना और उल्लास की भावना की अधिकता है। लेखिका के अनुसार, पुत्र प्राप्ति की आकांक्षा पितृसत्तात्मक समाज का द्योतक है। जन्म से जुड़े लोकगीत दो तरह के होते हैं—जन्म से पहले के और जन्म के बाद के। जन्मपूर्व के लोकगीतों में संतान की कामना और गर्भवती की साध (विशेष भोजन की अथवा कोई और इच्छा) विषयक गीत होते हैं। जन्म से जुड़े लोकगीत 'सोहर' कहलाते हैं।

शिशु जन्म के पहले, तीसरे अथवा पाँचवें वर्ष में चूड़ाकर्म या मुंडन संस्कार किया जाता है। पाँचवें-छठे वर्ष में एक और प्रमुख संस्कार किया जाता है, जिसे 'कर्णछेदन संस्कार' कहा जाता है। ये संस्कार शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े हैं। जनेऊ अथवा यज्ञोपवीत के अवसर पर गाए जाने वाले गीत 'बरुआ' तथा 'भीखी' कहलाते हैं। इन संस्कारों से जुड़े लोकगीतों की संख्या यद्यपि कम है, किंतु लेखिका का मानना है कि इन गीतों में लोकमंगल की भावना उदात्त रूप में दिखाई देती है।

विवाह संस्कार से जुड़े लोकगीतों में अधिक विविधता है। विवाह के विभिन्न रस्मों में अलग-अलग लोकगीत गाए जाते हैं। विवाह गीतों में बन्ना-बन्नी, तिलक, भक्तवानि, कोइलरि, हल्दी, अगवानी, कन्यादान, भांवर, लावा, तागपाट, कोहबर, विदाई आदि के गीत आते हैं। पुस्तक में इनके कुछ उदाहरण भी दिए गए हैं।

लेखिका के अनुसार, अवधी के विवाह गीतों की केंद्रीय चेतना कन्या है। उसी की चाह है, उसी के लिए चिंता, उसी के लिए सारी मंगलेच्छाएँ हैं। जीवन की सारी हलचल की केंद्रबिंदु कन्या ही है। विवाह गीतों में कन्या के पिता की चिंता, दहेज की बुराई, बारात का प्रबंध और स्वागत आदि की विषयवस्तु हैं, साथ ही शिव-पार्वती, राम-सीता, कृष्ण-रुक्मिणी के प्रेम और विवाह के प्रसंग भी।

वैसे तो समस्त भारत के लोकगीतों में रामकथा के प्रसंग आते हैं, किंतु लेखिका के अनुसार, अवधी लोकगीतों में यह अधिक दिखाई

देता है। अवध राम की राजधानी है। अतः यहाँ के लोकजीवन में राम के चरित्र का प्रभाव सहज स्वाभाविक है। इस पुस्तक में प्रस्तुत बहुत-से लोकगीत राम केंद्रित हैं। लेखिका की लोकजीवन में गहरी पैठ है। पुस्तक में जिन लोकगीतों के उदाहरण दिए गए हैं, उनका अर्थ और मर्म भी बताया गया है। इन गीतों में कहीं करुणा की धारा है, तो कहीं उल्लास की तरंग, जो हमारे मन को छूती हैं। गीतों की व्याख्या में लेखिका का लोक संस्कृति के प्रति अनुराग झलकता है।

पुस्तक में कहीं-कहीं एक ही भावभूमि पर आधारित विभिन्न भाषाओं के लोकगीतों की तुलना की गई है। लोकगीत आंचलिक होते हैं, किंतु इनमें निहित भावनाएँ सार्वभौमिक होती हैं। अतः ये गीत एक अंचल से दूसरे अंचल में यात्रा करते रहते हैं। लोकगीतों में प्रायः लोक मंगल की भावना निहित होती है। ये सामाजिक रुढ़ियों पर चोट भी करते हैं।

लोकगीत हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं। ये वाचिक परंपरा का साहित्य है। आज के दौर में इनका संग्रह और संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। देवेन्द्र सत्यार्थी जैसे कुछ साहित्यकारों ने लोकगीतों के संग्रह और उन्हें पुस्तकाकार में पाठकों तक पहुँचाने का अनुपम कार्य किया है।

यह पुस्तक लोकगीतों के माध्यम से अवध की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा की एक झँकी दिखाती है। गंगा-जमुनी संस्कृति वाले हमारे विशाल देश के हर अंचल और भाषा के लोकगीतों के संग्रह और प्रकाशन के ऐसे प्रयास किए जाने चाहिए।

## एक और एक बारह

बचपन सर्वाधिक सृजनशील और स्वप्नदर्शी होता है, लेकिन बीतते समय के साथ एक दौर ऐसा भी आता है जब वही बचपन स्वयं स्वप्न हो जाता है। तब हमारा मन पुनः सपनों की उन रंग-बिरंगी तितलियों को अपनी मुट्ठी में पकड़ने के लिए मचल उठता है। हालाँकि बीते हुए दिन लौट कर नहीं आते, लेकिन उनकी स्मृतियाँ हृदय में अमिट होती हैं। कोरोनाकाल में जब लॉकडाउन हुआ तो समय की धारा में बहकर दूर निकल



समीक्षक : भारती पाठक

संपादक : आभा सिंह

प्रकाशक : सृजन विंब प्रकाशन,

नागपुर, महाराष्ट्र।

पृष्ठ : 72

मूल्य : रु. 200/-

गए नाते-रिश्तों और बचपन के साथियों से पुनः जुड़ने का अवसर मिला। तब कैसे यादों के पिटारे खुले और कैसे उन तमाम यादों को फिर से सहेजने का प्रयोजन बना, यही इस बहुरंगी और आकर्षक

चित्रों से सजी किताब 'एक और एक बारह' का मुख्य आकर्षण है। ये यादें हैं नागपुर के 'जीवन हिंद सोसाइटी' में सन् 1980 से 1990 के बीच अपने बचपन में साथ रहे कुछ बच्चों, शरारतों के साक्षी रहे मित्रों, सहपाठियों और उनके परिवारों की जो अनलॉक होते ही प्रयास करके फिर से मिले, जुड़े और इस पुस्तक के प्रकाशन की नींव बने। वो बच्चे जो अब बच्चे तो नहीं रह गए हैं, लेकिन उनकी स्मृति में वह समय एक प्रफुल्लित शिशु-सा आज भी उछल-कूद करता है, उन्हीं के कुछ रोचक संस्मरण इस किताब में हैं।

पुस्तक का संकलन और संपादन डॉ. आभा सिंह ने किया है जो स्वयं भी इन संस्मरणों की एक पात्र हैं। वैसे तो आभा जी सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं, किंतु इस पुस्तक में उनके व्यक्तित्व का संवेदनशील पक्ष अधिक मुखर है, जिसमें एक ओर तो अपने बचपन के साथियों तथा सहपाठियों से पुनः मिलने की उत्कंठा है वहीं दूसरी ओर आज की आत्मकेंद्रित और मशीनीकृत बचपन जी रही पीढ़ी को अपने दौर का बचपन दिखाकर अपने परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाने का दायित्वबोध और चिंता भी है। तब छोटी-छोटी आम चीजें भी खास होती थीं और जीवन खास होकर भी बेहद आम था।

इन संस्मरणों के लेखकों के शब्दों में साहित्यिक सौंदर्य और भाषाई कलात्मकता भले न हो, किंतु बालपन की सहज सुलभ चंचलता अवश्य है जो किसी भी दिखावट और बनावट से मुक्त है। संस्मरणों को जिस विचार के साथ पुस्तक रूप दिया गया है, उसमें

निश्चित रूप से निश्चल मन और उन्मुक्त होकर जिए गए स्वस्थ बचपन की झलक दिखती है। वह बचपन जो वर्तमान की चतुराइयों से अछूता था। वह बचपन जिसमें परिवार और घर का अर्थ किसी कमरे में सिमटे कुछ चेहरे से नहीं, बल्कि पूरे मुहल्ले से होता था। वह बचपन जिसमें खान-पान और रहन-सहन ही नहीं, सबकी खुशियाँ और सुख-दुख भी साँझे होते थे।

हालाँकि समय अपने साथ बहुत कुछ बहा ले जाता है, लेकिन पुस्तक को पढ़ते हुए आभास होता है कि कैसे हमारा मन बालपन की किसी दीवार पर खूँटी में टँगे कपड़े-सा झूलता रह जाता है। यही इस पुस्तक के पात्रों के साथ होता है जब वे पाते हैं कि वर्षों बाद अब मैदान में न तो साइकिल के टायरों से बने झूले से लदा सूखा पेड़ बचा है, न भूत बंगला। न आँवला, रीठा या इमली वाले पेड़ पहले जैसे हैं, न सारे बालसखा। सभी की आँखें बरबस गीली हैं क्योंकि पहले जैसे बचे हैं तो बस यादों के धागे और उनमें सुनहरे मोतियों-सी पिरोई गई बचपन की स्मृतियाँ।

पुस्तक इस मामले में भी अनूठी है कि इसमें लेखकों की अभिव्यक्ति को किसी विशेष भाषा के बंधन से मुक्त रखा गया है। श्री बलवंत वाई. निवन्त जी का आशीर्वचन जहाँ मराठी में है वहीं डॉ. राजीव खैरे जी का संस्मरण अंग्रेजी में है यानी अनुवाद के नाम पर भावों के साथ छेड़छाड़ का कोई प्रयास नहीं है जो आकर्षक प्रयोग तो है ही, भाषा के स्तर पर सरल और सुबोध भी है। यह एक खास पीढ़ी के बचपन को देखने और समझने हेतु उपयोगी पुस्तक है।



समीक्षक : डॉ. रमेश तिवारी

लेखक : रामस्वरूप दीक्षित

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

पृष्ठ : 96

मूल्य : रु. 200/-

## टाँग खींचने की कला (व्यंग्य-संग्रह)

» पुस्तक 'टाँग खींचने की कला' रामस्वरूप दीक्षित का दूसरा व्यंग्य संग्रह है। टाँग खींचना स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है। संग्रह के शीर्षक से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि लेखक ने इस मानवीय प्रवृत्ति की पहचान करते हुए उस पर प्रहार स्वरूप यह व्यंग्य रचना लिखी है। इस संग्रह की रचनाओं के द्वारा लेखक ने पुलिस, शासन, राजनेता, लेखक, व्यंग्यकार, कवि, महँगाई, अभिनेता, छात्र,

मौसम, इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य से जुड़े लगभग सभी विषय वस्तुओं को अपने लेखन में समेटने की सफल कोशिश की है।

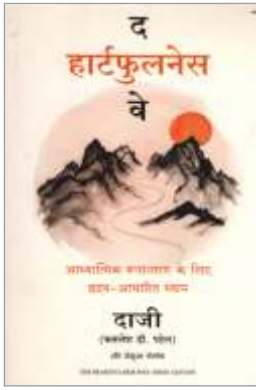
संग्रह में एक रचना है—उल्लूक पर्व। इस शीर्षक पर दृष्टि जाते ही लेखक के मनोभावों को पढ़ने-समझने की जिज्ञासा होती है। उल्लूक 'उल्लू' को कहते हैं। अतः इस शीर्षक में उल्लू की प्रासंगिकता के साथ-साथ उसकी केंद्रीय भूमिका समझ में आती है और इसके साथ ही मस्तिष्क उल्लू से संबंधित पर्व के बारे में सोचना आरंभ कर देता है। इस सिलिसिले में दीपावली के त्योहार पर जाकर ध्यान टिकता है। यह रचना इसी पर्व के बारे में विचार करते हुए आरंभ होती है। "दीवाली को चाहे 'प्रकाश पर्व' कहा जाए या 'धन पर्व', पर वस्तुतः है यह उल्लूक पर्व ही। हंसों का पर्व तो यह नहीं है।" यहाँ उल्लूक, लक्ष्मी जी का वाहन है और हंस, सरस्वती जी का। संकेतों में लेखक ने इसी अंतर को स्पष्ट करते हुए इस रचना का विकास किया है।

मनुष्य कुछ पालतू जानवरों के साथ इतना घुल-मिल गया है कि उन पशुओं में मानवीय प्रवृत्ति और कुछ मनुष्यों में उन पालतू जीवों की पाशविक प्रवृत्ति का असर सहज ही देखा जा सकता है। 'कुत्ते की जात' एक ऐसी ही व्यंग्य रचना है। मनुष्य के सर्वाधिक वफादार के रूप में हम कुत्तों की प्रजाति को मानते हैं। लेखक ने कुत्ते और मनुष्य की प्रवृत्ति का सूक्ष्म अवलोकन करते हुए दोनों की विसंगतियों को रचना में अभिव्यक्त किया है। मनुष्य प्रगति की दौड़ में जब विवेक

शून्य होता जाता है तो वह मानवोचित प्रवृत्ति से इतर व्यवहार करने में भी नहीं संकोच करता। लेखक ने ऐसे ही दृश्यों को इस रचना में उभारने की कोशिश की है। “प्रगति की दौड़ में आज वे ही सफल हो रहे हैं, जिनके पास अच्छी नस्ल के कुत्ते हैं। कुत्ताविहीन लोग कुत्तों का-सा जीवन जीने को मजबूर हो रहे हैं।...कुत्ता संस्कृति तेजी से पनप रही है, आदमी कुत्ता और कुत्ता आदमी बन रहा है। कई हैं जो कमजोर को देखकर भौंकने लगते हैं और सहजोर के सामने दुम हिलाने लगते हैं।” कुत्तों की स्वाभाविक प्रवृत्ति को जब मनुष्य अमानवीय तरीके से निजी एवं अनुचित लक्ष्य की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करने लगते हैं, तो उनकी यह विसंगति व्यंग्य के विषय उपलब्ध कराती है। इसी विसंगति को लेखक ने बड़ी ही सफलता से इस रचना में पिरोया है। इसके लिए वह कुत्तों की विभिन्न प्रजातियों/विशेषताओं को रेखांकित करते हुए मनुष्य द्वारा इन प्रवृत्तियों को अपनाए जाने पर करारा प्रहार किया है। “दुम हिलाने वाले कुत्ते सरल स्वभाव और धार्मिक प्रकृति के होते हैं। वे अपने जाति-धर्म स्वामिभक्ति की रक्षा के लिए अपने स्वामी के सामने दुम

हिलाने लगते हैं, जिसने इनके सामने जरा-सा टुकड़ा फेंक दिया, वे दुम हिलाते हुए उसके तलवे चाटने लगते हैं। इनकी विशेषता यह है कि आप चाहे इन्हें दुत्कारें, चाहे भगाएँ, चाहे पीटें मगर ये आपसे विद्रोह नहीं करेंगे, न दुम हिलाना ही छोड़ेंगे। समाज में ऐसे कुत्ते बहुत पसंद किए जाते हैं, क्योंकि हर आदमी चाहता है कि कोई-न-कोई कुत्ता उसके सामने दुम हिलाता रहे।” लेखक ने दुम हिलाने वाले, भौंकने वाले, गुराने वाले और चुपचाप काटने वाले कुत्तों की प्रजातिगत विशेषता का मनुष्य में अवलोकन करते हुए विसंगतिजन्य विद्रूप को इस रचना में उभारने की सफल कोशिश की है।

इस संग्रह की अन्य प्रमुख रचनाओं में मेरे शहर की सड़कें, मंत्री जी के जूते, पुलिस का सम्मान, मृतक को ऋण, एक नेता से साक्षात्कार, सफल लेखक होने के उपाय, जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ, एक व्यंग्यकार की चिट्ठी समीक्षक के नाम, विप्लव जी की सलाह आदि उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह को पढ़कर पाठकों को समसामयिक मानवीय प्रवृत्तियों की विसंगतियों के साक्षात्कार का अवसर मिलेगा।



समीक्षक : सुधांशु गुप्ता  
लेखक : कमलेश डी पटेल (दाजी)  
और जोशुआ पोलाक  
प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस,  
भोपाल।  
पृष्ठ : 166  
मूल्य : रु. 250/-

## द हार्टफुलनेस वे

कभी सोचकर देखिए, क्या एक ग्रह अनेक सूर्यों की परिक्रमा कर सकते हैं? नहीं कर सकते। ठीक इसी तरह मनुष्य के जीवन के भी अनेक केंद्र होते हैं। लेकिन असली केंद्र है हृदय। यही वह गहनतम केंद्र है जो हर हृदय के मूल में विद्यमान है। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में मनुष्य परिवार की, जीवन की, व्यवसाय या नौकरी की, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करते-करते एक शून्य-खालीपन का अनुभव महसूस करने लगता है। उसे

लगता है कि वह अपने स्व से अलग हो गया है। अपने स्व को पाने के लिए अनंतकालीन मौखिक परंपरा भारत में मौजूद है। इसी परंपरा को बनाए रखते हुए कमलेश डी. पटेल ने आध्यात्मिक खोज की प्रकृति का अध्ययन करने के साथ ही हृदय आधारित ध्यान की यात्रा का वर्णन करते हुए ‘द हार्टफुलनेस वे’ लिखी है। इस यात्रा में कमलेश डी. पटेल, जिन्हें ‘दाजी’ भी कहा जाता है, के साथ यात्री के रूप में जोशुआ पोलाक उपस्थित हैं। वास्तव में हार्टफुलनेस अभ्यास की

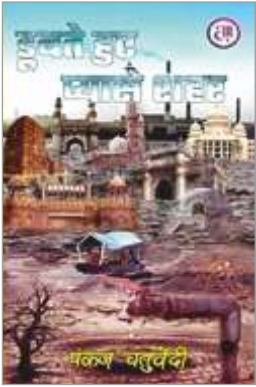
विधि आत्मा के लिए सात्विक पोषण जुटाती है और अनर्गल आवरण को साफ करती है। इस अभ्यास से मन के भीतर बच्चे जैसी मासूमियत समा जाती है। कमलेश डी. पटेल को दाजी भी कहा जाता है। बकौल दाजी, पिछले छह दशकों से उन्हें कई आशीर्वाद मिले। पहली बार शायद 1976 में तब मिला, जब मैं अहमदाबाद में फार्मसी की पढ़ाई कर रहा था। घटना का विवरण देते हुए वे अपने एक सहपाठी मित्र का आभार जताते हैं कि हार्टफुलनेस ध्यान पद्धति से परिचित होने में वे एक निमित्त बन सके। कुछ माह बाद मैं महात्मा रामचंद्र के आया। उन्हीं के नाम से साधकों का एक छोटा-मोटा संगठन बना। हार्टफुलनेस ध्यान उन्हीं की देन है।

हार्टफुलनेस ध्यान के लिए बहुत कुछ नहीं करना। जिंदगी में जो अनायास हो रहा है, उससे सहमत होकर बैठना और आँखें बंद करके अपने अस्तित्व के स्रोत पर ध्यान केंद्रित करना ही पर्याप्त है। पुस्तक पढ़ते समय आपके मन में बहुत से सवाल उठेंगे। मसलन ध्यान क्यों, ध्यान की परिभाषा क्या है, क्या ध्यान और एकाग्रता एक ही बात है या इनमें अंतर है, इच्छा और आकर्षण में क्या अंतर है...ऐसे ही और भी बहुत से सवाल होंगे। इस पुस्तक में दाजी ने बातचीत के माध्यम से इन प्रश्नों के सहज रूप से उत्तर दिए हैं। दाजी योग सूत्रों के आठ चरणों को महत्वपूर्ण बताते हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। दाजी इन आठों चरणों के विषय में विस्तार से बताते हैं। दाजी यह भी कहते हैं, ध्यान ही सब-कुछ नहीं है। आध्यात्मिक अभ्यास महत्वपूर्ण है। इसके बिना परिवर्तन केवल एक सपना है। फिर भी एक सबसे अधिक प्रभावशाली ध्यान पद्धति, हमें इस मार्ग के मात्र पाँच प्रतिशत तक ही ले जा सकती है।

और बाकी 95 प्रतिशत? इस प्रश्न का उत्तर दाजी इस तरह देते हैं, हम जो करते हैं, वह महत्वपूर्ण है, लेकिन यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि हमारा 'रवैया' जिसके साथ हम इसे करते हैं। यह केवल ध्यान पर लागू नहीं होता। किसी भी गतिविधि के साथ हमारा रवैया ही है जो उसे परिभाषित करता है और यह हमारा रवैया ही है जो उसकी सफलता निर्धारित करता है। यदि आप नकारात्मक मनोदशा में ध्यान करेंगे तो इसका उलटा असर होगा। आपकी नकारात्मकता ही आपके ध्यान का उद्देश्य बन जाती है। आपकी आँखें बंद होंगी। आप ऐसे दिखेंगे मानो आप ध्यान में हों, लेकिन वास्तव में आप अपने ही नकारात्मक विचारों और भावनाओं का चिंतन कर रहे होंगे। वही आपके ध्यान का केंद्र बन जाते हैं। और जब आप अपनी ही खराब मनःस्थिति पर ध्यान करेंगे? स्वाभाविक है कि हम ध्यान के अपने उद्देश्य से भटक जाएँगे। ध्यान के ऐसे ही और भी अनेक रहस्यों से

दाजी इस पुस्तक में पर्दा उठाते हैं। पुस्तक में तीन खंड हैं—हार्टफुलनेस क्यों, हार्टफुलनेस का अभ्यास और गुरु। इन तीनों खंडों में आपको अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे।

निष्कर्ष के तौर पर कहा गया है, हार्टफुलनेस अभ्यास हमें रूपांतरित होने के लिए उपकरण प्रदान करता है, लेकिन उनका इस्तेमाल हमें करना होता है। स्वयं को रूपांतरित करना स्वयं को नया बनाना है, जो हमारे आंतरिक-स्व के रूपांतरण से शुरू होता है। ध्यान के अभ्यास से आंतरिक रूपांतरण स्वतः होने लगता है। बिना आंतरिक रूपांतरण के हमारे चरित्र और जीवन-शैली में बदलाव महज़ एक सपना है। हालाँकि, ये बाहरी रूपांतरण स्वतः नहीं होते। इसके लिए हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। यदि आप अपने हृदय की आवाज़ ध्यान से सुनकर ईमानदारी से उसका अनुसरण कर सकते हैं तो यह पुस्तक आपके ही लिए है।



## डूबते हुए प्यासे शहर

ज्यों-ज्यों जल संकट बढ़ रहा है, त्यों-त्यों जल संकट पर भाषण देने वाले फर्जी बुद्धिजीवियों की भीड़ भी बढ़ती जा रही है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि जलसंकट अभी भी आम आदमी की चिंता नहीं बन पाया है। यही कारण है कि एक तरफ जलसंकट बढ़ता जा रहा है तो दूसरी तरफ जलसंकट के नाम पर मलाई चाटने वाले लोगों का धंधा भी दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की कर रहा है। ऐसे माहौल में जलसंकट पर

की कोशिश करनी होगी। इस प्रक्रिया में सबसे पहले हमें बारिश की हर बूँद को सहेजने पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। लेखक ने 11 अध्यायों के माध्यम से जलसंकट और भारत की विभिन्न नदियों की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से चर्चा की है। दिल्ली के जलसंकट का विश्लेषण करते हुए लेखक का मानना है कि दूर से पानी मंगवाकर दिल्ली का जलसंकट दूर नहीं हो सकता। इस प्रक्रिया में खर्च भी अधिक होता है। अगर दिल्ली के पारंपरिक जल संसाधनों को जिंदा कर दिया जाए तो इसमें खर्च भी कम होगा और स्थायी रूप से दिल्ली का जलसंकट खत्म हो जाएगा। पहले दिल्ली में विभिन्न तालाब थे, लेकिन आज उन तालाबों और यमुना की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। गुरुग्राम के जलसंकट का विश्लेषण करते हुए लेखक का मानना है कि यहाँ हर साल जल स्तर डेढ़ से दो मीटर नीचे गिर रहा है। दूसरी तरफ यहाँ का पानी गंभीर रूप से रसायनयुक्त हो गया है। साहिबी नदी और अरावली के संरक्षण के माध्यम से ही स्थिति में सुधार संभव हो सकता है। हालाँकि बरसात में डूबता गुरुग्राम कई सवाल भी खड़े करता है। अरावली पहाड़ियों में चल रहा अवैध खनन भी कई तरह की समस्याएँ पैदा कर रहा है।

समीक्षक : रोहित कौशिक  
लेखक : पंकज चतुर्वेदी  
प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन,  
दिल्ली।  
पृष्ठ : 132  
मूल्य : रु. 220/-

गंभीरता से लिखने वाले लेखक कम ही नजर आते हैं। वरिष्ठ पत्रकार और लेखक पंकज चतुर्वेदी पिछले कई वर्षों से पर्यावरण और जल से जुड़े मुद्दों पर नियमित और गंभीरता के साथ लिख रहे हैं। हाल ही में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'डूबते हुए प्यासे शहर' हमें आईना तो दिखाती ही है, जल प्रबंधन की सरकारी नीतियों को भी कठघरे में खड़ा करती है।

पंकज चतुर्वेदी का मानना है कि विकास के नाम पर पारंपरिक जल प्रणालियों के साथ की गई छेड़छाड़ का नतीजा यह हुआ कि हम किसी-न-किसी रूप में पूरे साल संकट से जूझने लगे। अगर हम जलसंकट का वास्तविक समाधान करना चाहते हैं तो हमें स्थानीय समाज के सहयोग से पारंपरिक जल प्रणालियों को पुनर्जीवित करने

लेखक ने गाजियाबाद के जलसंकट और हिंडन नदी की दुर्गति का गंभीरता से विश्लेषण किया है। हिंडन नदी के तट पर एक तरफ हजारों मकानों का दबाव है तो दूसरी तरफ विभिन्न तालाबों पर हुए अवैध कब्जों ने स्थिति को बद से बदतर बना दिया है। हिंडन नदी शहर की प्यास बुझा सकती थी, लेकिन वह कारखानों और घरों का गंदा पानी ले जाने का मार्ग बनकर रह गई है। भोपाल के जलसंकट और यहाँ के विभिन्न तालाबों का विश्लेषण करते हुए लेखक का मानना है कि बढ़ती आबादी के साथ बरसात में सारे शहर का दरिया बन जाना एक बड़ी त्रासदी है। भोपाल के कुछ महत्वपूर्ण तालाब अतिक्रमण, गंदगी और प्रबंधन-अभाव के कारण अपने अस्तित्व के

लिए जूझ रहे हैं। लेखक ने श्रीनगर व कश्मीर के जलसंकट का अध्ययन भी किया है। मनुष्य के लोभ और बढ़ती जनसंख्या के कारण जम्मू और कश्मीर की कई आर्द्रभूमियाँ सिकुड़ रही हैं। करीब दो दशक पहले डल झील का दायरा 27 वर्ग कि.मी. था जो अब सिकुड़ कर करीब 12 वर्ग कि.मी. रह गया है। ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण के कारण कश्मीर की झीलों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। लेखक ने बेंगलुरु के 'केपटाउन' बनने के खतरे की तरफ भी संकेत

किया है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि बीते दो दशकों में बेंगलुरु के तालाबों में मिट्टी भरकर कॉलोनी बनाने के साथ-साथ तालाबों की आवक व निकासी को पक्के निर्माणों से रोक दिया गया। जलनिधियों में कूड़ा भरने के कारण चेन्नई भी जलसंकट से जूझ रहा है। पुस्तक में तमिलनाडु के तालाबों यानी 'एरी' पर विस्तृत चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त लेखक ने हैदराबाद, मुंबई, पटना और छत्तीसगढ़ के जलसंकट पर गंभीरता के साथ अध्ययन किया है।



समीक्षक : विवेक द्विवेदी

संपादक : डॉ. शोभा जैन,

श्रीमती अर्चना शर्मा

प्रकाशक : भावना प्रकाशन,

नई दिल्ली।

पृष्ठ : 398

मूल्य : ₹. 995/-

## आखर-आखर राकेश

» 'आखर-आखर राकेश', राकेश जी के जीवन का संपूर्ण दस्तावेज है जिसे सर्जना के आयाम के अंतर्गत नौ खंडों में बाँटा गया है। प्रत्येक खंड अपनी कहानी बड़ी बेबाकी के साथ कहता है। 'सृजन के लिए/जरूरी है समय की धारा के विपरीत बहना...। आगे देखिए, निर्जन पथ से गुजरना भी है/यह गुजरना/केवल गुजर जाना नहीं/बल्कि बनाना है/ एक राजमार्ग। ऐसी पंक्तियाँ वही कवि कह सकता है जिसके अंदर कुछ कर गुजरने का साहस होता है।

राकेश शर्मा पर अनेक लेख इस ग्रंथ में छपे हैं। प्रत्येक आलेख उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित हैं। राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों विशाल है। राकेश के चिंतन में भारतीय संस्कृति प्रमुख है। आप अध्यात्म से लेकर धर्म, संस्कृति, समाज, साहित्य, राजनीति, इतिहास के साथ उनके उपांगों जैसे बाजारवाद, उपभोक्तावाद और पूँजीवाद आदि विषयों पर गहन अध्ययन के साथ अपने संपादकीय से लेकर पूरे साहित्य में गंभीरता से विमर्श करते चलते हैं। 'वीणा' जैसी पत्रिका जो वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। यह इकलौती पत्रिका है जो सौ वर्ष पूरे करने जा रही है। राकेश जी की जवाबदेही में वीणा अपने पूरे अस्तित्व के साथ प्रवहमान है। किसी भी मोड़ पर वीणा प्रश्नांकित नहीं हुई है। पूरी जिम्मेवारी के साथ राष्ट्रधर्म के कार्य में लगी है। मैं पूरे होशो-हवास के साथ कह सकता हूँ कि आखर-आखर राकेश में कई विद्वानों ने इस मत को पुष्ट किया है। राकेश जी ने वीणा में कई बदलाव भी किया। वीणा को केंद्र में रखकर आपने कई जिलों में पाठक मंच की स्थापना की है।

डॉ. श्याम सुंदर दुबे ने अपने आलेख में सटीक बात की है। 'हम कृतज्ञ हैं उस परम सत्ता के जिसने हमारे नियोजित को रहस्यमय बनाया है। 'यथा नियोजसि केशव।' दुबे जी आगे कहते हैं। ये सज्जन उन दिनों गड़े मुर्दे उखाड़ रहे थे। उखाड़ने तक तो ठीक था, किंतु वे उन्हें प्राणवान और जीवित-जाग्रत बना रहे थे। कबीर की उस उक्ति को सार्थक कर रहे थे। 'हम न मरिहें मरिहें संसारा।' जिसने शब्द को जान लिया और जो शब्द में रम गया, वह मरजीवड़ा बन जाता है। राकेश शर्मा ऐसे मरजीवड़ा की खोज-खबर ले रहे थे।

राकेश जी ने लगभग ग्यारह पत्रिकाएँ और पुस्तकों का संपादन किया, जिसमें वीणा और बहुरंग प्रमुख हैं। वीणा के साथ जुड़े अनुभव की चर्चा कई लोगों ने किया है। हिंदी पत्रिकाओं ने जहाँ भाषा को समृद्ध किया है, वहीं नए रचनाकारों को सृजन का अवसर भी प्रदान किया। देश के कई नामचीन संपादकों ने पत्रिकाओं के माध्यम से बड़े-बड़े लेखकों को जन्म दिया। वीणा को ही लें तो वीणा तो शताब्दी पूरा करने जा रही हैं, लेकिन जब से राकेश जी के संपादकत्व में आई, वीणा का उदास चेहरा अचानक प्रदीप्त हो उठा। उसकी चमक बढ़ गई। अपने कलेवर और उपांग सामग्रियों के साथ उसमें एक नवाचार दिखाई देने लगा। यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि वीणा को देख और पढ़कर उन भूली-बिसरी पत्रिकाएँ धर्मयुग, सारिका, साप्ताहिक हिंदुस्तान और कल्पना जैसी पत्रिकाओं की याद ताजा हो जाती है।

प्रो. संजय द्विवेदी ने लिखा है कि साहित्य और पत्रकारिता के बीच अन्योन्याश्रित संबंध है। राकेश जी सेतुबंध का काम करते हैं। डॉ. विकास दवे के एक साक्षात्कार में तुलसी साहित्य से प्रेरणा की बात पर राकेश जी ने स्वीकारा है कि कालजयी रचना को पढ़कर मेरे जीवन में जो परिवर्तन हुआ, उसमें रामचरित मानस की भूमिका प्रमुख है।

राकेश एक अद्भुत व्यक्ति हैं। बहुत ही सरल और सहज हैं। बहुत-सी बातें मौन रहकर कह जाते हैं। राकेश की चिंता शिविर में व्यक्ति नहीं है। वह पूरे समष्टि की बात करते हैं। इतने विद्वतजनों ने उन पर अपने आलेख लिखे हैं। कई संस्मरण लिखे गए हैं। हर आलेख और संस्मरण में राकेश जी की खूबियों पर चर्चा हुई है। मैं यह बड़ी ईमानदारी से कह सकता हूँ कि राकेश जी में हो सकता है, व्यक्ति के स्तर पर कोई कमी हो, क्योंकि मनुष्य में कमियाँ तो हजार होती हैं। परंतु राकेश जी ने अपने को ऐसा साधा है कि अंधेरा पक्ष कहीं दिखाई ही नहीं देता।



समीक्षक : विजय कुमार 'शाश्वत'

संकलन : प्रकाश देव

प्रकाशक : आईसेक्ट पब्लिकेशन,  
भोपाल।

पृष्ठ : 262

मूल्य : रु. 320/-

## ई-एकलव्य : विद्यालयों के लिए ऑनलाइन शिक्षा प्रौद्योगिकी

» प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा तक कोविड-19 महामारी ने हमारी औपचारिक शिक्षा प्रणाली के लचीलेपन की परीक्षा ली है। इसने एक ओर तो शिक्षा जगत के सामने चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं तो दूसरी ओर नए आयाम भी प्रस्तुत किए। इस दौरान नए-नए अनुप्रयोग किए गए। शिक्षकों

की पहुँच बच्चों तक कैसे सुनिश्चित हो, इसके लिए नए स्रोत खुले। इसने हमें बताया कि हमें हमारी शिक्षा प्रणालियों और उनके भविष्य की पुनर्कल्पना की आवश्यकता है। इस हेतु पूरी दुनिया भौतिक से वर्चुअल हो गई। शिक्षक ऑनलाइन आ गए। लेकिन अभी भी विद्यार्थियों को ऑनलाइन जोड़ना एक चुनौती था, क्योंकि भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी अभी भी गाँव में निवास करती है और डिजिटल दुनिया उनकी पहुँच से बाहर है। बतौर लेखक 'यूनिसेफ द्वारा कोविड काल में विद्यालय बंद रहने के संदर्भ में वैकल्पिक शैक्षिक प्रयासों पर भारत के छह राज्यों में किए गए अध्ययन का एक प्रतिवेदन 'रेपिड असेसमेंट ऑफ लर्निंग इयूरिंग स्कूल क्लोजर इन द कॉन्टेक्ट ऑफ कोविड' के अनुसार, इन छह राज्यों में मात्र 10 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास किसी प्रकार की डिजिटल डिवाइस उपलब्ध थी। जिन विद्यार्थियों के पास उपकरण थे, उनमें से 45 प्रतिशत विद्यार्थियों को यह पता ही नहीं था कि पढ़ाई करने के लिए इन उपकरणों का उपयोग कैसे किया जाए। यही नहीं, 73 प्रतिशत विद्यार्थियों और शिक्षकों को अध्ययन की विषयवस्तु और उनके स्रोतों की जानकारी नहीं थी।' इस पुस्तक में गुरुओं के ज्ञान की प्रतिमूर्ति के रूप में इंटरनेट पर अथाह सामग्री उपलब्ध होने पर इसकी तुलना आज का गुरु द्रोणाचार्य से और शिक्षार्थी की तुलना एकलव्य से की गई है।

प्रकाश देव द्वारा लिखित पुस्तक 'ई-एकलव्य : विद्यालयों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की प्रौद्योगिकी' 14 अध्यायों में विभाजित है। पहला अध्याय '21वीं सदी में विद्यालयीन शिक्षा के लिए चुनौतियाँ' है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में अपेक्षित कौशल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन, शिक्षकों के अपेक्षित गुण, शिक्षा

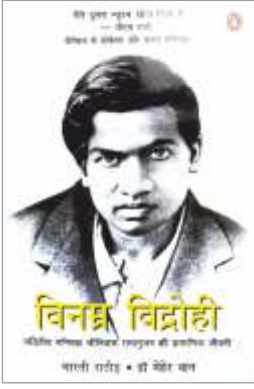
का संभावित रूप और आगे का रास्ता क्या हो सकता है, पर चर्चा की गई है।

कोविड 19 के संदर्भ में दूरस्थ शिक्षा की शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों को घर पर ही शिक्षा प्रदान करने के लिए एकमात्र विकल्प के रूप में उभरी हैं, लेकिन शिक्षकों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए उन्हें शैक्षिक प्रौद्योगिकी के बुनियादी सिद्धांतों का समझना आवश्यक है। दूसरा अध्याय 'ऑनलाइन शिक्षा के सैद्धांतिक आधार' इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है। पुस्तक का तीसरा अध्याय 'ऑनलाइन स्व-अधिगम' अर्थात् ऑनलाइन सेल्फ लर्निंग है, जिसमें ऑनलाइन पद्धति से सीखने के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल पर जोर दिया गया है। चौथा अध्याय 'आभासी अनुरूपण और प्रयोगशालाएँ' है जो वर्चुअल प्रयोगशालाओं और वर्चुअल सिमुलेशन की बात करता है। पाँचवाँ अध्याय 'ऑनलाइन शिक्षण-योजना और प्रबंधन' हमें ऑनलाइन शिक्षा के नियोजन और प्रबंधन, शिक्षण योजना सिखाता है। छठा अध्याय 'शैक्षिक माध्यम और विषयवस्तु की प्रस्तुति' है जो बताता है कि शिक्षण माध्यम कौन-कौन से हो सकते हैं और उनकी प्रस्तुति कैसी हो सकती है, जैसे—शब्द, कथ्य, डेटा, श्रव्य, दृश्य, वीडियो और एनिमेशन।

सातवाँ अध्याय 'ऑनलाइन शिक्षण हेतु उपकरण और प्रबंधन' के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षण हेतु आवश्यक तकनीकी उपकरण, इंटरनेट कनेक्टिविटी, ऑनलाइन सत्रों की स्ट्रीमिंग तथा आठवाँ अध्याय 'ऑनलाइन सत्रों के प्रकार, डिजाइन और अंतर्क्रिया' के संबंध में ऑनलाइन शिक्षण सत्रों की डिजाइन, संप्रेषण का मनोविज्ञान, शिक्षण सत्रों के लिए आचार संहिता जैसे मुद्दों को सामने लाता है। नौवाँ अध्याय 'ऑनलाइन रचनात्मक आकलन और परीक्षाएँ', दसवाँ अध्याय 'डिजिटल शैक्षिक सामग्री निर्माण', 11वाँ 'डिजिटल शैक्षिक सामग्री का गुणवत्ता आकलन', 12वाँ अध्याय 'विद्यार्थियों का स्वास्थ्य, साइबर सुरक्षा और इंटरनेट शिष्टाचार', 13वाँ अध्याय 'वेबसामग्री और कानून' तथा 14वाँ और अंतिम अध्याय 'ई-शिक्षा में चुनौतियाँ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' है।

पुस्तक के अंत में ऑनलाइन पद्धति से सीखने के लिए कुछ शैक्षिक प्रतिष्ठानों और प्लेटफार्म से संबंधित वेबसाइट और परिचय दिए गए हैं जो शिक्षण से संबंधित कार्य को विस्तार देते हैं। इसके अलावा पुस्तक में संदर्भित शिक्षाशास्त्रीय शब्द और उसमें निहितार्थ अर्थ को भी बताया गया है, जो कि पाठक को विषय के समझने में सहायक हैं।

यह पुस्तक ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था के बारे में समस्त जानकारी मुहैया कराती है जो प्रौद्योगिकी की समझ पैदा करती है। यह न केवल अध्यापकों, अपितु शिक्षार्थियों के लिए भी महत्वपूर्ण पुस्तक है।



समीक्षक : विजयलक्ष्मी पाण्डेय

लेखक : भारती रावठ, डॉ. मेहेर वान

प्रकाशक : पेंगुइन रैंडम हाउस प्रा.लि.,

गुरुग्राम, हरियाणा।

पृष्ठ : 242

मूल्य : रु. 350/-

## विनम्र विद्रोही : अद्वितीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की प्रामाणिक जीवनी

» “कहते हैं विलक्षण रूप से प्रतिभावान होना एक प्रकार की त्रासदी है। एक ऐसी त्रासदी जो आम आदमी को महानायक बनाती है। ऐसा नायक जो साल-दर-साल अमर होता जाता है, जिसे पीढ़ियाँ गौरवपूर्ण इतिहास के रूप में सुनती और पढ़ती हैं। जब भी हम किसी ऐसे नायक की बात

करते हैं तो दुनिया के महान गणितज्ञों में गिने जाने वाले श्रीनिवास रामानुजन का जिक्र भी आता है। वह गणितज्ञ जिसने वैश्विक गणित को नई दिशा दी।”

उपरोक्त उद्धरण पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा अभी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक ‘विनम्र विद्रोही : अद्वितीय गणितज्ञ रामानुजन की प्रामाणिक जीवनी’ की भूमिका से है। यह पुस्तक उनके जीवन से मृत्यु के बीच में बचे जीवन को व्यक्त करती है। पुस्तक का उद्देश्य यही है कि एक विराट व्यक्तित्व के अंदर छुपी निराशा, हताशा, पराजय और गणित के प्रति उनके जुनून की उन घटनाओं को सामने लाया जा सके, जिनसे लड़कर ही वह अनंत तक पहुँच पाए। रामानुजन का जीवन प्रेरणास्पद है जो असफल तो होता है, लेकिन हार नहीं मानता।

पुस्तक की खास बात यह है कि एक गणितज्ञ के जीवन पर आधारित होने के बावजूद यह पुस्तक किसी गैर-गणितज्ञ को नीरस और उबाऊ नहीं लगती। यह बात इस पुस्तक के पाठक वर्ग का विस्तार करती है। इसकी भाषा सहज, सरल, सुगम्य है। कहीं-कहीं तो भाषा काव्यात्मक हो गई। रामानुजन के जीवन के साथ-साथ, विश्व में उनके गणित को लेकर होने वाली चर्चा के साथ ही तत्कालीन भारतीय राजनीतिक, सामाजिक स्थिति पूरी पुस्तक में साथ-साथ चलती रहती है। मात्र 32 साल की उम्र में रामानुजन ने तमिलनाडु से लंदन तक शून्य से अनंत तक की यात्रा की। उनकी कहानी जितनी सरल सुनाई पड़ती है, वास्तव में उतनी ही कठिनाइयों से भरी हुई थी। दुख, उपेक्षा और असीम संघर्ष उनके जीवन में साथे की तरह बना रहा।

क्या प्रतिभाओं पर भी पराधीनता की परछाई पड़ती है? इसका जवाब है—हाँ, आजीविका की पराधीनता। भारत में एक साधारण परिवार में जन्मे असाधारण व्यक्ति श्रीनिवास रामानुजन (22 दिसंबर,

1887 - 26 अप्रैल, 1920) ‘अंकों के जादूगर’ कहे जाते हैं। उनके प्रमेय को विश्व के महान गणितज्ञों ने देखे तो अचंभित हुए। वह एक ऐसे विलक्षण गणितज्ञ हैं जिनके दिए 3900 थ्योरमों का हल अब तक नहीं निकल पाया है और उन पर विश्व में शोध चल रहा है।

भारत की परतंत्रता के साथ-साथ धार्मिक परतंत्रता जैसे—ब्राह्मण होने के कारण केवल शुद्ध शाकाहारी भोजन करना, प्रथम विश्वयुद्ध के कारण लंदन में शाकाहारी भोजन न मिल पाना, भावनात्मक परतंत्रता—अपनी माँ द्वारा पत्नी से अलग रहने के लिए निर्मित परिस्थितियों से उपजे अकेलेपन, कैंब्रिज में अपने प्रतिकूल परिस्थितियों से उपजे क्षोभ से आत्महत्या की कोशिश करना, शारीरिक परतंत्रता—टीबी जैसी लाइलाज बीमारी का होना, रूढ़िवादी परतंत्रता—सात समुंदर पार जाने से लगे दोष के कारण उनके अंतिम संस्कार में उनके रिश्तेदारों का शामिल न होना, जैसे असामान्य जीवन को इस पुस्तक में बड़े सामान्य ढंग से रखा गया है, जिससे यह अत्यंत पठनीय बन गई है। यही बात इस पुस्तक को सफल बनाती है।

भारत का यह दुर्भाग्य था कि ऐसी महान प्रतिभा आजीविका कमाने में तबाह हो रही थी। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा था। भारत में जाने कितनी ही प्रतिभाएँ आजीविका की भट्टी में जलकर राख होती रही हैं। अब भी हो रही हैं। समाज में औसत बुद्धि वालों की भीड़ में कुशाग्र बुद्धि का जीवन काँटों भरा होता, क्योंकि उससे कम प्रतिभा वाले उसके रास्ते के रोड़े बनते हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में रामानुजन ने गणित के प्रति अपने जुनून को नहीं छोड़ा।

जब रामानुजन का जीवन प्रतिकूल परिस्थितियों से घिरा हुआ था, तब उनके जीवन में विश्व के महान गणितज्ञ प्रोफेसर जी.एच. हार्डी एक शिक्षक और अभिभावक के रूप में आए। उन्होंने ही रामानुजन के विषय में कहा था, “मैंने दूसरा न्यूटन खोज लिया है।” उन्होंने अपनी सीमाओं से परे जाकर रामानुजन और उनके गणित के काम को विश्व में पहचान और सम्मान दिलाया, जिसके वे हकदार थे।

रामानुजन का जीवन एक केस स्टडी की तरह है, जिसे युवाओं और नीति निर्माताओं को अवश्य पढ़ना चाहिए। युवा इस पुस्तक से सीख सकते हैं कि शून्य से अनंत तक पहुँचा जा सकता है, यदि अपनी प्रतिभा पर भरोसा बनाए रखें और अपने काम को ईमानदारी से करते रहें। नीति निर्माता प्रोफेसर हार्डी से प्रेरणा ले सकते हैं कि अपने आस-पास की प्रतिभा को कैसे संरक्षित और पल्लवित करें। रामानुजन की इस जीवनी को हर पाठक वर्ग पढ़ सकता है, सीख ले सकता है और आनंद पा सकता है।

हमारे देश के महान वैज्ञानिकों, गणितज्ञों के जीवन के बारे में प्रामाणिक और व्यवस्थित जानकारी आम पाठकों को सहज उपलब्ध नहीं होती है। इस दृष्टि से यह पुस्तक हमारे देश के विलक्षण गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जीवन और उनकी उपलब्धियों को जानने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।



समीक्षक : कमलेश पाण्डेय 'पुष्प'

लेखिका : डॉ. शकुन्तला कालरा

प्रकाशक : नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

पृष्ठ : 206

मूल्य : रु. 650/-

## बालक और बाल साहित्य

» बालक अनगढ़ पत्थर की तरह होते हैं जिनमें सुंदर मूर्ति छिपी होती है। माता-पिता, शिक्षक और समाज ही इन्हें संस्कारित कर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने कुल 20 अध्यायों में बालक और बाल मनोविज्ञान पर विस्तृत प्रकाश डाला है। पहले अध्याय में यह बताया गया है कि बालकों के चरित्र निर्माण में साहित्य की अहम भूमिका है। इससे उनके

मन में उत्साह, सोच में अहिंसा, भाषा में संयम, शील और सत्य की सुगंध होगी। इसके साथ ही हाथों में पुरुषार्थ और पैरों में लक्ष्य तक पहुँचने की गतिशीलता प्रतिक्षण उनकी प्रेरणा बनेगी। बच्चों के लिए बाल गीत संजीवनी तुल्य होता है। तभी तो एक बालक माँ की लोरी सुनकर अच्छी नींद में सो पाता है। अगले अध्याय में लेखिका ने बाल गीत के रचयिता निरंकारदेव सेवक की रचनाओं का मूल्यांकन किया है। निरंकारदेव सेवक की दृष्टि में एक अच्छे शिशु गीत को उच्चारित करने में तीन-चार साल के शिशु को अत्यंत सुख मिलता है। इसी अध्याय में स्वतंत्रता पूर्व के बाल गीत साहित्य और स्वातंत्र्योत्तर बाल गीत साहित्य पर भी प्रकाश डाला गया है।

‘डॉ. प्रकाश मनु का हिंदी बाल साहित्य का इतिहास’ शीर्षक अध्याय में लेखिका ने बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक, बाल विज्ञान साहित्य, बाल जीवनी तथा बाल पत्रिकाओं की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला है। इसी प्रकार एक अध्याय ‘डॉ. भैरूलाल गर्ग की बाल कहानियाँ : मनोरंजन और संदेश का सुंदर समन्वय’ के अंतर्गत बच्चों के लिए संदेशपरक लेखन का वर्णन है। डॉ. गर्ग ने अपनी पत्रिका ‘बालवाटिका’ का संपादन निरंतर 25 वर्षों तक करके बाल साहित्य की हर विधा को मंच दिया है। इनकी कहानियों ने बालमन की पेचीदगियों को सुलझाने का काम तो किया ही है, मर्यादित व्यवहार व शालीन आचरण का पाठ भी पढ़ाया है।

बच्चे मानवता की दिव्यतम निधि हैं। इनके लालन-पालन में स्नेह एवं मार्गदर्शन में विवेकपूर्ण दृष्टि तथा दूरदर्शिता की आवश्यकता रहती है। इस तरह के व्यक्तित्व निर्माण संबंधी

विचारों से ओत-प्रोत अध्याय है ‘पारिवारिक मूल्य : बच्चे और आप’। लेखिका ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि जिस परिवार में बच्चों को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है, उन बच्चों में आत्मदृढ़ता और आत्मानुशासन स्वतः विकसित हो जाता है। पुस्तक में समीर गांगुली रचित बालमन की खट्टी-मीठी नटखटी मनोरंजक बाल कहानियों की बालसुलभ बातों को भी सरलतम रूप से पाठकों के समक्ष रखा गया है। उनकी एक कहानी ‘उसकी भूमिका’ चोरों के हृदय परिवर्तन से जुड़ी है, तो ‘तमाशा मौत का’ अंधविश्वास, ढोंग और भोले-भाले लोगों को छलने की कहानी है। इनकी कहानियों में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम-संवेदना और रहस्य-रोमांच से भरी साहसिक घटनाओं के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने की बात की गई है। अगले अध्याय में दिविक जी का बाल कथा संसार से बाल सुलभ ज्ञान की पोटली खोली गई है। इसमें वो खजाना समाहित है जो बच्चों के मन को कहीं आनंद की नौका पर सवार करती है तो कहीं आसमान से बँधी डोर के सहारे झूले पर बैठती है। इनमें प्राचीन कथाओं का पुनर्कथन है तो मौलिक एवं अनूदित कहानियाँ भी हैं। इन कहानियों में कहानी पढ़ते समय बच्चे स्वयं उस कथा के पात्र बन जाते हैं। वे अपने को कहानी का अंग मानकर उससे तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। सहज, सरल एवं स्वाभाविक भाषा में लिखी ये कहानियाँ कथ्य और शिल्प प्रत्येक दृष्टि से सफल कहानी की श्रेणी में रखी जा सकती हैं।

पुस्तक में एक अध्याय ‘भारतीय हिंदीतर भाषाओं में लोरी’ का है। इसमें लोकजीवन की प्रत्येक क्रिया लोरी की लय में बँधकर बच्चे को निद्राभिभूत कर देती है। ‘लोरी’ स्नेह का बहता ऐसा झरना है जो बालक को निरंतर भिगोता रहता है, जिससे उसका मन आर्द्र रहता है। बाल कविताओं के माध्यम से बच्चों के मन को गुदगुदाने में सफल रहे हैं सूर्यकुमार पांडेय। लेखिका ने इनके वैविध्यपूर्ण कविता-लोक पर भी लिखा है। इनकी बाल कविताओं में अद्भुत लयकारी और प्रवाह है। ध्वन्यात्मकता का ऐसा जादू है कि बच्चों के मन में उतरता हुआ उनके होंठों पर आकर नाचने लगता है। इसी प्रकार आगे के अध्यायों में ‘शिक्षा-नीति में शिक्षक की भूमिका’ पर प्रकाश डाला गया है तो ‘आज का परिवेश और बच्चे’, ‘बच्चों में बढ़ती पलायनवृत्ति : कारण और निवारण’ तथा ‘जयप्रकाश भारती और उनका कथा संसार’ में समाहित ढेर सारी प्रेरणाप्रद एवं शिक्षाप्रद बातें बच्चों के जीवन को सँवारने वाली हैं। पुस्तक में बच्चों के सभी ख्यातिप्राप्त बाल लेखकों के बालसुलभ विषयों को समाहित किया गया है। यह पुस्तक बाल साहित्य के सुधि पाठकों के लिए पठनीय ही नहीं, बल्कि संग्रहणीय भी है।



समीक्षक : सूर्य कांत शर्मा  
लेखक : अंकुर वारिकू  
अनुवादक : डॉ. सुधीर दीक्षित  
प्रकाशक : मंजुल प्रकाशन, भोपाल।  
पृष्ठ : 290  
मूल्य : ₹. 299/-

## बड़ा सोचें, बड़ा करें

» पुस्तकें सबसे बड़ी मित्र होती हैं! और आवश्यकता होने पर तुरंत एक मित्र की भाँति प्रस्तुत हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त जैसी संगत वैसी रंगत!!! जैसा खाओगे अन्न वैसा ही होगा मन! उपरोक्त कहावतों, मुहावरों और लोकोक्तियों को कभी बड़े बजुर्गों से बहुधा सुना जाता था, परंतु सोशल मीडिया के इस युग कोरोनाजन्म मानसिकता और डिजिटल होते भारत में समीक्षित पुस्तक का

आना किसी मीठे और सकारात्मक संदेश से कम नहीं। आत्मनिर्भरता की हुंकार भरते इस देश में मानसिक और शारीरिक स्तर के अतिरिक्त भावनात्मक रूप से दृढ़ होना भी एक चुनौती है। इसी परिदृश्य के आलोक में, ऐसे साहित्य या पुस्तकों की जरूरत होगी जो युवाओं या पाठकों को उपदेशात्मक या नैतिकता की पाठशाला न लगकर जीवन की भाँति महसूस हों और साथ-ही-साथ संक्षिप्त और सारगर्भित भी हों। इसी आधारभूत सोच को साकार करती यह पुस्तक जेबी मित्र की श्रेणी में आती है। मूलतः अंग्रेजी भाषा से अनूदित यह संस्करण हिंदी जगत के पाठकों के लिए कोरोना महामारी की खतरनाक गिरफ्त से मुक्त होते हमारे जनमानस के लिए राहत देने का कार्य करने में बेहद मुफीद या फायदेमंद साबित होगी।

पश्चिमी देशों की पुस्तकों की तर्ज पर पुस्तक के कवर पर ही सोशल मीडिया पर छह करोड़ से अधिक व्यूज के कैप्शन से लैस यह पुस्तक एक आशा की किरण को जगाती-सी प्रतीत होती है कि आपबीती और अनुभव जनित विचार पाठकों को नैसर्गिक रूप से भाते हैं। पुस्तक कुल छह खंडों में यथा सफलता (और असफलता), आदतें, जागरूकता, उद्यमिता, धन संबंध और उपसंहार तथा आभार पर समाप्त होती है।

पहले अध्याय में ही सफलता के बारे में बात करने से पहले संवादात्मक स्थिति से लेखक ने आम जीवन से शुरुआत की है और आगे भी यह बताने की सफल कोशिश की है कि सफलता मेहनत, सकारात्मक सोच, अनुशासन और कड़ी मेहनत का पड़ाव है, जिसमें असफलता कहीं-न-कहीं सहायक होती है। यहीं कहीं लेखक ने भाग्य पर भी सार्थक टिप्पणी की है। उनके अनुसार भाग्य उनका साथ देता है जो कुछ करते हैं और देखा जाए तो भाग्य कड़ी मेहनत का ही तो

परिणाम है। यहीं पर विख्यात अंग्रेजी भाषा के कवि और लेखक विलियम वर्ड्सवर्थ के कथन की बात सटीक बैठती है कि लोग और संसार आपको आपके किए गए कार्यों के आधार पर प्रशंसा का हकदार और सफल मानता है, जबकि हम क्या कर रहे हैं, हमें अपना आकलन इस पर करना होगा। संसार के मापदंड हमारे निजी मापदंडों से कहीं अलग हमारी सफलता और असफलता को परिभाषित करते हैं, परंतु स्वयं पर विश्वास और निरंतर मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक प्रयास करना ही आत्मजागरूकता है।

आदतें, ये आम सा अहसास देने वाला शब्द हमारे जीवन के भूत, वर्तमान और भविष्य को सँवारने से लेकर आँकने तक के पड़ाव में अहम स्थान और योगदान देता है। लेखक की टिप्पणियाँ दर्शनीय और दिलचस्प दोनों बन पड़ी हैं। उदाहरण के तौर पर, उठने का रहस्य जल्दी जागना नहीं है, यह तो समय पर सोना है, अपनी यात्रा बताएँ अपनी यात्रा का दस्तावेजीकरण करें। सबसे महत्वपूर्ण योग्यताएँ जिन्हें बहुत कम सिखाया जाता है, वह हैं हास्यबोध कहानी सुनाना, धन का प्रबंधन, मानव मनोविज्ञान और कोल्ड ई-मेलिंग और एक और लीक से हटकर। एक सब-टॉपिक है असफलता का रिज्यूमे, जिसमें असफलता से घबराकर लक्ष्य को छोड़ना नहीं, वरन् अपनी कमियों को लिखकर मनमस्तिष्क में बैठा कर उनसे पार पाने का तरीका या रणनीति युवाओं को बताने की कामयाब कोशिश की गई है।

इसी प्रकार खंड जागरूकता में भी विचारोत्तेजक सामग्री पाठकों को परोसी गई है, वस्तुतः जागरूकता की आवश्यकता वहाँ होती है, जहाँ पर साधारणतया सब चलता है या कोई बात नहीं, इसी स्थिति को लेखक ने जीवन की साधारण से लेकर विशेष और असाधारण घटनाओं और गतिविधियों को उदाहरणस्वरूप इस पुस्तक में स्थान दिया है।

पुस्तक इन पड़ावों से गुजरकर खंड धन जैसे महत्वपूर्ण या कालजयी सोपान पर पहुँचती है तो पाठक के कौतूहल को मानो पंख मिल गए हों और ऐसा हो भी क्यों न? दरअसल, धन सभी क्रियाओं-प्रक्रियाओं और विशेष रूप से जीवन और संबंधित क्षेत्रों में अहम स्थान रखता है। लेखक द्वारा रचित उप-अध्याय 'धन संबंधी दस आम गलतियाँ' जिनसे बचना चाहिए, विशेष रूप से पठनीय हैं।

पुस्तक के आखिरी अध्याय संबंध और उपसंहार पाठकों को लेखक के रूप में एक पढ़े-लिखे व्यावहारिक उम्रदराज पेशेवर के सिवाय एक हमउम्र हम खयाल और दोस्त के रूप में व्यावहारिक और अहम बातें बताने वाला बेहतर इंसान के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

अस्तु यह पुस्तक भले ही अंग्रेजी से अनूदित हो, परंतु भारतीय संस्कृति में पले-बढ़े अनुभव में पगे लेखक की विचारपूर्ण बेहद उपयोगी कृति है और शिक्षकों की ऐसी ही पुस्तकों की जरूरत पाठकों को है। यह पुस्तक खरीदकर पढ़ने और डेस्क पर सजाने और बार-बार पढ़ने वाली पुस्तकों की श्रेणी में आती है।



## हिंदी की 11 कालजयी कहानियाँ

नरेंद्र कुमार वर्मा

प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी की 11 क्लासिक कहानियों को संकलित किया गया है। ये कहानियाँ भारतीय जीवन के भिन्न-भिन्न विषयों एवं परिवेश को पाठकों के समक्ष रखती हैं। 'उसने कहा था', 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' अमर प्रेम की कहानियाँ हैं। 'कफन', 'अपनी-अपनी बीमारी' भारतीय समाज की क्रूर विसंगतियों को उजागर करने वाली कहानियाँ हैं। इस संकलन की कहानियाँ सामाजिक जीवन को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं।

डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, ओखला, दिल्ली।

पृ. 144; ₹. 175.00

## आईना बोलता है

हलीम आईना



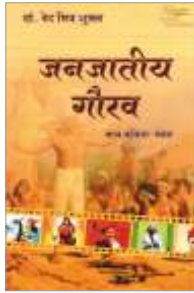
प्रस्तुत काव्य-संग्रह में कुल 51 कविताएँ हैं। इन कविताओं में कवि ने अपने परिवेश को ही लेखन में उतार दिया है। कवि ने सामाजिक घटनाओं और परिस्थितियों को तीखे शब्दों में व्यक्त किया है। 'कोरोना प्रभाव', 'कोरोना सबक', 'जीवन-मृत्यु', 'कोरोना-काल की त्रासदी को अभिव्यक्त करने वाली कविताएँ हैं।

किताबगंज प्रकाशन, सर्वाई माधोपुर, राजस्थान।

पृ. 96; ₹. 150.00

## जनजातीय गौरव

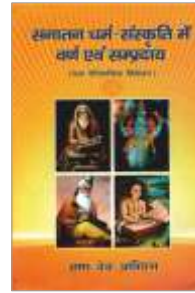
वेदमित्र शुक्ल



जन-जंगल-जमीन के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने वाले जनजातीय महापुरुषों पर आधारित 50 बाल कविताओं को पुस्तक में समाहित किया गया है। ये रचनाएँ लयबद्ध और पठनीय हैं। इनमें भगवान बिरसा मुंडा, झलकारी बाई, भीमा नायक चित्तूर सिंह जैसे महामानवों पर कविताएँ रची गई हैं। देश के प्रति उनके समर्पण का उल्लेख किया गया है। ग्लेज पेपर पर साज-सज्जायुक्त पुस्तक आकर्षक प्रतीत होती है।

सर्वभाषा प्रकाशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली।

पृ. 84; ₹. 300.00



## सनातन धर्म-संस्कृति में वर्ण एवं संप्रदाय

अमर देव आंगिरस

इस पुस्तक में सनातन धर्म संस्कृति से संबद्ध ऋषि कुलों के जातीय विस्तार, धर्मांतरण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सद्चरित के विभिन्न संदर्भों से जुड़ी मान्यताओं, मिथकों आदि संबंधी प्रश्नों को खंगाला गया है। पुस्तक में कुल 21 अध्याय हैं, जिनमें वेदों, पुराणों, स्मृतियों एवं महाकाव्यों आदि का गहन अध्ययन करके संप्रदायों की सहज परिणतियों की पुनर्व्याख्या की गई है।

अमर देव आंगिरस, अंगिरा अध्ययन संस्थान, सोलन (हिमाचल प्रदेश)।

पृ. 264; ₹. 475.00



## फूल मुखतिब हैं

इम्तियाज अहमद गाजी

प्रस्तुत पुस्तक में 300 शेर हैं। इनमें फूल के विभिन्न पहलुओं और स्वरूप को महबूब के लिए समर्पित करने का प्रयास करते हुए आश्चार्य कहे गए हैं। इन फूलनुमा आश्चार्यों के माध्यम से जनमानस में प्रेम और भाईचारे का संदेश देने की कोशिश की गई है। पुस्तक के प्रत्येक शेर अंतर्मन को छूने वाले तो हैं, वहीं

ये अपने अंदर गूढ़ अर्थ भी समेटे हुए हैं।

गुफ्तगू पब्लिकेशन, हरवारा, धूमनगंज, प्रयागराज

पृ. 100; ₹. 250.00

## सूरज का घोड़ा

रार्जेंद्र निशेश



प्रस्तुत पुस्तक बाल कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह में 87 पृष्ठों में कुल 72 कविताएँ संकलित हैं। कवि ने इन कविताओं में प्रकृतिपरक—सूरज का घोड़ा, नभ पर जाए, सरदी में धूप, काले बादल, झर-झर करता झरना गाता, फूलों की चादर, प्रकृति के उपहार हैं पेड़ आदि कविताएँ हैं। इसके साथ ही बाल मन की अनुभूतियों एवं अभिव्यक्तियों को गुड़िया की नानी, छुट्टी का गीत, आँख-मिचौनी, डबू जी ने झबरा पाला, रामलाल की बकरी आदि कविताओं में स्वर देने का प्रयास किया है। सरल एवं सहज भाषा में लिखी ये कविताएँ बच्चों का मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन करती हैं।

वनिका प्रकाशन, विजनौर।

पृ. 87; ₹. 220.00



## कोरोना काल में अचार डालता कवि

रामस्वरूप दीक्षित

प्रस्तुत काव्य-संग्रह की कविताएँ समाज की विसंगतियों पर गहरी चोट करती हैं। कविताओं की भाषा सहज एवं सरल है। ये कविताएँ पीड़ित, शोषित मानवता की पक्षधर होकर जीवन का नया मुहावरा गढ़ती प्रतीत होती हैं। इन्हें पढ़ना समाज की कड़वी सच्चाई से रू-ब-रू होना है। प्रत्येक कविता मानव मन

को संवेदनाओं से ओत-प्रोत करती हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

पृ. 96; रु. 200.00

## जेब में भर कर सपने सारे

ज्योति जैन

प्रस्तुत काव्य-संग्रह में तीन खंडों में कविताएँ हैं। पहले खंड में 'स्त्री' और दूसरे में 'प्रेम' पर आधारित कविताएँ हैं। तीसरे खंड में 'विविध' के अंतर्गत मिली-जुली कविताएँ हैं। कविताएँ पढ़कर मन को सुकून मिलता-सा लगता है। इन कविताओं में स्त्री व प्रेम को एक-दूसरे के पूरक होने का अहसास होता है।



बोधि प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान।

पृ. 136; रु. 150.00

## फूलों के खिलने का मौसम

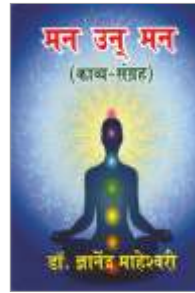
विशाल खुल्लर

प्रस्तुत गजल संग्रह में मन को सुकून प्रदान करने वाली गजलें हैं। गजलों का विषय जीवन से जुड़े अनेक संदर्भों वाला है। पंक्तियाँ तुकांत तो हैं ही, अंतर्मन को छूने वाली भी हैं। इन पंक्तियों में आग, मौत, दुख, आसमान, सूरज, चाँद, तारे, जुगनू, खुशबू आदि बहुत से शब्दों को लेकर उपमाएँ दी गई हैं।



चेतना प्रकाशन, लुधियाना, पंजाब।

पृ. 64; रु. 150.00



## मन उन् मन

डॉ. ज्ञानेंद्र माहेश्वरी

प्रस्तुत काव्य-संग्रह प्रेरणाप्रद है। इन कविताओं में कभी जीव सुख-दुख के हिंडोले में झूलता है तो कभी ईश्वर के प्रति उसकी आर्काक्षा बलवती होने लगती है। कभी मनुष्य निरीह प्राणी के रूप में अपनी पीड़ा को व्यक्त करने लगता है। कवि का चिंतन-मनन दर्शन की परिधि से आवृत्त है। कवि का यह प्रयास

मनीषी साहित्यकारों के लिए स्पृहणीय है।

मधु प्रकाशन, बदायूँ, उत्तर प्रदेश।

पृ. 64; रु. 125.00



## जिंदगी जिंदाबाद

संपादक: रिमा दीवान चड्ढा

सहायक संपादक: खुदेज़ा खान

प्रस्तुत पुस्तक कोरोना काल में महिला रचनाकारों द्वारा लिखित रचनाओं का संकलन है। इसमें जिंदगी से जुड़ी रोचक बातों को प्रत्येक रचनाकार ने अपने अलग अंदाज में कविता, कहानी, लघुकथा एवं लेखों के माध्यम से बतलाया है। संकलन में ख्यातिप्राप्त लेखिकाओं

सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मालती जोशी आदि की रचनाएँ भी हैं।

सृजन बिंब प्रकाशन, नागपुर, महाराष्ट्र।

पृ. 372; रु. 300.00

## ईटिंग इन द एज ऑफ डाइटिंग

रुजुता दिवाकर

प्रस्तुत पुस्तक में चार खंडों में स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई है। इसमें कुछ पारंपरिक व्यंजनों की पाक विधियों को भी दिया गया है। पुस्तक में मुख्य रूप से अच्छे स्वास्थ्य की बातें, आहार प्रवृत्तियाँ, खाद्य मिथक, मौसमी खाद्य पदार्थ, त्यौहार के व्यंजन, मधुमेह, घर में बने नुस्खे, बच्चों के स्वास्थ्य के लिए व्यायाम और योग आदि पर अच्छी जानकारी दी गई है।



डायमंड बुक्स, नई दिल्ली।

पृ. 272; रु. 300.00



## ‘आजादी का अमृतकाल और हिंदी’ विषय पर व्याख्यान आयोजित

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत 26 सितंबर को ‘आजादी का अमृतकाल और हिंदी’ विषय पर व्याख्यान आयोजित किया। मुख्य वक्ता के रूप में हंसराज कॉलेज, दिल्ली के असिस्टेंट प्रोफेसर प्रभांशु ओझा ने उपरोक्त विषय के माध्यम से हिंदी की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी को समृद्ध होने में हजारों वर्ष लगे हैं। कोई भी भाषा या कोई भी देश एक दिन में नहीं बनता। आज जिस रूप में हिंदी भाषा व हिंदी बोली को देख रहे हैं, आज से सौ-डेढ़

सौ साल पहले यह ऐसी नहीं थी। उसके लिए तमाम क्षेत्रीय भाषाओं की कुर्बानियाँ दी गई हैं। इसके पीछे ऋषि-मुनियों, साहित्यकारों व तमाम भाषा प्रेमियों का योगदान है, जिन्होंने हमें एक उत्कृष्ट भाषा ‘हिंदी’ दी है। उन्होंने कहा कि जब हम ‘जल’ कहते हैं तो उसमें पवित्रता का बोध होता है और जब हम ‘पानी’ कहते हैं तो साधारण जल का। भारत की समृद्धता की परंपरा में हिंदी भाषा को समृद्ध करने की यात्रा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। कार्यक्रम का संचालन नागेंद्र नागर ने किया।

## वेदों के ज्ञान का नए सिरे से हो

### व्याख्यान : राजनाथ सिंह



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और हंसराज कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में हंसराज कॉलेज परिसर में ‘महर्षि दयानंद स्मृति व्याख्यान माला’ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में देश के माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह ने राष्ट्र निर्माण में गुरु के महत्व, महान गुरु परंपरा व वर्तमान जीवन के अनुरूप वेदों के ज्ञान को नए सिरे से व्याख्यान करने पर बल दिया। न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने भी वेदों की महत्ता और उपयोगिता पर पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह और हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा उपस्थित रहे।

## न्यास से प्रकाशित पुस्तकें

### विश्वसनीय : आरिफ मोहम्मद खान

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 14-15 सितंबर,



2023 को पुणे में आयोजित किया गया। इस दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। सम्मेलन के दौरान केरल के राज्यपाल माननीय आरिफ मोहम्मद खान ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल का अवलोकन किया। माननीय राज्यपाल ने न्यास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहाँ से प्रकाशित होने वाली पुस्तकें स्तरीय और विश्वसनीय हैं।

## न्यास द्वारा उज्जैन पुस्तक मेला आयोजित

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) और जिला प्रशासन, उज्जैन (मध्य प्रदेश) के संयुक्त तत्वावधान में 01 से 06 सितंबर, 2023 तक मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी (भोपाल), विक्रम विश्वविद्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय व अवंतिका विश्वविद्यालय के सहयोग से दशहरा मैदान में उज्जैन पुस्तक मेला आयोजित किया गया। मेले का उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, डॉ. मोहन यादव ने किया।



इस अवसर पर सांसद अनिल फिरोजिया, न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे, न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार

पांडेय, नगर निगम अध्यक्ष कलावती यादव आदि उपस्थित रहे। मेले में 30 से भी अधिक प्रकाशकों द्वारा हिंदी, अंग्रेजी, मालवी, संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हजारों उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध थीं। साथ ही प्रतिदिन साहित्यिक, सांस्कृतिक और बच्चों के लिए अनेक कार्यशालाओं व प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा सभी आयु वर्ग के पाठकों के लिए लोकप्रिय सामाजिक विज्ञान, राष्ट्रीय व आत्मजीवनचरित, लोक-संस्कृति, भारतीय व विश्व साहित्य जैसे विषयों पर और प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु सहयोगी पुस्तकें भी उपलब्ध थीं।

## स्पेन पुस्तक मेला 'फेरिया लिब्रो 23' में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने स्पेन पुस्तक मेला 'फेरिया लिब्रो 23' में सहभाग किया। यहाँ न्यास के स्टॉल पर अनेक लेखकों, प्रकाशकों व पाठकों ने दौरा किया। प्रधान जनसंपर्क अधिकारी श्री अमित सिंह ने स्पेन में भारत



के दूसरे सचिव (संस्कृति) श्री अमन चंद्रा को निदेशक फेरिया डेल लिब्रो दि मैड्रिड के साथ आमंत्रित किया। उन्होंने विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली के आगामी संस्करण में स्पेनिश प्रकाशकों की भागीदारी और स्पेन में बाल साहित्य के लिए भारतीय प्रकाशकों का मार्ग प्रशस्त करने पर चर्चा की।



मारिया जोस गल्वेज से बात की। उन्होंने अनुवाद के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान के जरिए किताबों को शामिल करने की बात रखी।

स्पेन के संपादकीय फेडरेशन के कार्यकारी निदेशक एंटोनियो मारिया अविताला ने उनसे मुलाकात की। श्री सिंह ने भारत से किताबों के अनुवाद के लिए वित्तीय सहायता कार्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी। श्री सिंह ने स्पेन सरकार के संस्कृति और खेल मंत्रालय की

## मल्टीपल इंटेलिजेंस सीखने में लाएगा सकारात्मक बदलाव



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने महाराजा अग्रवाल सैन आदर्श पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली में 'कहानियों के माध्यम से मल्टीपल इंटेलिजेंस के बारे में जानना' पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला कक्षा 1-12 के शिक्षकों के लिए डिजाइन की गई। आयोजक सिमी श्रीवास्तव ने बताया कि सीखने की शैलियों के महत्व और कहानियाँ उन्हें कैसे प्रभावित करती हैं। मल्टीपल इंटेलिजेंस छात्रों के बीच सीखने में एक सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। उन्होंने इस विषय पर एक प्रस्तुति भी दी। संचालक ने मल्टीपल इंटेलिजेंस के माध्यम से सीखने को तेज और मजेदार बनाने के बारे में बताया।



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने महात्मा गांधी की 154वीं जयंती के अवसर पर 02 अक्टूबर, 2023 को राजभवन, शिलांग में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

किया। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन मेघालय के माननीय राज्यपाल श्री फागु चौहान ने उद्घाटन किया। उन्होंने महात्मा गांधी और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अन्व गुमनाम नायकों के जीवन और योगदान से संबंधित पुस्तकों का अवलोकन किया और न्यास के इस प्रयास की सराहना की।

## युवा लेखक दस पृष्ठ पढ़ें, एक लिखें और दो मिनट बोलें : युवराज मलिक

मॉडर्न स्कूल, वसंत विहार के प्रतिभाशाली युवा लेखकों के एक समूह ने 12 अक्टूबर को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने अपनी प्रकाशित पुस्तकें न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे और न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक को भेंट कीं। श्री मलिक ने इतनी



कम उम्र में लेखक होने की उपलब्धि हासिल करने पर नवोदित लेखकों की सराहना की। उन्होंने प्रत्येक बच्चे को 10 पृष्ठ पढ़ने, एक पृष्ठ लिखने और



कम-से-कम दो मिनट बोलने के लिए प्रोत्साहित किया। न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे ने भी युवा लेखकों से बातचीत की और यह जाना कि उन्हें किताब लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली। इस दौरान युवा लेखकों ने न्यास के पुस्तक विक्रय केंद्र और एनसीसीएल लाइब्रेरी का भी अवलोकन किया।

## शिलांग पुस्तक मेले में दिखी साहित्यिक झलक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 27 सितंबर से 03 अक्टूबर, 2023 तक शिलांग पुस्तक मेला आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुए। इस दौरान पेट्रोसिया मुखिम, शिलांग टाइम्स के संपादक लोरिंडा डी मारक ने साहित्य और पत्रकारिता पर चर्चा की। कथावाचक विनीता जुक्षी ने क्रिएटिव राइटिंग की कार्यशाला और स्टोरीटेलिंग सत्र में भाग लिया। मृगांका भुइयां, मुस्कान गुप्ता और सालिम हुसैन की टीम ने 'मेघालय के सिनेमैटिक रिप्रजेंटेशन' पर चर्चा की। इस दौरान बच्चों के लिए दैनिक सत्र भी आयोजित किए गए।



## आग से बचाव का दिया प्रशिक्षण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अधिकारियों और कर्मचारियों को आग से बचाव के लिए अग्निशमन के ट्रेनिंग मैनेजर करन सिंह ने प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बताया कि आग तीन तत्वों से मिलकर बनती है, वे हैं—ईंधन, ताप और ऑक्सीजन। इनके मिलने से आग लग जाती है, अगर इनमें से किसी एक तत्व को भी हटा दिया जाए, तो आग बुझ जाएगी। उन्होंने आग पर काबू पाने के तरीके को बरीकी से समझाया।

## खेल के जरिए फिट रहने की ली प्रतिज्ञा

'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर 'फिट इंडिया' अभियान के तहत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के परिसर में बॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खेल में अधिकारियों और कर्मचारियों ने 'फिटनेस प्रतिज्ञा' ली, जिसमें शारीरिक गतिविधि और खेल के लिए समय देने और भारत को एक फिट राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया। प्रतियोगिता में महिला वर्ग में लक्ष्मी सहगल टीम विजेता रही और रानी लक्ष्मीबाई टीम उप विजेता रही। पुरुषों की छह टीमों में लाला लाजपत राय टीम विजेता रही, मंगल पांडे टीम उप विजेता रही, जबकि बाल गंगाधर तिलक टीम को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

## 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान

देशभक्ति की भावना को फिर से मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने मोबाइल पुस्तक प्रदर्शनी के माध्यम से भारत के स्कूलों में 'अमृत कलश यात्रा' शुरू की है। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में न्यास की भागीदारी की झलक 'माटी को नमन, वीरों का वंदन' की सामूहिक भावना को दर्शाती है। इसके जरिए देश भर के स्कूलों के उत्साही छात्रों और शिक्षकों की विविध भागीदारी का आह्वान किया गया। भारत के कोने-कोने से एकत्र की गई पवित्र मिट्टी 'कर्मव्यपथ', इंडिया गेट पर 'अमृतवाटिका' और 'अमृतमहोत्सव स्मारक' को नया आयाम देगी।



## फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

18-22 अक्टूबर, 2023 तक जर्मनी में आयोजित 'फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला' में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने सहभागिता की। न्यास के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे एवं निदेशक श्री युवराज मलिक ने 'इंडिया नेशनल स्टैंड' का उद्घाटन किया। मेले में सांस्कृतिक विरासत के आदान-प्रदान तथा साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा की गई। मेले में साहित्यिक विचारों, कॉपीराइट और प्रकाशनों के आदान-प्रदान की सुविधाएँ दी गईं। इस दौरान भारतीय साहित्य के खजाने ने पाठकों को आकर्षित किया।



## जी-20 सम्मेलन में लगी

## भारतीय साहित्य की प्रदर्शनी

जी-20 सम्मेलन की अध्यक्षता भारत ने की। इस दौरान प्रगति मैदान में 08 से 10 सितंबर, 2023 को 'भारत मंडपम्' में लगाई गई प्रदर्शनी में भारत, रूस, फ्रांस, मैक्सिको, जापान, ब्राजील, अर्जेंटीना, तुर्की आदि देशों का साहित्य प्रदर्शित किया गया। यहाँ सदस्य देशों की विकास यात्रा, दृष्टि और लक्ष्यों के दस्तावेज भी दर्शाए गए।



## हिंदी लेखन परियोजना 2023

निर्मल भरतिया स्कूल, भरत विहार, द्वारका, दिल्ली द्वारा 20 अक्टूबर, 2023 को हिंदी लेखन



परियोजना का आयोजन किया गया। छात्रों के मार्गदर्शन हेतु राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के हिंदी भाषा के सहायक संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए हिंदी साहित्य की कई विधाओं, जैसे—फीचर लेखन, साक्षात्कार, कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी आदि विषयों पर लेखन और संपादन कैसे किया जाए, के बारे में जानकारी दी।

## साहित्यिक गतिविधियाँ



नोएडा पुस्तक मेला (7-15 अक्टूबर, 2023), नोएडा हाट रा.पु. न्यास के स्टॉल पर लेखक, कवि और फिल्म निर्माता लीलाधर मंडलोई



डीपीएस, वसंत कुंज में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित कहानी वाचन सत्र में भाग लेते बच्चे



क्वीन मैरी स्कूल, गुरुग्राम के पुस्तक सप्ताह उत्सव में रा.पु. न्यास द्वारा आयोजित कहानी वाचन सत्र में लेखिका और कहानीकार सुश्री उषा छावड़ा



कोलंबो अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में रा.पु. न्यास के स्टॉल पर उपस्थित न्यास के अधिकारी और श्रीलंका पब्लिकेशंस एरोसिएशन के सदस्य



दिल्ली पब्लिक स्कूल, रोहिणी में रा.पु. न्यास, भारत द्वारा आयोजित 'ए हंग्री कैटरपिलर' कहानी वाचन सत्र में माता-पिता और बच्चे



विहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पुस्तक मेले में महामहिम गंगा प्रसाद, पूर्व राज्यपाल, सिक्किम; श्री समीर कुमार महासेठ, उद्योग मंत्री, बिहार



देगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार और सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली में रा.पु. न्यास, भारत द्वारा आयोजित प्रदर्शनी



माउंट अबू पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली में रा.पु. न्यास, भारत द्वारा आयोजित कहानी वाचन कार्यशाला के दौरान भाग लेते बच्चे



विहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पुस्तक मेले में महामहिम गंगा प्रसाद, पूर्व राज्यपाल, सिक्किम; श्री समीर कुमार महासेठ, उद्योग मंत्री, बिहार



## आगामी अंक के लिए पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की द्विमासिक पत्रिका

पत्रिका का **मार्च-अप्रैल, 2024** का अंक **'पुस्तकालय'** विशेषांक होगा।

जिसमें भारत में पुस्तकालय व्यवस्था का उद्भव और विकास, पुस्तकालय संवर्धन संबंधी सरकारी परियोजनाएँ, लुप्त होते पुस्तकालय और लुप्त होती पुस्तकालय-पठन परंपरा, पुस्तकालयों ने आपके जीवन को कैसे बदला, पुस्तकालय की आज के समय में प्रासंगिकता और जरूरत आदि जैसे विषयों से संबंधित सामग्री होगी।

इस अंक के लिए सामग्री **05 जनवरी, 2024** तक भेज सकते हैं।

**लेखकों हेतु निर्देश :** 1. सामग्री अधिकतम दो हजार शब्दों तक हो। 2. रचना मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए। 3. रचना के साथ संदर्भ के चित्र अवश्य भेजें। 4. लेखक का चित्र, पाँच पंक्ति में परिचय (संपूर्ण जीवनवृत्त नहीं) भेजें, जिसमें संप्रति, प्रकाशन, सम्मान आदि का विवरण हो। संपर्क के लिए पता, ई-मेल या फोन नंबर जो भी सार्वजनिक करना चाहें, भेजें। 5. किसी विशेषांक में प्रकाशनार्थ सामग्री समयसीमा के पश्चात भेजने पर स्वीकार्य नहीं होगी। 6. पत्रिका के संपादक के ई-मेल पर भेजी गई रचनाएँ ही स्वीकार्य होंगी। रचना कृति, यूनिकोड / शिवा मीडियम फॉण्ट में एम.एस. वर्ड या पेजमेकर में ही हो।

**नोट :** पत्रिका का मुख्य उद्देश्य पुस्तक प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के लिए उपयोगी सामग्री का प्रकाशन करना है। कहानी-कविताओं के लिए इसमें कम ही स्थान है।

**संपादक (पुस्तक संस्कृति),** राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 5 नेहरू भवन, वसंत कुंज, सांस्थानिक क्षेत्र, फेज-2, नई दिल्ली-110070

ई-मेल : [editorpustaksanskriti@gmail.com](mailto:editorpustaksanskriti@gmail.com) • दूरभाष : 011-26707758, 26707876

# मनोरंजन, ज्ञान और जिज्ञासा की अनूठी दुनिया!

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ नए प्रकाशन

## पुरातन भारतीय कथा कहानियाँ

अछरू सिंह

प्रस्तुत पुस्तक के तीन भागों में कुल 35 अध्याय हैं। पहले भाग में 33 अध्याय हैं, दूसरे और तीसरे भाग में केवल एक-एक अध्याय है। मूलरूप से यह पुस्तक पंजाबी में है, इसका हिंदी अनुवाद डॉ. शशि सहगल ने किया है। पंजाबी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर सतीश कुमार वर्मा ने 'आरंभ' में लिखा है कि ये कथा-कहानियाँ सीख देती हैं कि भली सोच, भले बोल और भले कार्यों का अंत सदैव भला होता है। वहीं, बुरे का अंत बुरा।

पृ. 165; ₹. 225.00



## भारत में कुंभ

धनंजय चोपड़ा

प्रस्तुत पुस्तक 12 भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग में कुछ महत्वपूर्ण अध्याय हैं। पहले भाग में भारतीय संस्कृति व परंपरा में कुंभ, कुंभ से जुड़ी कथाएँ, वेदों में कुंभ पर्व, पुराणों में कुंभ मेला आदि अध्यायों के साथ इसके ज्योतिष पक्ष, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पहलुओं का भी जिक्र है। द्वितीय भाग में विभिन्न कुंभ मेलों का वर्णन है। बाकी 10 भागों में उसका इतिहास, अखाड़ों का रोमांच, साधुओं की दुनिया, मीडिया, मंत्र, मार्केट, भीड़ प्रबंधन जैसे विषय समाहित हैं।

पृ. 246; ₹. 390.00



## गन्ना

शिव मोहन यादव

चित्र : राजकुमार घोष

प्रस्तुत बाल पुस्तक आठ साल के मोहन की कहानी है। कहानी में मोहन गन्ने के जरिए एक बकरी, चूहा, खरगोश, हिरन, काका बालकराम और भेड़िए की मदद करता है। नैतिक गुणों से सजी इस पुस्तक से बच्चे शिक्षित और संस्कारित होंगे, वे मानवीय गुण सीखेंगे। कहानी में प्रेरक संदेश है। यह पुस्तक सुंदर चित्रों का गुलदस्ता है, आकर्षक साज-सज्जा है।

पृ. 21; ₹. 60.00



सदी का संपादक :

## राजेन्द्र माथुर

संपादन एवं संकलन :

राजेश बादल

महान कलमकार, पत्रकार और संपादक राजेन्द्र माथुर के जिंदगीनामे को सिलसिलेवार प्रस्तुत करती यह पुस्तक उनके आलेखों का संकलन है जो पत्रकारिता के दृष्टिकोण से दुर्लभ दस्तावेज हैं। इसमें कश्मीर, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे राष्ट्रीय मुद्दों के साथ-साथ माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी तथा पत्रकारिता से संबंधित अनेक आलेख संकलित हैं।

पृ. 223; ₹. 285.00



## रणजीत सिंह

देवराज सूद

अनुवाद : सुमंगल प्रसाद

इस पुस्तक में महाराज रणजीत सिंह के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। पुस्तक के 16 अध्यायों में उनका पिछला इतिहास, पूर्वज और प्रारंभिक वर्षों की जानकारी, उनके विजय अभियान, कोहिनूर प्रकरण, घोड़े और तोपें, रणजीत सिंह का दरबार, उनकी फौज में यूरोप के अफसर, प्रशासन, परिवार और रानियाँ, स्वभाव, बीमारी और मृत्यु आदि के विषय में विस्तृत वर्णन है।

पृ. 104; ₹. 155.00



## संकलित पंजाबी निबंध

संपादक : अमर कोमल

अनुवाद : फूलचंद मानव

पुस्तक में श्रद्धाराम फिल्लौरी, प्रो. पूर्ण सिंह आदि 58 लेखकों के पंजाबी निबंध संकलित हैं। गद्य के वर्तमान स्वरूप में समाज सुधार, धार्मिक उत्थान के प्रचार, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, पत्रकारिता के विषय, यात्राएँ आदि पर निबंध लिखे गए हैं। यह पुस्तक दो भागों में बाँटी गई है। संपादक की ओर से पुराने निबंधकारों के निबंध 'प्राचीन-मिठास' और नए लेखकों के निबंध 'नया प्रकाश' शीर्षक के अधीन चुनकर यह पुष्प गुच्छ तैयार किया गया है।

पृ. 378; ₹. 480.00



## कछुआ और खरगोश

डॉ. जाकिर हुसैन

चित्र : एम.एफ. हुसैन

अंग्रेजी अनुवाद : खुशवंत सिंह

अनुवाद : पूजा तिवारी

यह पुस्तक भारत के तीसरे राष्ट्रपति रहे डॉ. जाकिर हुसैन ने लिखी। इसका उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद खुशवंत सिंह ने किया। इसके चित्र प्रख्यात चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन ने बनाए हैं। खरगोश और कछुए की यह कहानी अलग परिष्कार और पटुता के साथ प्रस्तुत की गई है।

पृ. 40; ₹. 70.00



## राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707761 • ई-मेल : nro.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in